 ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

पौष-माघ, संवत् नानकशाही ५४४
वर्ष ६ अंक ५ जनवरी **2013**

संपादक : सिमरजीत सिंह *एम. ए., एम. एम. सी.*
सहायक संपादक : जगजीत सिंह

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ सो कंमु सुहेला जो तेरी घाली ॥
सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥
तूं सांझा साहिबु बापु हमारा ॥ नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥
सभु को आसै तेरी बैठा ॥ घट घट अंतरि तूं है वुठा ॥
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥
तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥
नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥ *(पन्ना ९७)*

माझ राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी परमात्मा के गुणों का बखान करते हुए उसकी प्रशंसा करते हैं कि हे परमात्मा! मुझे वो समय सबसे सुखदायी लगता है जब मैं तुम्हें अपने हृदय में बसाता हूं अर्थात् तुम्हें अपने हृदय में बसा हुआ अनुभव करता हूं। मुझे वही काम शोभनीय लगता है जिसे मैं (तुम्हारी) सेवा समझकर करता हूं। जिस हृदय में तुम्हारा निवास है वो सदा शीतल रहता है अर्थात् वो हृदय सदा प्रेम-विगलित रहता है। हे परमात्मा! तुम सब जीवों को बख़्शिशें प्रदान करने वाले हो अर्थात् सबके पिता हो। जगत के जो नौ ख़जाने हैं, नौ निधियां हैं वो सब तुम्हारे अधिकार में हैं, उनमें कभी कमी नहीं आती। जिसे तुम अपनी नाम-रूपी बख़्शिश प्रदान करते हो अर्थात् जिसे तुम संतुष्टि प्रदान करते हो वही तृप्त हो जाते हैं और वही तुम्हारे भक्त (गुरमुख) हैं।

आगे की पंक्तियों में गुरु जी का फरमान है कि हे परमात्मा! सबको तेरे से ही आशा है कि तुम ही बख़्शिशें प्रदान करने वाले हो। सबके हृदय-घर में तुम ही निवास करते हो। सारे जीव तुम्हारे साथ सांझ रखने वाले कहलवाते हैं, कोई भी जीव ऐसा नहीं जिसके साथ तुम्हारी सांझ न हो अर्थात् सारे जीव तुम्हारे ही नियंत्रण में हैं। हे परमात्मा! तुम खुद जीवों (गुरमुखों) को अपनी शरण प्रदान करके जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त कर देते हो तथा खुद ही जीवों (मनमुखों) को जन्म-मरण के चक्कर में डाल देते हो। हे प्रभु! यह जगत-रचना सब तुम्हारे द्वारा सृजित की गई है इसलिए मैं तुम पर से कुर्बान जाता हूं अर्थात् तुम्हारे द्वारा इस महान जगत-रचना तथा जीवों के पालन-पोषण करने के समक्ष मैं नत्मस्तक हूं।




संपादकीय



श्री गुरु हरिराय साहिब

*-प्रो. साहिब सिंघ**

जन्म तथा स्थान : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच साहिबज़ादे --बाबा गुरदित्ता जी, बाबा अटल राय जी, बाबा सूरज मल जी, बाबा अणी राय जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब थे और एक सुपुत्री बीबी वीरो जी थी। बाबा गुरदित्ता जी के दो सुपुत्र थे-- बाबा धीरमल तथा श्री (गुरु) हरिराय साहिब।

श्री गुरु हरिराय साहिब का जन्म कीरतपुर साहिब में १९ माघ, संवत १६८६ (मुताबिक १६ जनवरी, १६३० ई) को हुआ था। आजकल कीरतपुर साहिब ज़िला रोपड़ में है। यह नगर आषाढ़, संवत् १६८४ (१६२७ ई) में बसा था। इसको दून हंडूर के राजा तारा चंद से ज़मीन खरीदकर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के हुक्म से बाबा गुरदित्ता जी ने बसाया था। यह वही जगह है जहां श्री गुरु नानक देव जी साईं बुड्ढण शाह को मिले थे।

गुरगद्दी : श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ६ चेत्र, संवत् १७०१ (मुताबिक ३ मार्च, १६४४ ई) को रविवार वाले दिन कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समाये थे। परलोक गमन करने से पूर्व उन्होंने अपनी जगह श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरगद्दी सौंपी थी। उस वक्त इनकी उम्र १४ वर्ष के लगभग थी।

सूखा तथा अकाल : अकबर के राज्य के समय माझा क्षेत्र में तीन-चार वर्ष बहुत सूखा पड़ने के कारण भयानक अकाल पड़ गया। श्री गुरु अरजन देव जी ने माझा क्षेत्र के गांव-गांव जाकर जरूरतमंदों को आर्थिक सहायता देकर कुएं खुदवाये थे। इस अकाल का असर जब लाहौर शहर पर पड़ा, तो गुरु जी आठ महीने लाहौर रहकर दुखियों की हर तरह से मदद करते रहे। यही कारण था कि अकबर के दिल में गुरु-घर के प्रति मान-सम्मान था।

जहांगीर के वक्त लाहौर तथा कश्मीर में गिल्टी बुखार ने बहुत नुकसान किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब कश्मीरियों की मदद के लिए शीघ्रतम कश्मीर गए थे। वहां एक वर्ष के लगभग लोगों की वे हर तरह से सहायता करते रहे। फिर लाहौर आकर भी गुरु जी ने भुखमरी का शिकार हो रहे गरीबों की मदद की थी। कश्मीर एवं माझा में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बहुत लोकप्रिय हो गए थे। जहांगीर पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। उसे भ्रम हो गया था कि कहीं सिक्खों की बढ़ती ताकत मुगल हकूमत के लिए ख़तरा न बन जाए।

शाहजहान के राज्य के समय भी हिंदोस्तान में भारी अकाल पड़ा-- पहले दक्षिण में, फिर कश्मीर में और फिर पंजाब में। कश्मीर में तो ज्यादा बारिश ने फसल तबाह कर दी, दक्षिण एवं पंजाब में सूखे ने लोगों को आतुर कर दिया। १६३९ ई में शाहजहान ने पंजाब में नहरें खोदने के प्रत्यन तो किए-कराए किंतु फिर भी १६४६ ई में यहां अकाल पड़ ही गया। तीन वर्ष तक बहुत सूखा पड़ा रहा। जहां-जहां इस सूखे ने तबाही मचाई, लोग एक-एक निवाले को आतुर हो गए। एक-एक रोटी के बदले शरीर की इज्जत बिक रही थी। मनुष्य, मनुष्य को

ही खाने लग गया। माता-पिता अपने बच्चों को बेच रहे थे। शाहजहान ने शाही खज़ाने में से चालीस हज़ार रुपये देकर दस लंगर खुलवाये थे, किंतु इतनी थोड़ी राशि से और सरकारी हाकिमों द्वारा बांटी रकम से अकाल-पीड़ितों की कितनी सहायता हो सकती थी?

श्री गुरु हरिराय साहिब के सामने अपने दादा और पड़दादा जी के डाले पद-चिन्ह मौजूद थे। जिस दसवंध-मर्यादा ने श्री गुरु अरजन साहिब तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय गरीबों को अमूल्य सहारा दिया था, वही दसवंध अब भी अकाल-पीड़ितों के लिए टेक साबित हुआ। सिक्खों की गिनती भी पहले से ज्यादा हो चुकी थी। अलग-अलग प्रांतों में से सुखी बसते सिक्खों ने दिल खोलकर धन भेजा, जो श्री गुरु हरिराय साहिब ने अकाल-पीड़ितों की मदद हेतु प्रयोग किया।

भयभीतों को सहारा : शाहजहान की पक्षपात वाली नीतियों के कारण खासकर हिंदू जनता ज्यादा परेशान थी। मनुष्यता पैरों तले रौंदी जाने लगी। सिक्ख धर्म के दृष्टिकोण से मनुष्यता के दो ही बड़े लक्षण हैं-- न किसी को डराना और न ही किसी से डरना। भयभीत लोगों को सहारा देने के लिए श्री गुरु हरिराय साहिब कीरतपुर साहिब के आस-पास के इलाकों में प्रचार करते रहे। कीरतपुर साहिब से दूर पहाड़ी इलाके में खासकर ज्यादा जरूरत थी, क्योंकि वे लोग पत्थर-पूजक थे और डरपोक भी थे। गुरु जी ने १६५४ ई से १६५८ ई तक दुआबा, मालवा एवं माझा के इलाके में चार वर्षों तक भ्रमण किया।

कीरतपुर साहिब से चलकर वड्डी बहिली, हरीआं वेलां, भुंगरनी, बंबेली आदि गांवों में ठहरते हुए सतिगुरु जी करतारपुर शहर से बाहर लगभग एक मील के फासले पर आ पहुंचे। वहां अब मंजी साहिब गुरुद्वारा सुशोभित है। करतारपुर में पंद्रह दिन रहकर गुरु जी श्री अमृतसर साहिब आए तथा यहां ६ महीने निवास रखा। मालवे के प्रसिद्ध भाई भगतू जी यहां गुरु जी के दर्शन करने आए तथा यहां ही अकाल चलाना कर गए। गुरु जी ने भाई भगतू की जगह पर उसके छोटे पुत्र भाई जीऊण को योग्य प्रेमी सिक्ख देखकर मालवा क्षेत्र का मसंद नियुक्त कर दिया।

मालवा के इलाके में श्री गुरु नानक देव जी के आदर्श का प्रचार करने के लिए गुरु जी करतारपुर से चल पड़े। नूरमहल, डरौली, भाई रूपा, कांगड़ आदि नगरों से होते हुए गुरु जी गांव मराझ में पहुंचे। यहां के चौधरी काले ने बड़ी सेवा की। गुरु जी यहां कई दिन ठहरे। एक दिन चौधरी काला अपने दो भतीजों-- फूल एवं संदली को साथ लेकर गुरु जी के दरबार में आया। इन लड़कों के माता-पिता मर चुके थे। चौधरी काला ही इनका पालन-पोषण करता था। लड़कों ने गुरु जी को माथा टेककर अपने पेट पर हाथ फेरना शुरू कर दिया। गुरु जी देखकर हंस पड़े। काले से कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि ये यतीम कुछ खाने को मांगते हैं। गुरु जी ने वचन किया कि इनकी संतान तो सतलुज एवं यमुना के मध्य राज्य करेगी।

दारा शिकोह पर असर : मुगल बादशाहों की खुफिया पुलिस का सिलसिला बहुत ताकतवर एवं कामयाब था। शाहजहान को सब प्रकार की खबरें मिल रही थीं कि मुसीबत के समय कौन दुखियों का सात्विक दर्दी साबित हो रहा है। बादशाह पर इस बार प्रभाव पड़ना स्वाभाविक सी बात थी, किंतु गुरु जी के इस उद्यम का

सबसे ज्यादा असर पड़ा शाहजहान के पुत्र दारा शिकोह पर। दारा शिकोह पंजाब का गवर्नर था। दारा शिकोह के मन में गुरु-घर की उच्चता घर कर गयी थी। समय मिलने पर दारा शिकोह श्री गुरु हरिराय साहिब को मिलता भी रहा। उसने एक बार गुरु-घर के लंगर के लिए जागीर देने की कोशिश भी की किंतु गुरु जी ने यह कहकर इंकार कर दिया कि यह लंगर सिक्खों के प्यार तथा कुर्बानी के द्वारा ही चलना चाहिए।

शारीरिक सुख-दुख प्रत्येक मनुष्य पर आया करते हैं। बड़े लोगों के निजी हकीम-डॉक्टर होते हैं। जितना ज्यादा धन, उतना ज्यादा ज़िंदगी को खतरा। दारा शिकोह भी एक बार बीमार पड़ गया। बीमारी भी कुछ खतरनाक बन गई। ऐसे समय में ऐसे आदमियों की जान की रक्षा करने के लिए विशेष प्रबंध करने पड़ते हैं। मुगल बादशाहों में तो यह रीति ही चलती आ रही थी। राज्य की खातिर भाई ही भाई की जान के दुश्मन बनते रहे थे। श्री गुरु हरिराय साहिब की निरवैरता तथा ऊंची मनुष्यता पर शाहजहान ने विश्वास कर गुरु जी के दवाखाने से खास किस्म की दवा मंगवाई। उस दवा का सेवन करने से दारा शिकोह तंदरुस्त हो गया।

शाही तख़्त के लिए भाग-दौड़ : शाहजहान के चार पुत्र थे-- दारा शिकोह, शुजाह, औरंगजेब तथा मुराद। उसने अपनी बादशाही को चार हिस्सों में बांटकर प्रत्येक पुत्र को एक-एक हिस्से का गवर्नर बना दिया :

१) दारा शिकोह : इलाहाबाद, पंजाब तथा मुलतान का गवर्नर
२) शुजाह : बंगाल का गवर्नर
३) औरंगजेब : दक्षिण का गवर्नर
४) मुराद : मालवा तथा गुजरात काठियावाड़ का गवर्नर

शाहजहान का दारा शिकोह के साथ सबसे ज्यादा प्यार था। इसी कारण अन्य तीन भाइयों की दारा शिकोह के विरुद्ध सांझी ईर्ष्या थी।

सितंबर, १६५७ ई में शाहजहान सख़्त बीमार पड़ गया। बचने की आशा न रही। उसने अपने बड़े पुत्र दारा शिकोह को अपने पास बुलवा लिया और उसको तख़्त का वारिस स्थापित कर दिया। अन्य तीनों भाइयों ने चिट्ठी-पत्र के द्वारा आपस में सलाह बना ली कि सभी आगरा में इकट्ठा हों। औरंगज़ेब सबसे चालाक था। उसने बहाना पेश किया कि दारा ने बादशाह को नज़रबंदी में रखा है, हमने अपने पिता को उसकी गुलामी में से निकालना है।

इतने में नवंबर, १६५७ ई में शाहजहान बिलकुल तंदरुस्त हो गया। मुराद ने बगावत कर दी तथा दिसंबर में उसने खुद को बादशाह कहलाना शुरू कर दिया। शुजाह ने भी बंगाल में बगावत कर दी। दारा शिकोह ने मुराद एवं औरंगज़ेब के बीच आपस में फूट डालने की कोशिश की किंतु कामयाब न हुआ। वे दोनों अपने-अपने इलाके से फौजें लेकर नर्मदा नदी के इस पार अप्रैल, १६५८ ई के मध्य में इकट्ठा हो गए।

शाहजहान नवंबर, १६५७ ई में बीमारी के कारण दिल्ली से मुड़कर आगरे चला गया। दारा शिकोह भी उसके पास ही था। जब शाहजहान को मुराद व औरंगजेब के बारे में पता चला तो उसने दारा को फौज देकर मुकाबला करने के लिए भेजा। दारा की पराजय हुई। वो आगरा के लिए वापिस भागा। वह इतना डर गया कि आगरे भी न रुक सका। बूढ़े तथा कमज़ोर पिता को छोड़कर वो दिल्ली भाग आया।

१८ जून, १६५८ ई को आगरा पहुंचकर

औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहान को किले में नज़रबंद करवा दिया तथा दारा शिकोह का अस्तित्व मिटाने के लिए मुराद समेत दिल्ली को चल पड़ा। मथुरा पहुंचकर उसने मुराद को भी मौका पाकर कैद कर लिया तथा आगरा भिजवा दिया, जहां किले में उसको कत्ल करवा दिया गया।

घबराया हुआ दारा दिल्ली से भी भाग निकला, गोइंदवाल के पास से ब्यास पार कर लाहौर आ पहुंचा। औरंगजेब ने दिल्ली पहुंचकर कुछ दिन मुकाम किया। फिर फौज लेकर लाहौर को चल पड़ा। यह ख़बर सुनते ही दारा लाहौर से भी भाग निकला। पहले मुलतान पहुंचा। औरंगजेब ने भी लाहौर से मुलतान तक दारा का पीछा किया। मुलतान से औरंगजेब खुद तो दिल्ली वापिस आ गया तथा दारा को मारने का काम अपने कुछ बहादुरों के सुपुर्द कर आया। दारा मुलतान से सिंध, कच्छ तथा पुन: सिंध की तरफ व्याकुल, ठोकरें खाता हुआ आखिर दादेर के पास पकड़ा गया तथा दिल्ली लाकर कत्ल किया गया। औरंगज़ेब ने शुजाह को ऐसे हाथ दिखाए कि वह भी खाली हाथ होकर अराकान के इलाके में जा मरा। इस तरह हिंदोस्तान की बादशाही औरंगज़ेब के हाथ आई। यह सारा ज़िक्र १६५८ ई का है।

शाही बुलावा : पंजाब में सिक्खों की बढ़ रही ताकत की रिपोर्टें औरंगज़ेब को भूल नहीं सकती थीं। दूसरी तरफ उसको यह कहकर भड़काया जा रहा था कि श्री गुरु हरिराय साहिब ने दारा शिकोह के भागने के समय उसकी मदद की थी। औरंगज़ेब ने श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली आने का बुलावा भेजा। उस समय तक गुरु जी माझा, मालवा, दुआबा क्षेत्र के गावों में प्रचार कर कीरतपुर साहिब वापिस आ चुके थे।

गुरु जी ने अपनी जगह अपने बड़े पुत्र रामराय को भेजा तथा कुछ सूझवान मसंद (प्रचारक) भी साथ भेज दिए। जाते समय गुरु जी ने शिक्षा दी कि प्रत्येक कार्य में गुरु-आश्रय में रहना, गुरु को सदैव अंग-संग समझना। रामराय बहुत ही प्रवीण तथा हाज़िर-जवाब था। उसकी विद्वता का औरंगज़ेब पर बहुत असर पड़ा। सिक्ख इतिहासकार लिखते हैं कि बादशाह ने रामराय की अज़मत परखने के लिए कई तरह की अज़माइश की। रामराय प्रत्येक अज़माइश पर खरा उतरता रहा, जिसका परिणाम यह हुआ कि औरंगज़ेब रामराय का बहुत सम्मान करने लग गया। औरंगज़ेब पक्का मुसलमान था। इसलाम के प्रति उसकी श्रद्धा असीमित थी। वास्तव में वह रामराय को दिल से जीतकर अपने धर्म में लाना चाहता था क्योंकि रामराय अभी किशोरावस्था का युवा था। औरंगज़ेब के दरबारी, काज़ी, मौलवी, बादशाह की इस नीति को समझते हुए उसके इस प्रत्यक्ष झुकाव को पसंद नहीं करते थे। वे किसी न किसी तरह दोनों में विषमता देखना चाहते थे। इसी कारण वे बादशाह द्वारा रामराय पर कई किस्म के सवाल करवाते रहते थे। रामराय की हाज़िर-जवाबी के आगे काज़ियों की पेश नहीं जाती थी और बादशाह की सदैव संतुष्टि ही होती रही।

आखिर एक दिन काज़ियों की प्रेरणा से औरंगज़ेब ने रामराय से पूछा कि श्री गुरु नानक देव जी ने जो मुसलमानों के बारे में लिखा है-- *"मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर"* इससे क्या अभिप्राय है? काज़ियों की चोट आखिर सही जगह पर लगी। बादशाह से बना सम्बंध कायम रखने के लिए रामराय ने

(शेष पृष्ठ १६ पर)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का युद्ध-विधान

*-डॉ. जगजीत कौर**

वाहि उपजिओ चेला मरद का मरदान सदाए।
जिनि सभ प्रिथवी कउ जीत करि नीसान झुलाए।
तब सिंघन कउ बखस करि बहु सुख दिखलाए।
फिर सभ प्रिथवी के ऊपरे हाकम ठहिराए। . . .
तब भइओ जगत सभ खालसा मनमुख भरमाए।
इउं उठि भबके बल बीर सिंघ शसत्र झमकाए।
(वार ४१:१९)

"जागे सिंघ बलवंत बीर सभ दुसट खपाए।" दुष्टों को खपाने, उनका समूल नाश करने के उद्देश्य से ही अकाल पुरख वाहिगुरु जी ने इस पुरख मरद अगंमड़ा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को इस भू पर भेजा। दशम गुरुदेव जी ने स्वयं अपने जीवन-उद्देश्य को स्पष्ट किया है :

याही काज धरा हम जनमं ॥
समझ लेहु साधू सभ मन मं ॥
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥६॥

दुष्टता, अन्याय, असमानता, अनाचार, अत्याचार, शोषण और मानव अधिकारों के हनन का विरोध करके मानव सुख, शांति और स्वतंत्रता के सुख-उपभोग द्वारा जीवन-यापन करे, हलेमी राज्य की स्थापना हो, इसी उपक्रम में गुरुदेव जी ने आततायी दुष्ट सत्ता से टक्कर ली, विजय की दुंदभि बजाते हुए युद्धों का आह्वान किया। यद्यपि इन युद्धों में अनेक प्रिय अलबेले शौर्यपूर्ण सिंघों का बलिदान, अपने लखते-जिगर बड़े साहिबज़ादों का युद्ध-भूमि में बलिदान; अन्य दो नन्हे दुधमुंहे साहिबज़ादों को शत्रुपक्ष की ईर्ष्या का निशाना बन पंथ की बलिवेदी पर कुर्बान होना पड़ा, स्वयं आजीवन कष्ट सहते हुए माछीवाड़े के जंगलों में नंगे पांव भटकना पड़ा, पर *"यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा"* प्रभु-हुक्म स्वीकार कर शत्रु को ऐसा सबक सिखाया कि सदियों तक उसे सिर उठाने लायक नहीं छोड़ा, उसकी जड़ें उखाड़कर ही दम लिया।

विचार करें कि नवोदित सिक्ख पंथ के पास कोई राजसी सत्ता नहीं थी, कोई संगठित सैन्य बल व साधन नहीं थे। श्री गुरु नानक पातशाह जी के जन्म लेने के समय से ही बाबर का आगमन होता है। धीरे-धीरे सिक्ख पंथ के अभ्युदय के साथ ही साथ सुदृढ़ मुगल राज्य की स्थापना होती है, अकबर, जहांगीर औरंगज़ेब दृढ़ शक्तिशाली मुगल सिक्ख पंथ की उन्नति के समानांतर चलते हुए समय-समय पर अवरोध खड़े करते रहते हैं। इधर स्वयं हिंदू पहाड़ी राजा भी शत्रु पक्ष का ही समर्थन करते रहे हैं। ऐसे माहौल में ऐसी कौन सी शक्ति थी जो खालसा को परम शौर्य का प्रदर्शन करते हुए, मुट्ठी भर जवानों को रण-भूमि में जूझने की प्रेरणा देती रही। वे केवल जूझे ही नहीं, अंत विजय भी हासिल की और केसरी निशान बुलंद होते रहे।

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अनेकों युद्ध लड़े गए। सबसे पहला युद्ध पाउंटा साहिब की धरती पर लड़ा गया। भंगाणी का युद्ध, फिर नादौन, हुसैनी का युद्ध और तब अनंदपुर साहिब में पहाड़ी राजाओं के साथ छोटे-मोटे युद्धों में सिंघ स्वयं गुरु जी के नेतृत्व में और साहिबज़ादा अजीत सिंघ के शौर्य-प्रदर्शन से प्रेरित पहाड़ी राजा को हाथ दिखाते रहे, परंतु १७०४ ई में सभी पहाड़ी राजे मुगलों की सम्मिलित सेना सहित अनंदपुर साहिब पर आ चढ़े। तब भी सिंघों के हौसले बुलंद रहे। आठ महीने अनंदपुर साहिब पर घेरा पड़ा रहा। अंत मुगलों और पहाड़ियों की कसमों पर विश्वास कर किला खाली किया गया। विश्वासघाती मुगलों ने सरसा नदी के किनारे घोर शीत की रात्रि में अचानक आ हमला किया। गुरुदेव जी का सारा परिवार बिखर गया। अनेकों सिंघ और माल-असबाब सरसा के बर्फीले जल में बह गया। अंत चमकौर की गढ़ी में केवल ४० सिंघों का शाही सेना के साथ भयानक युद्ध हुआ जिसमें गुरुदेव के बड़े साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ और बाबा जुझार सिंघ शूरवीर गति को प्राप्त हुए। गुरु जी को गढ़ी छोड़नी पड़ी। तब गुरुदेव जी माछीवाड़ा, हेहर, जटपुटा होते हुए रायकोट पहुंचे। यहीं चौधरी रायकल्ला ने नूरे माही सेवक को माताओं और छोटे साहिबज़ादों का समाचार लाने को भेजा, जिसने आकर बताया कि कैसे सरहिंद के नवाब वज़ीर खां ने छोटे साहिबज़ादों को बेरहमी से ज़िंदा दीवार में चिनकर शहीद किया। माता गुजरी जी को ठंडे बुर्ज में रखा और वे भी पंथ पर कुर्बान हो गए। अडोल-चित्त गुरु जी तब रायकल्ला से दीना कांगड़ आ गए। यहां गुरु जी ने एक लंबी चिट्ठी लिखी, जिसे 'जफ़रनामा' (फ़तह का पत्र) कहते हैं। गुरु जी ने इसमें १११ शेअर फारसी में लिखे। यह 'फ़तह का पत्र' भाई दया सिंघ जी के हाथ दक्षिण में स्थित औरंगज़ेब बादशाह को भेजा गया। फ़तह का यह पत्र गुरुदेव जी की अदम्य विजयोत्साह बुलंद मानसिकता और चढ़दी कला का प्रतीक है और प्रत्येक सिक्ख के लिए अद्वितीय प्रेरणा एवं अर्ध्वमुखी मानसिकता बनाए रखने का सुंदर संदेश है।

दीना कांगड़ गुरु साहिब अधिक देर नहीं ठहरे। उन्होंने कोटकपूरा, ढिलवां ठहरते हुए 'खिदराणे की ढाब' पर कैंप लगाया। यह मालवा का क्षेत्र था, जिसके आसपास सारा मरुस्थल था। इसे अपनी गतिविधि का केंद्र बनाया। सरहिंद का नवाब मुगल सेना ले गुरु जी का पीछा करता आ रहा था। गुरु जी ने भी तैयारी शुरू कर दी। अब तक गुरु जी के पास अनेकों मरजीवड़े इकट्ठे हो गए थे। इधर माझा-मालवा के अनेकों सिंघ अमृत-पान कर सिंघ सज चुके थे और पंथ हित कुर्बान होने के जज़्बे से सराबोर थे। यहीं गुरु जी को मालवे के स्वाभिमानी जवानों का विशाल जत्था आ मिला, जिसमें वे चालीस सिंघ भी थे जो अनंदपुर साहिब के घेरे के समय गुरु जी को 'बेदावा' लिखकर दे आए थे; गुरु जी से नाता तोड़ घरों में आ बैठे थे।

इन गुरु से टूटे सिंघों को गुरु-चरणों से जोड़ने की जबरदस्त भूमिका जिस अपूर्व शक्तिशाली, वीर साहसी माता ने निभाई उसका नाम सिक्ख इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। सिक्ख इतिहास को पलटकर रख देने वाली वह अदम्य साहस की अनुकृति हैं-- माता भाग कौर। सिक्ख जगत उनके द्वारा निभाई गई भूमिका को

कभी विस्मृत नहीं कर सकता। माता भाग कौर एक समर्पित गुरसिक्ख परिवार से सम्बंध रखती थीं। श्री गुरु अरजन देव जी से सिक्खी की दात प्राप्त करने वाले भाई लंगाह जी लाहौर से दिल्ली जाने वाली सड़क पर झबाल नामक गांव के ढिल्लों गोत्र के जाट थे। चौधरी लंगाह के भाई पैरोशाह थे; पैरोशाह के पुत्र मालेशाह के घर चार पुत्र और एक पुत्री हुई जो बाल्य-काल से ही अत्यंत सुचेत थी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने अपनी सुपुत्री बीबी वीरो जी का विवाह इसी गांव झबाल में किया था। परिवार गुरु-संपर्क में रहा। उपरांत श्री गुरु हरिराय साहिब के समय यह बच्ची अभी सात-आठ साल की थी जब इसकी माता इन्हें श्री गुरु हरिराय साहिब के दरबार में लेकर गई। गुरुदेव जी ने सिर पर बख़्शिश भरा हाथ रख आशीर्वाद दिया और कहा कि बच्ची बहुत भाग्यशाली है। तब से नाम 'भागभरी' पड़ा। आस-पास 'भागो' कहने लगा। माता भाग कौर गुरु-चरणों से जुड़ी रहीं। वे श्री गुरु तेग बहादर साहिब के दरबार में भी रहीं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खालसा पंथ साजना के अवसर पर पूरे परिवार के साथ खंडे-बाटे की पाहुल प्राप्त कर सिंघणी सजीं। सवा छः फुट कद, तेजस्वी मुख-मंडल, भारी भरकम डीलडौल, शस्त्र-संचालन में निपुण, पूरा सेनानी वेश।

अनंदपुर साहिब से बेदावा लिखकर दे आए सिंघ जवान जब घरों में घुस बैठे तो माता भाग कौर जी ने कहा, "कैसे गुरु के सिक्ख हो, कष्ट के समय जब गुरु जी को तुम्हारी जरूरत थी तुम साथ छोड़ चले आए? इन सिंघों को इस प्रेरणा ने उत्साहित किया। वे चलते-चलते खिदराणे की ढाब से पहले ही रामेआणा की सीमा के निकट रुक गए। इन्हें अपनी करनी पर शर्मिंदगी और पश्चाताप हो रहा था। इन्होंने निश्चय किया कि जब तक गुरुदेव खिदराणे की ढाब के ऊपरी टीले पर पक्की मोर्चाबंदी नहीं कर लेते तब तक वे यहीं डटकर मुगल सेना को रोके रखेंगे, उसे गुरु जी तक पहुंचने नहीं देंगे। देखते-देखते माझे-मालवे के और भी शूरवीर सिंघ वहां इकट्ठे हो गए। ढाब के निकट ही इन सिंघों ने वज़ीर खां की चढ़कर आती सेना को ऐसा सबक सिखाया कि वो त्राहि-त्राहि करने लगी। एक-एक सिंघ ने हज़ारों-हज़ारों के सिर काटकर धर दिए। सिंघ अकेला-अकेला ही इतने उत्साह और शौर्य से शस्त्र चला रहा था मानो उसके पीछे फौज की भारी टुकड़ी साथ दे रही हो। सिंघों ने तो गुरु के चरणों पर न्यौछावर हो शहादत पाने की ठान रखी थी। मृत्यु का भय तो तिरोहित हो चुका था। गुरु जी से आशीर्वाद पाने का यही मौका था, अपनी भूल को बख़्शाने का यही अवसर था। बस, उद्देश्य सामने था कि केवल एक गुरु-पंथ के नाम पर शहीद होना है, शहादत का जाम पीकर गुरु की गोद में समाहित होना है। भयानक मार-काट मचती रही। शत्रु लड़ते-लड़ते थक गए। पानी भी नसीब नहीं हो रहा था। उन्हें पानी की ढाब तक पहुंचने ही नहीं दे रहे थे गुरु के सिंघ। गुरु के सिंघ लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। शत्रु थक-हारकर भाग गए। ऊपर से ऊंची टिब्बी पर बैठे दशमेश जी शत्रुओं पर तीरों की बौछार कर रहे थे। साथ ही सिंघों के जूझने का नज़ारा देख रहे थे। युद्ध का नज़ारा अत्यंत भयानक था। 'गुर बिलास पातशाही १०' के कविवर भाई कुइर सिंघ उस युद्ध की भयावहता का ज़िक्र करते हुए कहते हैं,

मानो प्रलय-काल की विभीषिका का हाहाकार मच रहा था। सिंघ भयानक शेरों की भांति गर्जन कर रहे थे। उधर से गुरुदेव बाणों की झड़ी लगा रहे थे, इधर सिंघों की तेगें ऐसे चमक रही थीं मानो आकाश में बिजली चमक रही हो :

महां जंग तिह ठां अब भयो।
हाहाकार चतुर दिस भयो ॥६३॥
दे दे परे सु तुरक नगारे।
केहरि जयों मुकते भभकारे।
भयो जुद्ध अतिसै घन भारो।
प्रलै काल जयों दुती निहारो ॥६४॥
इत मुकतन यों जुद्ध मचायो।
बिसिख चाप प्रभु उत झड़ आयो।
इह बिधि परे अरिन मै बाना।
जिउं नभ बिज्जुल धरन महाना ॥६५॥
(अध्याय १८)

युद्ध समाप्त होने पर विजय की घोषणा के साथ दशमेश पिता टिब्बी पर से नीचे उतरे। वे सोच रहे थे कि ये कौन से शूरवीर योद्धा हैं जो विद्युत-गति से युद्ध कर रहे थे और लड़ते-लड़ते अंत में प्राण न्यौछावर कर गए। गुरु जी ढाब के किनारे मैदान में आए। चारों ओर बिछी लाशों और रक्त की धाराओं का भयावह दृश्य देखा। तब शहीद सिंघों को पहचानने के उद्देश्य से उनके निकट आए, देखा, ये वही मरजीवड़े ४० सिंघ थे जो अनंदपुर साहिब छोड़कर चले आए थे। गुरु जी दयार्द्र हो उठे, हृदय प्रेम विगलित हो उठा। वे उन मृत शरीरों के निकट पहुंचे। एक-एक सिंघ का सिर उठा कर अपनी गोद में रखा, प्यार से उनका लहूलुहान हुआ मुख पोंछा और जान न्यौछावर करने वाले उन सिंघों को सम्मानस्वरूप विशेषण दिया-- "यह मेरा पंज हज़ारी है", "यह मेरा प्यारा दस हजारी है", "यह मेरा बीस हज़ारी है।" इसी तरह उन्हें आशीर्वाद देते हुए हृदय-प्रेम से गद्‌गद् थे गुरु जी, पर नेत्र सजल, अश्रुओं की धार बहती रही। गुरु जी हृदय से अकाल पुरख का शुक्राना कर रहे थे कि "जिस मकसद के लिए *"धरा हम जनमं"* पूर्ण हुआ, खालसा बेखौफ हो चुका है, मौत का डर उसे नहीं रहा, अब वह इसी शमशीर की शक्ति से अन्याय, अनाचार और धक्केशाही का विरोध कर सकेगा, खालसा इतना समर्थ हो चुका है।" ऐसे ही सोचते-विचारते लाशों के ढेर में से चलते जब रुके तो देखा, यह सिंघ तो जत्थेदार है, उन बेदावा लिख दे आए सिंघों का मुखिया भाई महां सिंघ। दृश्य घूम गया नेत्रों में, "न तुम हमारे गुरु, न हम तुम्हारे सिक्ख।" और अब खालसा पंथ की शान हित कुर्बान हुआ पड़ा है। गुरु जी निकट पहुंचे। भाई महां सिंघ की उखड़ी-उखड़ी सांसें चल रही थीं। गुरु जी ने उसका सिर अपनी गोद में रखा, मुंह में पानी की बूंदें डालीं। भाई महां सिंघ की आंखें खुलीं, गुरु जी के दर्शन पा निहाल हुआ। गुरुदेव जी ने प्यार से कहा, "भाई महां सिंघ ! अंतिम मिलन है, कुछ मांग लो।" गुरु जी के दो-तीन बार ऐसा कहने पर भाई महां सिंघ, जिसकी आंखें बेहोशी से कभी खुलती, कभी बंद होती थीं, आखिर साहस बटोरकर कहा, "गुरुदेव, अपने चरणों से जोड़ लो! टूटे हुओं को जोड़ लो गुरुदेव!!" गुरु जी ने वह पत्र जेब से निकाला जिस पर 'बेदावा' लिखा था और भाई महां सिंघ के खुले नेत्रों के सामने ही उसे फाड़ दिया। भाई महां सिंघ को प्यार से गले लगाया। भाई महां सिंघ गुरु जी की गोद में ही परलोक गमन

कर गया। बख़शिंद गुरुदेव जी ने सभी प्यारे सिंघों को चरणों से जोड़ लिया, घोषणा की, "ये चालीस सिंघ मुक्त हुए। आज से ये 'मुकतों' (मुक्तों) के नाम से जाने जायेंगे।" ढाब के किनारे ही सूखी लकड़ियां इकट्ठी की गईं और चिता चुन उन चालीस सिंघों का एक साथ गुरुदेव जी ने अपने हाथों से दाह संस्कार किया। इन महान शहीद चालीस मुकतों की याद में गुरुद्वारा टुट्टी गंडी साहिब, श्री मुकतसर साहिब है। इन्हीं मुकतों के नाम पर 'खिदराणे की ढाब' का नाम 'श्री मुकतसर साहिब' प्रसिद्ध हो गया। इन महान सिंघों को प्रतिदिन अरदास में 'चाली मुकतों' के नाम से याद किया जाता है। माघी के दिन शहीदों के इस तीर्थ-स्थल पर महान सालाना समागम होता है। भाई कुइर सिंघ जी के अनुसार :

तिन को वहै बखस करि दीना।
कागज वहै फाड़ कै दीना।
क्रिपा सिंघ साहिब गुरदेवा।
पै यहि कारज कीन अभेवा।
सब मुकतन इक ठौर करायो।
तिन पर ईंधन अधिक पवायो।
एक शहीद गंज तिह कीनो।
आपन हाथ अनल तिह दीनो।
इह बिध तीरथ थाप कै धर सु महातम चार।
पयान करा महाराज जू सर ते अग्र सुधार।
(अध्याय १६)

इसी मैदान में गुरुदेव जी को माता भाग कौर जी का ज़ख़्मी शरीर बेहोशी में, कराहते हुए मिला। गुरुदेव जी ने उनकी भी मरहम-पट्टी करवाई। वो दर्शन पा निहाल हुई। बाद में वो गुरु जी के साथ दक्षिण तक रही। कर्नाटक के बिदर के जनवाड़ा नामक एक स्थान तक गुरु जी के साथ रही और वहीं परलोक में समाई। जनवाड़ा में उनकी स्मृति में गुरुद्वारा साहिब सुशोभित है। यह गुरुद्वारा बिदर की गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रबंधाधीन है।

इस प्रकार श्री मुकतसर साहिब की जंग जो गुरु जी द्वारा लड़ी गयी, अंतिम जंग थी। उसमें सिंघों को विजय हासिल हुई। गुरु जी द्वारा लड़े गए युद्धों में उनकी जीत का मुख्य कारण गुरुदेव जी की सैन्य-शक्ति और सैन्य-संगठन था। राजनीतिक क्षेत्र में अधिकांश युद्ध अपनी राज्य-सत्ता का दबदबा कायम करने, पैतृक राज्य सीमा को बढ़ाने अथवा दूसरे राज्य का धन-वैभव बटोरने के उद्देश्य से किए जाते हैं, किंतु गुरुदेव जी का इन तीनों में से कोई भी ऐसा उद्देश्य नहीं था। ये युद्ध केवल अन्याय, धक्केशाही और असत्य के विरोध हित किए गए। ज्यादातर युद्ध गुरु जी पर थोपे ही गए। उनकी ख्वाहिश युद्ध करने की कभी नहीं रही, लेकिन *"जबै बाण लाग्यो तबै रोस जाग्यो"* के अनुसार जब आत्म-सम्मान की बात आ बने तो शत्रु को करारे हाथ दिखाना आवश्यक हो जाता है। सीमित साधनों के होते हुए भी यह गुरुदेव जी की सिंघ सैनिकों को दी गई प्रेरणा ही थी, जो उन्हें जूझने को उत्साहित करती रही और *"भई जीत मेरी ॥ क्रिपा काल केरी ॥"* के अनुसार अकाल पुरख वाहिगुरु सिंघों को फ़तह का आशीर्वाद देते रहे।



श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन आदर्श

*-डॉ. हरमहेंद्र सिंघ**

भारतवर्ष की बड़ी महान हस्तियों में साहिब-ए-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अज़ीम हस्ती हैं। उत्तर-मध्य काल को समझने के लिए गुरु जी द्वारा किए गए कार्यों को देखना-समझना इतिहासकारों, साहित्यतिहासकारों एवं संस्कृतिवेत्ताओं के लिए अत्यावश्यक है। हिन्दोस्तान की तहज़ीब को ऐतिहासिक मोड़ देने में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की विशेष भूमिका है। इस भूमिका में खालसा पंथ का निर्माण तथा उस इतिहास का सृजन है जिसके कारण भारत भारत रहा तथा विश्व की दृष्टि से महान देश भी बना। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी राष्ट्रनायक थे। राष्ट्रनायक की हैसियत से गुरु जी ने ऐसे काम सरअंजाम दिए जिनका प्रभाव आधुनिक भारत पर पड़ा। अत्याचार एवं जुल्म का टाकरा करने के लिए जिस खालसे की उन्होंने सृजना की थी भविष्य में उसके शानदार प्रभाव भारतीय इतिहास पर नज़र आए। भारतीय इतिहास का श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इतने निकट और इलाही अनुभव से निर्माण किया जिसमें पिता नवम् गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत एवं चार साहिबज़ादों की लासानी कुर्बानी छिपी हुई है। गुरु जी ने पिता और बेटों को भारतीय स्वायत्तता एवं अस्मिता के कारण शहादत का जाम पीते हुए देखा था। यही कारण है कि गुरु जी के जीवन का एक-एक पल भारतीय इतिहास के निर्माण में लगा। उनके लिए इंसान की एक ही जाति थी और वह थी उसकी मानवता। गुरु जी ने भारतीयों को ऐसी जीवन-जाच सिखाई जिसका पहला पाठ धर्म-निरपेक्षता से जुड़ा हुआ था। खालसे की सृजना ने भारतीयों में नई चेतना जगाई कि रंग, नसल और सम्प्रदायों का सामूहिक जीवन में कोई ऐसा रोल नहीं होता, जिसकी वजह से भेदभाव का माहौल पैदा किया जाए। गुरु जी चाहते थे कि खालसे की ज़िंदगी निराली हो। वह सच्चा-सुच्चा आदमी बनकर परिवार, समाज और राष्ट्र में हृदय-परिवर्तन की चिंगारी फूंके; श्रद्धा और आस्था उसका संबल बने।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुत बड़े दार्शनिक एवं भारतीय भाषाओं के ज्ञाता थे। अरबी-फारसी, संस्कृत, हिंदी, पंजाबी, अवधी, ब्रज आदि भाषाओं पर उन्हें अद्भुत अधिकार था। अनंदपुर साहिब एवं पाउंटा साहिब में उन्होंने नए साहित्य सृजन की ज़मीन तैयार की। गुरु जी के विद्या दरबार में भारतीय भाषाओं के ५२ कवि थे। इन कवियों ने गुरु जी के व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर संस्कृत साहित्य का हिंदी एवं पंजाबी में अनुवाद किया। गुरु जी ने सम्पूर्ण महाभारत, चुने हुए उपनिषदों एवं चाणक्य नीति का अनुवाद कर जनसाधारण को इस महान परंपरा से परिचित करवाया। यह भारतीय साहित्य का पुनर्सृजन था। भक्ति पुनर्संवाद में ढलकर दोबारा सृजित हो उठी। भक्ति के नए अर्थ आम आदमी की ज़िंदगी को प्रभावित करने लगे। भक्ति कर्म से जुड़ी और कर्म राष्ट्रीय

**१२५, कबीर पार्क, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ९३५६१-३३६६५*

दुख-सुख का हिस्सा बना। यह सब गुरु जी की सोच का कमाल था। पुरातन साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वैभव नई चिंतनधारा के अंग-संग बहने लगा। भारतीय चिंतन को खुला आकाश मिला और इस वेला में पुराने संदर्भों की नए सरोकारों से जुड़कर एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया आरंभ हुई जिसमें सब कुछ नया, मौलिक, न्यायपूर्ण तथा अपनी-अपनी इच्छा के अनुरूप प्रफुल्लित होने लगा था। गुरु जी ने इन संकल्पों को साकार करने की इच्छा-शक्ति का भी आवाम में संचार किया। यह इच्छा-शक्ति उस नए भविष्य का निर्माण करने वाली थी जिसकी जरूरत पूरा हिंदोस्तान महसूस कर रहा था।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत-सिपाही थे। वे जुल्म के खिलाफ लड़ने वाली जंग को धर्म-युद्ध मानते थे। गुरु जी ने भारतीय समाज, संस्कृति में कई नए अध्याय जोड़े। १३ अप्रैल, १६९९ ई को गुरु जी ने वैसाखी के मौके पर जिस खालसे का निर्माण किया, वह गुरमुख था और वह अन्याय से सीधा टकराने की शक्ति भी रखता था। भारतीय इतिहास साक्षी है कि गुरु जी ने चिड़ियों को बाज़ जैसी शक्ति दी और एक-एक खालसे को सवा लाख के बराबर वर्चस्व और विलक्षणता देकर अपनी अदम्य एवं अद्वितीय नीतियों का प्रचार-प्रसार किया। बेटों की शहादत पर गुरु जी ने कहा कि मुझे अपने चार बेटों की कुर्बानी का दुख इसलिए नहीं है क्योंकि मेरे हज़ारों बेटे (खालसा पंथ) देश-धर्म के लिए जीवित हैं। भारत के नवयुवकों को उन्होंने देश-धर्म हेतु कुर्बानी देने के लिए आशीर्वाद दिया। ऐसे उदार विचारक, दार्शनिक और राष्ट्रनायक कभी-कभार ही इस धरती पर आते हैं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सच्चे अर्थों में राष्ट्रनायक थे। खालसा पंथ को अकाल पुरख की फौज कहा गया है। खालसा पंथ में नैतिकता एवं सच्चाई के प्रति उदारता का संचार करने के लिए गुरु जी ने पहले पांच प्यारों को अमृत छकाया फिर उन्हीं के हाथों से स्वयं अमृत का पान किया। इस प्रकार गुरु और शिष्य एक हो गए। गुरु जी ने खालसा को अपना खास रूप कहकर पुकारा। खालसा में उनकी यह आस्था भी दृढ़ है कि उनका अध्यात्म चिंतन खालसा में निवास करता है। यह सब अनंदपुर साहिब की धरती पर घटा। सिक्ख धर्म का आगामी चिंतन एवं दर्शन खालसा पंथ के निर्माण के साथ नई ऊंचाइयों को छूता रहा है। सिक्खों की जो अलग पहचान हमें दिखाई देती है इसका श्रेय श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को जाता है। उन्होंने सिक्खों को निडरता का पाठ पढ़ाया था। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरु की पदवी देकर गुरबाणी के प्रति अटूट आस्था का परिचय ही नहीं दिया बल्कि गुरु की बाणी का आशीर्वाद समूह जन के लिए कल्याणकारी बना दिया।

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नाम लेते ही आज का भारतीय एक अपूर्व गौरव और उल्लास अनुभव करने लगता है। गुरु जी का बहुगुण-सम्पन्न महान व्यक्तित्व वाला जीवन था। धर्म, ज्ञान, कर्म, वैराग्य एवं गतिशील सक्रिय दृष्टि को वे मानव ज़िंदगी का मूल उद्देश्य मानते थे। गुरु जी मानते थे कि वही साधना सफल होती है जिसकी भागीदारी परिवेशगत मूल्यों में नवसंचार की शक्ति उढ़ेलती है। गुरु जी सच्चे कर्मयोगी थे। भारतीय परंपरा का उन्होंने इस प्रकार नवीकरण किया कि प्रत्येक जीवन-दृष्टि नई संभावनाओं से जुड़कर अपने अस्तित्व को मनुष्यता के प्रति उद्दातता के साथ तालमेल बैठाने लगी। यही कारण है कि पूरा

उत्तर-मध्य काल उनके व्यक्तित्व से आलोकित हो उठा। गुरु जी की कुर्बानियों का निजी इतिहास परम शिखरों को छूता है। गुरु जी की बाणी के रचना संचार ने उत्तर-मध्यकालीन रचना संसार को नए सोपान दिए। इन सोपानों में भक्ति, शक्ति, प्रेम, त्याग, सेवा तथा निर्भीकता जैसी मूलभूत सच्चाइयां आशा की नई किरणें बनकर दूर-दूर तक फैल गई थीं। वास्तव में यह ज़िंदगी का नया समाज-शास्त्र था जिसका निर्माण गुरु जी की दिव्य दृष्टि से हुआ। भारतीय इतिहास में यह जागरण का काल था। भारत में सोई हुई जन-शक्ति को गुरु जी ने दोबारा जगाया ही नहीं बल्कि ऐसी सामाजिक व्यवस्था का उसे हिस्सा भी बनाया जिससे वो अपनी हिफ़ाजत करनी खुद सीख गई। राजनीति का क्या आदर्श होना चाहिए, इसका सबक गुरु जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से सीखा जा सकता है।

आज गुरु जी को याद करने का अर्थ है उस भारत को याद करना जिसके निर्माण में गुरु जी की इसी महिमा का स्मरण कर उनके पावन जन्म उत्सव पर हम उन्हें शत्-शत् प्रमाण कर रहे हैं।



श्री गुरु हरिराय साहिब

(पृष्ठ ८ का शेष)

कह दिया कि श्री गुरु नानक देव जी ने असल में *"मिटी बेईमान की"* उच्चारण किया था, लिखारी की भूल की वजह से *"मिटी मुसलमान की"* हो गया है। औरंगज़ेब द्वारा आदर-सत्कार वाला दबाव सिर्फ रामराय पर ही नहीं डाला जा रहा था, यह जाल उसके साथ गए मसंदों पर भी बिछाया जा रहा था।

शाही सम्बंध की खातिर गुरु-आदर्श को बदल देना सिक्ख धर्म के निशाने से भटकाव था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने जब यह ख़बर सुनी तो उनको निश्चय हो गया कि रामराय अब इस योग्य नहीं रहा कि श्री गुरु नानक देव जी के उसूलों की रखवाली तथा सिक्ख धर्म के प्रचार की जिम्मेदारी इसके सुपुर्द की जा सके।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय को अपने निर्णय की ख़बर भेज दी कि तूने कभी हमारे पास नहीं आना, क्योंकि औरंगज़ेब के साथ सम्बंध कायम रखने की खातिर तूने श्री गुरु नानक पातशाह के उसूलों एवं गुरबाणी का अपमान किया है। औरंगज़ेब अपनी चाल में किसी हद तक कामयाब हो गया। उसने गुरु साहिब तथा रामराय के बीच फूट बढ़ाने के लिए रामराय को जागीर दे दी, किंतु सिक्ख कौम में गुटबाजी पैदा करने में वह कामयाब न हो सका। सिक्खों की श्रद्धा अपने गुरु के चरणों में अडोल रही। यह सारा ज़िक्र फरवरी, १६६० ई. के बाद का है।

ज्योति-जोत समाना : अपना अंतिम समय नज़दीक आता जानकर गुरु जी ने अपनी जगह अपने छोटे साहिबज़ादे श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी बख़्शी तथा आप जी ५ कार्तिक, संवत् १७१८ ई (मुताबिक ६ अक्तूबर, १६६१ ई) को कीरतपुर साहिब में ज्योति-जोत समा गए।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)



इतिहास के सृजक : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-स. सुखदेव सिंघ शांत**

'परचीआं सेवा दास' पुस्तक में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन की एक साखी दर्ज है। इस साखी में इतिहास से सम्बंधित नुकते उठाये गए हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक बार सिक्खों से पूछा कि जिस समय भक्त कबीर जी हुए थे, उस समय का बादशाह कौन था? साखी में बताया गया है कि सिक्खों में से कोई भी इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया। फिर गुरु जी ने सिक्खों को समझाया कि जिस बादशाह के पास बड़ी दुनियावी शक्ति थी, उसको कोई नहीं जानता किंतु भक्त कबीर जी को सभी जानते हैं। इसका कारण गुरु जी ने यह बताया कि भक्त कबीर जी ही ऐसे सच्चे बादशाह थे जो उस समय लोक-मनों पर राज्य कर रहे थे। उनके पास परमात्मा की भक्ति तथा सेवा-भावना का अमूल्य धन था। दुनियावी बादशाह वक्ती और झूठे होते हैं। इनका नाम चार दिन की चांदनी की भांति होता है। ये लोगों के दिलों के बादशाह नहीं होते।

इस साखी का बुनियादी अर्थ यह भी है कि पवित्र एवं रूहानी शख़्सियतें ही इतिहास का अमर अंग बनती हैं। इन शख़्सियतों ने इतिहास को एक नया मोड़ दिया होता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत की ओर जब हम दृष्टि डालते हैं तो हमें उनके जीवन की उपरोक्त साखी अमलीय रूप में साकार होती दीख पड़ती है। गुरु जी के समय हुए बादशाहों की कौन यादें मनाता है? इतिहास की किताबों में उनका ज़िक्र अवश्य है परंतु वे इतिहास का अमर अंग नहीं बन सके।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बचपन से लेकर ज्योति-जोत समाने तक एक विलक्षण इतिहास रचा है। अपने पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब को शहीदी के लिए प्रसन्नचित्त होकर विदा करना और बाद में अपने पुत्रों को भी जंग के मैदान में सजाकर भेजना, मात्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के हिस्से आया है। इन दोनों घटनायों ने ऐसे मील पत्थर गढ़े हैं, जो दुनिया के इतिहास में एक अद्वितीय मिसाल हैं। इतिहास-सृजक के रूप में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी तथा आप जी की निगरानी तले बावन कवियों की काव्य-रचना विशेष अहमियत रखती है। गुरु जी ने मिथिहासिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक कथाओं को बड़ी खूबसूरती के साथ पेश किया है। इतिहास-मिथिहास के खोज़ियों के लिए गुरु जी की बाणी एक बहुत ही लाभप्रद स्रोत है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की अद्वितीय शहीदी का वर्णन जिस ढंग से गुरु जी ने किया है वह इस रूहानी घटना के लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। इसी तरह जफ़रनामा आदि ऐसी बाणियां हैं, जिनके बिना इतिहास अधूरा है।

इतिहास के सृजक के तौर पर तीसरा तथ्य गुरु जी द्वारा खालसा पंथ की साजना किए जाना है। इस घटना ने विश्व भर के इतिहास को प्रभावित किया है। इस घटना ने एक अलग

**३६-बी, रतन नगर, पटियाला-१४७००१*

किस्म के पुष्ट सभ्याचार को जन्म दिया है। इस घटना का उद्देश्य गुरु जी की अपनी बाणी **'बचित्र नाटक'** में इस तरह दर्ज है :

धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारनि ॥

यही कारण था कि इस घटना के दौरान गुरु जी ने दृढ़ता तथा दिलेरी की परख की। धर्म चलाने के लिए तथा धर्म की रक्षा करने के लिए इन दोनों गुणों की आवश्यकता थी। बदी से टाकरा करने के लिए एक ऐसे पंथ की जरूरत थी जो निर्मल भी हो और शक्तिशाली भी। इतिहास की इस सृजना ने संत-सिपाहियों की ऐसी फौज तैयार की, जिसने *"सवा लाख से एक लड़ाऊं"* के इरादे को अमली जामा पहना दिया। साधारण जनता में गुरु जी ने इतनी दिलेरी भर दी कि वह डर से रहित हो गई। इसी घटना ने जात-पात की गहरी जड़ों को नीचे तक खोखला कर दिया। भाई नंद लाल जी के 'तनखाहनामे' में दर्ज निम्नलिखित शब्दों को एक ही अमृत के बाटे द्वारा अमली रूप में उजागर कर दिया :

सुनहु नंद लाल इह साज।
परगट कराऊं आपनो राज।
चार बरन इक बरन कराऊं।
वाहिगुरू का जाप जपाऊं ॥३४॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इतिहास के सृजक के तौर पर चौथा अहम फैसला यह किया कि श्री गुरु ग्रंथ साहिब ही भावी गुरु होंगे। कोई व्यक्ति-रूप में गुरु नहीं होगा। इस फैसले की ऐतिहासिक अहमियत समझना बेहद जरूरी है कि गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को सदैव के लिए गुरु का दर्जा देकर आने वाली नसलों को हर प्रकार के शंस्यों से सदा के लिए निवृत्त कर दिया।

पांच प्यारे साजकर उनको फैसले करने का अधिकार देकर तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की अगुआई में पंथ के हाथों में शक्ति देकर गुरु जी ने व्यक्तिगत रूप में गुरिआई की जरूरत की समस्या को सर्वदा के लिए हल कर दिया। सच में यह एक विलक्षण किस्म की ऐतिहासिक घटना थी।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)

कविता

कुछ अलग से

-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर',

जग में होगा हमारा काम कुछ अलग से। हम चमकाएंगे अपना नाम कुछ अलग से।
यकीनन मिलता है परिणाम कुछ अलग से। अगर किया जाए कोई काम कुछ अलग से।
हमारे सत्य को तुम झुठला न पाओगे, होता है हमारा पैगाम कुछ अलग से।
हम सोने वालों को जगाना चाहते हैं, हंसती सुबह की होगी शाम कुछ अलग से।
मंज़िल पाने को कष्ट उठाने होते हैं, मिलता है कष्टों का इनाम कुछ अगल से।
ऊंचाइयों को छूने का हो यदि हौसला, तो बन जाता है जग में ठाम कुछ अलग से।
जबेचते हैं जो ईमान भी, अपनी ज़मीर भी, क्या उन्हें मिलते हैं दाम कुछ अगल से?

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, मो. ९८७२२-५४९९०*

बहुपक्षीय शख़्सियत के मालिक थे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-बीबी ब्रिजइंदर कौर**

अपनी कथा का स्वयं बखान करने वाले, मर्द अगंमड़े, पुरख भगवंत, कुर्बानी के पुंज, समदृष्टिवेत्ता, *"चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥ हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥"* की जन्म-घुट्टी देने वाले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने २२ दिसंबर, १६६६ ई को माता गुजरी जी की पवित्र कोख से श्री गुरु तेग बहादर साहिब के घर पटना शहर में जन्म लिया।

श्री गुरु नानक देव जी के बाद उनके क्रमशः नौ उत्तराधिकारी थे, जिनका मुख्य कर्त्तव्य श्री गुरु नानक देव जी द्वारा सौंपे गये कार्य को संपूर्ण करना था। इस कार्य को अंतिम स्वरूप में आकर दशम पातशाह ने चलाया। *"पीओ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला ॥"* का सिद्धांत देकर एक नियमबद्ध रूप देते हुए 'सिक्ख' को 'सिंघ' सजाकर समयानुसार नया रूप दिया, रूहानियत के रूप दिये, *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥"* का एहसास करवाया तथा फिर अपने ही साजे-निवाजे खालसे को अपने बराबर का स्थान देकर उनसे (पांच प्यारों से) खुद भी अमृत छककर सिंघ सजे। इतिहास साक्षी है कि कैसे-कैसे गुरु साहिब ने खालसे का हुक्म मानकर दिखाया। यही तो उनकी शख़्सियत की विलक्षणता है :

वाह वाह गोबिंद सिंघ आपे गुरु चेला ॥

(वार ४१:१)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की सारी बाणी जिस ग्रंथ में दर्ज है उसको 'दसम ग्रंथ' के नाम से जाना जाता है। आप जी की सारी बाणी का रूप काव्य है। दसम ग्रंथ में आप जी की विभिन्न बाणियां शामिल हैं, जो कि अलग-अलग विषयों से सम्बंध रखती हैं। इनमें से मुख्य बाणियां-- जापु, अकाल उसतति, बचित्र नाटक, चंडी चरित्र, जफ़रनामा आदि हैं। गुरु साहिब जी की विलक्षणता इसमें है कि आप जी ने वीर रस को समय की जरूरत समझकर बाणी की रचना की। आप जी ने अपनी बाणी में संस्कृत, फारसी, अरबी, ब्रज, हिंदी तथा पंजाबी भाषाओं का प्रयोग किया; जापु साहिब के छंदों द्वारा परमात्मा के स्वरूप को बयान किया; बचित्र नाटक में अपनी स्वजीवनी तथा लड़ाइयों के बारे में ज़िक्र करके अपनी विलक्षणता कायम की। शस्त्रों के नाम से ईश्वर की स्तुति गायन की शसत्रतरनाममाला में। जफ़रनामा औरंगजेब को फारसी जुबान से लिखी हुई चिट्ठी है। इस बेमिसाल बाणी में गुरु जी ने औरंगजेब को अपना नाम बदलने की सलाह दी कि तेरे व्यक्तित्व में फरेब है इसलिए औरंगजेब नाम के साथ फरेब (छल) जंचता नहीं, मेल नहीं खाता। चंडी की वार ब्रज भाषा तथा हिंदी के सुमेल में लिखी हुई जोशीली बाणी है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी की विलक्षणता ही यह है कि आप जी ने छंदों के विभिन्न रूपों को बहुत अच्छी तरह से निभाया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत की विलक्षणता उनके शूरवीर योद्धा होने में भी है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शूरवीरता एवं

शस्त्रों के प्रति प्यार को देखकर हर किसी की जुबान पर यह आम हो गया था कि "सिक्ख भुजंगी (बच्चा) पगड़ी बांधना सीखने से पहले शस्त्र चलाना सीखता है।" गुरु जी कमाल के तीरंदाज़ थे। चमकौर साहिब तथा अनंदपुर साहिब की लड़ाई के समय आप जी की तीरंदाज़ी शिखर पर थी।

इसी तरह आप जी ने बहुत नवीन ढंग में जंगी जत्थेबंदियां कायम करके विलक्षणता पैदा की, जैसे किले बनाना खासकर पहाड़ी इलाकों में अनंदगढ़ तथा पाउंटा साहिब में किले बनाना। आप जी फौजों को दलों, गिरोहों में जत्थेबंद करके विश्वासपात्रों की देखरेख तले छोड़ देते। लड़ाई करने में आप जी कभी भी पहल नहीं करते, परंतु बचाव के समय पूरे जौहर दिखाना भी आप जी की विलक्षणता थी।

यहां ही बस नहीं, समय की मांग के अनुसार अगर किसी कुर्बानी की जरूरत पड़ी तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पिता एवं पुत्रों तक को कुर्बान कर डाला। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी, छोटे साहिबज़ादों का ज़िंदा दीवार में चिने जाना, बड़े साहिबज़ादों का जंग में स्वयं को कुर्बान कर देना, इस बात की गवाही भरती हैं। क्या यह विलक्षणता धन्यता के योग्य नहीं है? उस पर हंसकर यह कह देना :

इन पुत्रन के सीस पर वार दीए सुत चार ॥
चार मूए तो किआ हूआ जीवत कई हज़ार ॥

गुरु जी ने सिक्खों की आत्मिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक तथा भाईचारक रहित की ओर भी विशेष ध्यान दिया। इसमें कोई संदेह नहीं था कि पहले गुरु साहिबान द्वारा इस सम्बंधी किए गये प्रयत्नों में परिपक्वता तथा कठोरता लाकर दशम पातशाह ने विलक्षणता कायम की है। 'रंघरेटे, गुरु के बेटे' बने; 'कलाल, गुरु का लाल' बनाया, ताकि जात-पात के बंधनों से ऊपर उठा जाये। ऊंचा व श्रेष्ठ आचरण रखते हुए समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर किया। सांप्रदायिकता के विरुद्ध आप जी हर किसी को अपने धर्म में रहते हुए नेकी के रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते थे। तात्पर्य यह है कि आप जी ने लोकतांत्रिक राज्य चलाकर विलक्षणता पैदा की।

कितनी नम्रता थी कलगियां वाले पिता में कि सर्वगुण सम्पन्न, अद्वितीय, महाबली योद्धा होकर भी अपने सिक्खों को हुक्म दिया :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरकि कुंड महि परिहैं ॥ (बचित्र नाटक)

इसमें कोई संदेह नहीं है श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बहुपक्षीय शख़्सियत एक नया आदर्श पेश करती है।

आप जी की शख़्सियत में इंसानी गुण कमाल के थे। आप जी ऊंचे व श्रेष्ठ आचरण के मालिक थे। माफ कर देना, टूटी गांठ लेना, सबके लिए प्यार रखना, सर्दवा चढ़दी कला में रहते हुए आदर्शक गृहस्थी, अच्छे पुत्र, प्यारे पिता, मेहरबान पति, योग्य आदर्शक बनकर विलक्षण रहे।

आप जी ने परमात्मा के निर्गुण स्वरूप को बयान किया, किंतु कहीं-कहीं उसको 'प्यारा मित्र' कहकर भी संबोधन किया। एक ईश्वर की पूजा पर ज़ोर दिया। मूर्ति-पूजा के विरुद्ध रहे। *"मन ही माहि उदास"* रहने का उपदेश देते हुए गुरु साहिब ने अपने जीवन (रूपी नाटक) को रूहानियत के रंगों से भरकर खेला तथा *"निसचै कर अपनी जीत"* कर दिखाई।

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा) ❁

आधुनिक हिंदी काव्य में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का स्तुति-गान

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल संवत् १९०० वि. (लगभग १८४३ ई) से अद्यपर्यंत माना जाता है। गद्य-साहित्य-रचना की प्रधानता के कारण भले ही इसे कुछ विद्वानों ने 'गद्य काल' की संज्ञा प्रदान की हो, फिर भी लगभग १६७ वर्षों (सन् २०१० ई तक) में इसमें विभिन्न शैलियों वाले जितने काव्य-ग्रंथ रचे गए हैं, उतने पूर्ववर्ती कालों (आदि काल, भक्ति काल और रीति काल) में भी नहीं। आधुनिक काल में हिंदी कवियों का रुझान केवल पौराणिक पात्रों की ओर ही नहीं रहा बल्कि आदि काल, जिसे 'वीर-गाथा काल' भी पुकारा जाता है, के कवि चंद बरदायी की भांति हिंदू एवं सिक्ख शूरवीरों का जीवन-चरित्र प्रस्तुत करने में भी उनकी परस्पर होड़ अत्यंत प्रशंसनीय है।

लघु कविताएं : श्री मैथिलीशरण गुप्त (अगस्त, १८८६ से १२ दिसंबर, १९६४) झांसी (उ. प्र.) के 'चिरगांव' नामक ग्राम में एक कुशल व्यापारी तथा अनन्य भक्त एवं काव्य-प्रेमी सेठ रामचरण के सुपुत्र थे। श्री मैथिलीशरण गुप्त भले ही राम-भक्त थे और उनका 'साकेत' महाकाव्य इसका परिचायक है, फिर भी उनके मुक्तक काव्य 'भारत भारती' में निहित भारतवर्ष का गौरव-गान होने के कारण वे 'राष्ट्र-कवि' पुकारे जाने लगे। उन्होंने अपनी एक लघु रचना 'गोबिंद गुरु' में दशमेश पिता का महिमा-गान इस प्रकार किया है :

क्या चिंता यदि अस्त हो गया, तेग बहादुर रूपी चंद्र।
देखो, गुरु गोबिंद दिवाकर उदित, हुआ है वह निस्तंद्र।
किंतु न देख सका तत्क्षण ही, उधर घूम कर आलमगीर।
महाराष्ट्र वीरों ने उसको, कर डाला अत्यंत अधीर। . . .
चिड़ियों से मैं बाज गिराऊं, तभी कहाऊं मैं गोबिंद।
अपना कुशोभ शत्र-शोणित में, क्यों न बहाऊं मैं गोबिंद?
लाख लाख मलेछों से मेरा, एक-एक भट करे न युद्ध।
तो फिर बैरि विरुद्ध वृथा ही, किया उन्हें मैंने उद्बुद्ध।

श्री उदय भानु 'हंस' उत्तर भारत के प्रख्यात हिंदी कवि माने जाते हैं। हिसार नगर (हरियाणा) की उच्च शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत प्रोफेसर हंस ने १९९९ ई में 'संत सिपाही' शीर्षक से एक कविता रची थी। उसका मूल पाठ प्रस्तुत है :

हे युगद्रष्टा हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।
गूंज रहा है धरती-अंबर में तेरा यशगान।
बीच भंवर थी निर्बल और निराश जाति की नैया।
तूने फूंका मंत्र क्रांति का बनकर चतुर खेवैया।
ठहर न पाया तेरे सम्मुख कोई भी तूफान।हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।

**बी-१८०१, प्लाट नं. १०६, तुलसी सागर हाऊसिंग सोसाइटी, सेक्टर-२८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६, मो ८६५२५-३२३२०*

तूने पूज्य पिता को, बचपन में बलि-पथ दिखलाया।
फिर फूलों को त्याग, स्वयं कांटों को गले लगाया।
धर्म-जाति हित न्योछावर कर दी प्यारी संतान।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।
वीर 'खालसा पंथ' सजाया, बना देश की ढाल।
निकल पड़ा जन-जन के मुख से, स्वर सति सिरी अकाल।
भेदभाव को मिटा बनाया सबको समान।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।
भारत के हर कोने से ही, चुने शिष्य बलिदानी।
एक पिता के हम सब बालक, तेरी अमृत बाणी।
विश्व-प्रेम, आदर्श, ध्येय, मानवता का उत्थान।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।
निम्न वर्ग को अपनाकर, समता का दिया प्रमाण।
अपने ही शिष्यों से गुरु ने, किया अमृत का पान।
कहां मिले जननायक ऐसा, जनतंत्र विधान।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।
देता है संपूर्ण विश्व को ही इतिहास गवाही।
जग में जन्मा नहीं अभी तक, तुझ-सा 'संत-सिपाही।'
भक्ति-शक्ति संग मिला लेखनी का, अद्‌भुत वरदान।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान। . . .
हर अन्याय-विरुद्ध हर समय, तूने लड़ी लड़ाई।
नहीं रहा जब अन्य उपाय, तभी तलवार उठाई।
इसी नीति का सूत्र 'जफरनामा' प्रत्यक्ष प्रमाण।
हे युगद्रष्टा, हे युगसृष्टा, गुरु गोबिंद महान।[१]

अंग्रेजों के रसाले (British Cavalry) में भर्ती सिक्ख फौजियों की घुड़सवारी में निपुणता और उन्हें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बख़्शिश 'पांच ककारों' (कछहरा, केश, कंघा, कड़ा, और कृपाण) में सदा सुसज्जित देखकर तथा उनके पराक्रम पर मोहित होकर एम. ए. मैकालिफ, ह्यू मेक्लीऑड, जॉन मेलकोलम जैसे इतिहासकार ही नहीं बल्कि मेजर जेम्स ब्राउन तथा डब्ल्यू. एल. एम. ग्रेगर नामक अंग्रेजी शल्य चिकित्सक ने भी सिक्खों संबंधी इतिहास-ग्रंथ अंग्रेजी में लिखे। 'सिक्ख इतिहास' की खोज में अपना जीवन श्रद्धापूर्वक अर्पित करने वाले डॉ. हरीराम गुप्ता ने भी अपने विचारों की पुष्टि के लिए इन अंग्रेज इतिहासकारों को यथास्थान उद्‌धृत किया है।

राजस्थानी और पंजाबी कवि द्वारा रचित महाकाव्य : भले ही निम्नलिखित महाकाव्यों के रचयिताओं ने किसी विशेष इतिहासकार को अपने कथा-स्रोत का प्रेरक न माना हो, फिर भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बारे में इनकी सर्वसम्मति सर्वत्र झलकती है।

(क) शलाका पुरुष श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी :[२] प्रस्तुत महाकाव्य के प्रणेता, राजस्थान के निवासी श्री माणकचंद रामपुरिया ७६ वर्षीय विद्वान हैं। सन् १९९९ में प्रकाशित उनकी यह ६१वीं कृति है जब 'खालसा पंथ' की त्रैशताब्दी मनाई गई थी। इस महाकाव्य में कुल २१ सर्ग हैं। पहले पांच सर्गों में लेखक महोदय ने सिक्ख धर्म के प्रथम पांच गुरु साहिबान का परिचय देकर शेष में नवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब से लेकर दशम पातशाह जी के जीवन की मुख्य घटनाओं को आलोकित किया है। आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी के बारे में कवि ने लिखा है:

जगी सभी में अपने भाई के शोणित की प्यास।
मुगल काल की राजनीति का, साक्षी है इतिहास। . . .
घोर कलह में जाग रहा था, जात-पात का भेद।

सभी ओर दिखती केवल, निराशा-खेद। . . .
ऐसे में गुरु नानक ने आ दिया प्रकाश नवीन।
दलित वर्ग भी उच्चासन पर हुए स्वयं आसीन।
(पृष्ठ ९)

सिक्ख धर्म में प्रचलित समूची धार्मिक शब्दावली को गुरु नानक साहिब की देन बताने के बाद लेखक महोदय ने केवल दो पदों में श्री गुरु अंगद देव जी द्वारा 'गुरबाणी' के लिए 'लिपि नव गुरमुख' तथा 'लंगर' की नई व्यवस्था चलाने की बात कह कर श्री गुरु अमरदास जी को 'सती-प्रथा' रोकने वाले श्री गुरु रामदास जी द्वारा श्री अमृतसर पावन नगर बसाने और दो नए सरोवरों के निर्माण की चर्चा करके पंचम पातशाह जी का गुणगान इस प्रकार किया है :

पंचम अरजन देव हुए गुरु, जन-जन के सुखदाता।
तीर्थ बनाया अमृतसर को, हरिमंदर निर्माता।
पूज्य पिता का शेष बचा जो, कार्य किया था पूरा।
हाथ लगाया जिस मंदिर में, छोड़ा नहीं अधूरा।
आदि ग्रंथ में हुई संकलित, गुरुओं की सब 'बाणी'।
जहां निहित है सिक्ख धर्म की, बातें बड़ी सुहानी।
मुगलों के अत्याचारों से, डिगे न पथ से पल भर।
हुए शहीद धर्म की खातिर, अपनी ज्योति जगाकर। (पृष्ठ २५-२६)

तद्नंतर सर्ग छः के आरंभिक दस पदों के पश्चात् श्री गुरु तेग बहादर साहिब की आसाम-यात्रा का उल्लेख करके पटना साहिब में उन्हें दिसंबर, सन् १६६६ में पुत्र-रत्न की प्राप्ति होने और उसका नाम 'गोबिंद राय' रखने के साथ-साथ भावी गुणों का उल्लेख इस प्रकार किया गया है :

नाम पड़ा फिर गोबिंद राय था।
सब प्राणी का जो सहाय था।
अद्भुत क्षण आया था भू पर।
दिग दिगंत दिखता था भास्वर। . . .
लगता था सब गुरु के पद पर।
होने को पल-पल न्योछावर।
उतर पड़े वसुधा पर सत्वर।
बन कर दीप धरा के सुंदर।
धन्य ज्योति को नमन हमारा।
धरती ने ही तुम्हें पुकारा।
नमन तुम्हें शतबार भुवन का।
पावन सात्विक जन-जीवन का।
(पृष्ठ ३३-३४)

यही नहीं, सातवें सर्ग के १९ पदों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जन्म की खुशियों के माहौल में कोहराम निवासी सैय्यद भीखम (भीखण) शाह ने गुरु जी की जो परीक्षा ली वह भावी मानवीयता के लिए आवश्यक, मानो पूर्व सूचना थी। एतदर्थ महामहोपाध्याय रामपुरिया जी का कथन प्रस्तुत है :

देखा एक फकीर शाह ने, ज्योति पुंज लहराता।
भीखम शाह नाम था उसका, मुसलमान कहलाता।
देख गगन में ज्योति आलौकिक, मन ही मन मुस्काया।
उसी नूर की दिशा-शिखा में, उसने पांव बढ़ाया।
आया पटना शिशु के सम्मुख, बैठा ध्यान लगा के।
एक पात्र में दूध, दूसरे में पानी, भर ला के।
दुग्ध पात्र का स्पर्श करेगा, मुसलमान का हामी।
जल का पात्र छुए तो समझो, है हिंदू अनुगामी। . . .

किंतु दिव्य बालक ने, दोनों, पर ही हाथ लगाया।
एक साथ दोनों पात्रों पर, अपना प्यार दिखाया। . . .
"धन्य-धन्य! यह महापुरुष है, इस धरती पर आया।
हिंदू-मुस्लिम दोनों को है, इसकी बड़ी जरूरत।
लोग करेंगे इन मानव की, सब दिन यहां इबादत।" *(पृष्ठ ३७-३९)*

मुस्लिम फकीर की यह अंत:दृष्टि और आशीर्वचन सचमुच श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन में चिन्हित होने की बात कवि महोदय ने पचासों जगह की है तथा इसे पैतृक संस्कार बताया है, यथा :

तेग बहादुर सा ही इनमें, तेज दिखाई पड़ता।
राष्ट्र-धर्म के जगने का ही, गीत सुनाई पड़ता। . . .
होनहार विरवा के जैसे, होते पत्ते चिकने।
गहन तत्व ज्यों हाट-बाट में, आते कभी न बिकने।
उसी तरह 'गोबिंद' स्वयं थे, रूप विमल मर्यादित।
हुआ न इनका पंथ कभी भी, विघ्न-मेह आच्छादित। *(पृष्ठ ४६-४७)*

धर्म-परिवर्तन के लिए कशमीरी पंडितों को पीड़ित करने वाले मुगल अधिकारीगण की शिकायत करने जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब गए तो बदले में उनको धर्मांध मुगल बादशाह औरंगजेब ने बलि-वेदी पर चढ़ा दिया। दिल्ली-गमन से पूर्व ही मुगल शासक की क्रूरता का एहसास करके वे अपने बाल-पुत्र को गुरगद्दी प्रदान करने का एलान कर गए थे। इस प्रसंग को 'रामपुरिया जी' ने अपनी काव्य-कला द्वारा इस प्रकार उकेरा है :

औरंगजेब बड़ा था पापी, मानवता का द्रोही।
क्रूर-कुटिल और अत्याचारी, पाप-पंथ आरोही।
चाह रहा था कोई हिंदू, शेष नहीं रह जाए।
जो भी व्यक्ति यहां जीवित हो, मुसलमान कहलाए। . . .
तेग बहादर की सब बातें सुनकर यह अभिमानी।
बोला--उसे पकड़ कर लाओ, देखें उसकी बाणी।
गद्दी दे गोबिंद राय को, चले वे वहां से आगे।
तेग बहादर कभी न क्षण, सत्य धर्म को त्यागे।
मुगलों ने फिर आगे चलकर, बंदी उन्हें बनाया।
दिल्ली के चौराहे पर ही, फांसी उन्हें चढ़ाया।
(पृष्ठ ५७-५८)

(ऐतिहासिक स्रोत गुरु जी के शीश को काटे जाना बताते हैं -संपादक)

इस दर्दनाक घटना से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी किंचित भी विचलित नहीं हुए, बल्कि उन्होंने परस्पर भेदभाव में फंसे लोगों को संगठित करने का निश्चय कर लिया। उनके इस मंगलकारी उद्देश्य में गुरु नानक साहिब का वरद-हस्त था जो कि अपने जीवन-काल में केवल भारत देश में ही नहीं प्रत्युत लंका, तिब्बत, अफगानिस्तान एवं मध्य एशिया तक भावात्मक एकता को दृढ़मूल कर आए थे। एतदर्थ कवि की मधुर बाणी सुनिए :

सोचा गुरू ने सबसे पहले, हम सब होवें एक।
होकर ही संघटित सभी की, निभ सकती है टेक। *(पृष्ठ ६४)*
दूर-दूर तक नानक जी ने, पाया था विस्तार।
इनके पोषक सिक्ख सबल थे, करते श्रद्धा प्यार। *(पृष्ठ ५६)*

भरी सभा में पांच प्यारों का चयन करते समय गुरु जी ने भारत के क्षेत्र-विशेष और जातिगत ऊंच-नीच के भेदभाव को ताक पर रख दिया। उन्होंने लौह-पात्र में भरे जल में 'असि' (कृपाण) घुमाकर पांच प्यारों को अमृत-पान करवा कर 'खालसा' कहकर आदर-मान दिया।

भक्ति और शक्ति के समन्वित रूप 'खालसा पंथ' के अनुगामियों को कलगीधर पातशाह ने जो शिक्षा प्रदान की उसका ब्यौरा इस महाकाव्य में दर्शनीय है, यथा :

सच्चा धर्म यही है सब में, निर्मल भाव जगाओ।
ऊंच-नीच का भेद मिटाकर, सबको गले लगाओ।
नर-नारी सब एक सदृश्य हैं, भेद न उनमें लाओ।
कन्या-हंता जन को त्यागो, उसको दूर भगाओ।
केश बढ़ाओ, कंघा रखो, ग्रहण कड़ा भी कर लो।
कच्छा पहनो और कमर में तुम, कृपाण भी धर लो।*
धूम्रपान सब नशे हटाओ, कभी न इनको लेना।
इनको लेकर सबको अपना, स्वास्थ्य पड़ेगा खोना। . . .
अपने को सब 'सिंघ' कहेंगे, प्रेम भरा अभिनंदन।
एक तरह से सभी करेंगे, आपस में अभिवादन।
(वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह)। *(पृष्ठ ९७-९८)*

लेखक ने अपने महाकाव्य का अंत भी इसी अभिवादन से किया है। काशी के 'केशवदास' नामक पंडित ने जब गुरु साहिब के पास आकर होम करके चंडी-दर्शन की विधि बताई तो दशम पातशाह जी ने उसे यह कहकर निरुत्तर कर दिया :

कहा खींच तलवार हाथ में, शक्ति इसे ही मानो।
यही धर्म-रक्षक अधर्म का, नाश करेगी जानो।
अपने और पराये सबकी, एक हुई पहचान।
दुश्मन के सैनिक-गण का भी, किया बड़ा कल्याण। *(पृष्ठ ११५)*

भाई घनईया जी के सेवा-भाव के कारण उन्हें 'सेवा-पंथी' की उपमा देने के बाद कवि ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संग्रह की बात इस प्रकार की है :

आओ, 'सेवा-पंथी' जन को, हम भी करें प्रणाम।
धन्य हुआ इनकी सेवा से, गुरु का उज्ज्वल नाम।
गुरु के प्यारे भक्तों ने ही, सदा सजाया पंथ।
'गुरु बाणी' का संग्रह आया, पावन 'साहिब ग्रंथ'।
(पृष्ठ ११७)

औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् बहादुर शाह जफर दिल्ली का बादशाह बना जो बड़े शांत स्वभाव का था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ उसकी मैत्री थी और उन्हीं दिनों वे महाराष्ट्र स्थित 'नांदेड़' (साहिब) में गोदावरी नदी के तट पर कुटी (कुटिया) बनाकर रहने लगे। वहां पर भी गुरु साहिब के महान व्यक्तित्व की खबर कानो-कान फैल गई और दूरस्थ स्थानों से भक्त-जन उनके दर्शनार्थ आने लगे। बड़े भक्ति-भाव से महोपाध्याय जी ने तत्संबंधी चित्र इस प्रकार पेश किया है :

गोदावरी के तट पर गुरू ने, अपनी कुटी बनायी थी।
वहीं शांत एकांत क्षेत्र में, सात्विक जोत जगायी थी।
दूर-दूर से भक्त यहां पर, आते शिक्षा पाने को।
गुरू के सम्मुख ज्ञान-पिपासा, अपनी तनिक मिटाने को।
शांत धरा थी, शांत गगन था, निर्मल शांति छिटकती थी।
दिशा-दिशा में प्रकृति सुहानी, खिल-खिल कर मुस्काती थी।

किंतु ऐसे शांत वातावरण का दुरुपयोग एक पठान ने किया, जिसे गुरु साहिब का बादशाह

शाह जफर के साथ मैत्री-भाव खटक रहा था। मौका ताक कर रात्रि में उस पठान ने खंजर से दो बार गुरु साहिब पर वार किया। यद्यपि गुरु साहिब ने तुरंत तेग निकाल कर उसका काम तमाम कर दिया, किंतु गुरु साहिब का घाव चार दिन तक न भरा। अपना ज्योति-जोत समाना समीप जानकर गुरु साहिब तथा उनके शिष्यों में पहले प्रश्नोत्तर हुआ। गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी प्रदान करके सिक्ख धर्म की पूर्ववत् चली आ रही देहधारी गुरु-परंपरा को विराम दे दिया। इस संबंध में कवि की शब्द-बानगी देखिए :

मरते दम तक कहा कि करना मेरी खातिर शोक नहीं।
मैं तो सब दिन सबको दूंगा, जीवन का आलोक यहीं।
जहां-जहां भी पांच भक्त-जन, मुझको यहां बुलायेंगे।
सच कहता हूं वहां-वहां पर, वे सब मुझको पायेंगे।
कुछ भक्तों ने पूछा- गुरुवर! शक्ति कहां पर न्यारी है?
नानक की गद्दी का, बोलें, कौन यहां अधिकारी है?
बोले गुरूवर : 'शबद' वही, जो गुरू-बाणी में आता है। . . .
जो सत्कर्म करेगा उस पर, कृपा करेंगे भगवन्।
धर्म-भाव अपना कर मानव, सफल करेगा जीवन। (पृष्ठ ७६)

इस प्रकार कवि महोदय ने गुरु साहिब की परंपरागत सेवा-भावना और निर्गुण-भक्ति को प्रकारांतर से दृढ़ाया है। पहाड़ी राजाओं के भयग्रस्त होने पर मुगलों से सांठ-गांठ के कारण जब राजपूत नरेशों की सेना ने श्री अनंदपुर साहिब को घेर लिया तो किला खाली करवाने के बाद सरसा नदी के किनारे हुए परिवार-विछोड़े में गुरु-माता अपने पोतों के साथ अलग हो गईं। इसका भेद एक विप्र ने सरहिंद के नवाब को दे दिया और उसने गुरु साहिब के साहिबजादों को धर्म-परिवर्तन के लिए कहा। इस प्रश्नोत्तर के बाद जो दुखद घटना घटी उसे कवि महोदय ने निम्नलिखित पदों में प्रस्तुत किया है :

और इधर का हाल कि जिससे, लज्जा होती लज्जित।
एक विप्र के धोखे से, धरती भी है अपमानित।
उसके कारण गुरू के बच्चे, हाथ मुगल के आए। . . .
वह नवाब सरहिंद राज्य का, अतिशय अत्याचारी।
कहा--यहां इसलाम धर्म है, सब धर्मों से भारी।
करो स्वीकार नहीं तो, मौत खड़ी है सम्मुख।
सात बरस का बालक बोला, दृढ़ता से अभिमुख।
हम गोबिंद सिंघ के बच्चे, कभी न यह कर सकते।
नहीं झुके हैं रिपु के आगे, झुका नहीं सर सकते।
मेरे दादा बलिदानी थे, मैं भी वही करूंगा।
दुष्ट मुगल शासक के सम्मुख, तिल भर नहीं डरूंगा।
सुन कर क्रोधित उस नवाब ने, आग-बबूला होकर।
कहा कि चुन दो इन दोनों को, दीवारों में सत्वर। (पृष्ठ १२२-१२३)

भले ही लेखक ने फतेहगढ़ साहिब नामक स्थल पर शहीद हुए गुरु साहिब के साहिबजादों- बाबा जोरावर सिंघ तथा बाबा फतहि सिंघ का नामोल्लेख नहीं किया है अथवा चमकौर साहिब की गढ़ी में दो बड़े साहिबजादों के वीरतापूर्ण

बलिदान की चर्चा नहीं की है, फिर भी उसने मुसलमान अत्याचारियों के विरुद्ध युद्ध में लड़ने वाले दशम पातशाह के सैनिकों तथा उनके विरोधियों के घायल होने पर भाई घनईया जी द्वारा भेदभाव रहित शुश्रूषा का वर्णन बड़ी भावभीनी शब्दावली में किया है, यथा :

गाजर-मूली जैसे बिखरा, लाशों का था ढेर।
कटे-गिरे सब चीख रहे थे, किस्मत का था फेर।
इसी समय कन्हैया (घनईया) भाई, कोई सिक्ख उदार।
आया घायल सैनिक दल में, करने को उपचार। . . .
उसका पार्थिव रूप यहां वह, हम सब को दिखलाता है।
जब तक आप चलेंगे पथ पर, सेवा-व्रत अपनायेंगे।
यही 'ग्रंथ साहिब जी' सबको, सच्ची राह दिखायेंगे। (पृष्ठ १२९-१३०)

अंतिम सर्ग (संख्या इक्कीस) में सिक्ख धार्मिक शब्दावली में पारंगत रामपुरिया जी ने कलगीधर पातशाह जी के व्यक्तित्व का मूल्यांकन बड़ी भावभीनी शब्दावली में इस प्रकार किया है:

सब धर्मों को एक समझ कर, सबको समुचित मान दिया।
मानव को 'सम्पूर्ण' बनाकर, जीवन का उत्थान किया।
ब्राह्मण-क्षत्री-वैश्य-शूद्र-सा, कार्य मनुज कर सकता है।
एक मनुज में सब कुछ करने की, 'पूर्ण मनुज' में क्षमता है। . . .
जन-सेवा करनी है सबको, 'लंगर' सदा सजाना है।
जो कुछ है सब ईश्वर का है, इसे बांट कर खाना है। . . .
मानवता हो कभी न पीड़ित, तुमने उज्जवल ज्ञान दिया।
सेवा-व्रत का मंत्र आलौकिक, तुमने सांझा विहान दिया।
नये 'खालसा-पंथ' पर सबको, तुमने चलना सिखलाया।
'वाहिगुरू जी' कह अभिवादन का, नूतन क्रम बतलाया।
राष्ट्र-प्रेम को धर्म-भाव के, साथ जोड़ कर खड़ा किया।
मानवता के गुण को तुमने, देवों से भी बड़ा किया। . . .
हिंदू-मुस्लिम की खाई को, गुरु ने पाटा, प्रेम बढ़ा।
उच्चादर्शों को अपनाया, सात्विकता का नेम बढ़ा।
धन्य-धन्य गुरू! जिनकी बाणी, पथ-प्रदर्शक स्वयं बनी।
शुद्ध आचरण बल से पावन, कर्म-भावना अहं बनी।
युगों-युगों के बाद धरा पर, कोई ऐसा आता है।
ऐसे जग-उद्धारक को ही, जन-जन शीश निवाता है।
गुरू गोबिंद तुम्हीं स्मृति में, हम भी अर्घ्य चढ़ाते हैं।
अमर शलाका पुरुष! तुम्हारी, जय-जय हम दोहराते हैं।
(वाहिगुरू जी का खालसा। वाहिगुरू जी की फतह।) (पृष्ठ १३२-१३५)

राजस्थान निवासी कवि का सिक्ख धर्म संबंधी ज्ञान सचमुच स्तुत्य है। विशेषत: 'गुरु' शब्द में पंजाबीपन की छाप पूरी तरह झलकती है, भले ही रचनाकार महोपाध्याय माणक चंद रामपुरिया जी पंजाब में जन्मे न हों। हिंदी में

'गुरु' शब्द के दोनों अक्षरों ('ग' एवं 'र') में उकारांत (लघु 'उ' की मात्रा) है; जबकि इस शब्द का द्वितीय अक्षर 'र' पंजाबी भाषा में सदैव 'ऊकारांत' (दीर्घ 'ऊ' की मात्रा) सहित लिखा जाता है।

(ख) दस बाती में एक ज्योति[३] *:* श्री गुरु ग्रंथ साहिब के चार सौ वर्षीय प्रथम प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में श्री हर्ष कुमार 'हर्ष' ने हिंदी काव्य-जगत को 'दस बाती में एक ज्योति' शीर्षक वाला एक महाकाव्य प्रेमपूर्वक भेंट किया है। बटाला (पंजाब) में सन् १९४९ में जन्मे हर्ष जी निजी व्यवसाय में रहते हुए भी तन-मन से साहित्य में व्यस्त रहते तथा 'कलम की कमाई' में भी पूर्ण आस्था रखते हैं। इस ग्रंथ के 'दशम सोपान' में कवि महोदय ने दशम पातशाह का जीवन-चरित काव्यमयी भाषा में विस्तार सहित वर्णन किया है। संयोग की बात देखिए कि नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब के बलिदान के समय उनके सपूत और गुरु-पदवी के अधिकारी श्री गुरु गोबिंद साहिब जी की अवस्था भी नौ वर्ष थी। इसकी ओर संकेत करते हुए कवि ने उस समय की राजनैतिक स्थिति के साथ-साथ सिक्ख गुरु साहिबान के पराक्रम का उल्लेख बड़ी सुंदर भाषा में किया है, यथा :

यह कुर्बानी नवम गुरु की, हिंदोस्तां को जोड़ गई थी।
हिंदू, गुरुसिक्ख भड़क उठे थे, इक चिंगारी छोड़ गई थी। . . .
नौ वर्ष का बाल गोबिंद सिंघ, अनुभव दो सौ छः सालों का।
वही जोत थी कर्म-दृष्टि भी, अंतर भिन्न-भिन्न कालों का।
बाबा-बाबर के द्वै दर्शन, आशा और निराशा भरते,
जुल्म समय के सीस चढ़ गया, युग था तलवारों-ढालों का।
समय-समय पर मुगल राज ने, गुरुओं का प्रतिकार किया था।
गुरु अरजन ने पलटी काया, हरिगोबिंद प्रभाव दिया था।
संत-भक्त सब बने सिपाही, अष्टम गुरु ने ऐंठ न मानी,
नवम गुरु बलिदानी सपना, दशम-पिता साकार किया था।
दाना से मरदाना करके, गुरु नानक ने दिखलाया था।
'शब्द-ज्ञान' का सीमित घेरा, विस्तृत करके समझाया था।
'न को हिंदू नहीं मुसलमान', 'तेरा-मेरा' बोल न बोलो,
दशम गुरु गोबिंद सिंघ जी ने, 'बंदा' एक वीर बनाया था। *(पृष्ठ ३११-३१२)*

यद्यपि पंजाब से सटे पहाड़ी क्षेत्र के हिंदू राजा औरंगजेब के पिट्ठू बनकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का विरोध करने लगे थे, फिर भी गुरु साहिब ने क्षेत्र-विशेष के वैमनस्यपूर्ण वातावरण को मन में कदापि नहीं पाला था। प्रत्युत अधिकांश पहाड़ी राजाओं में रोटी-बेटी के कारण परस्पर विरोध था। अत: उनमें से कहिलूर के राजा भीमचंद के निमंत्रण पर गुरु साहिब मुगल सेनापति मियां खां के खिलाफ नादौन के युद्ध में सम्मिलित हुए। यही नहीं, गुलेर के राजा गोपाल की सहायता हेतु गुरु साहिब ने मुगल सेना से युद्ध किया, जो इतिहास में 'हुसैनी युद्ध' के नाम से विख्यात है। इसकी चर्चा गुरु साहिब की बाणी 'बचित्र नाटक' में भी विद्यमान है। इनमें से एक प्रसंग को कवि हर्ष कुमार ने इस प्रकार प्रस्तुत किया है तथा

पहाड़ी स्थल पर गुरु साहिब की गौरव गरिमा 'सिक्ख गुरुद्वारा साहिब' के रूप में चिरंतन होने का भी प्रमाण दिया है, यथा :

'सिरमौर' के मेदनी राजा के, कहने पर गुरु गोबिंद सिंघ।
पांच सौ सैनिक लेकर धाय, नाहन पहुंच गुरु गोबिंद सिंघ।
अनंदपुरी सुरक्षा घेरा, आत्मीय-जन सिखों पर छोड़,
यमुना कूल विचरते-रमते, डेरा डाला गुरु गोबिंद सिंघ।
रण में कुशल गुणी व ज्ञानी, लोगों का सत्कार किया था।
दबी-कुचली हिंदू जाति को, पुन: सिंहत्व प्रदान किया था। . . .
यमुना के तट नगर पाउंटा, ऐसा गुरु के मन को भाया। . .
शौर्यपूर्ण साहित्य रच-रचा, कवि-लेखक दरबार सजाया। (पृष्ठ ३१४-३१५)

पहाड़ी राजाओं के आत्म-निवेदन पर उनके पक्षधर बने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की युद्ध-कला का उल्लेख करने के पश्चात् लेखक ने गुरु साहिब के शौर्यपूर्ण प्रचार का चित्रण इस प्रकार किया है, यथा :

धीरे-धीरे अलग पंथ हित, गुरु साहिब ने की तैयारी।
ढाल विकल्प 'कड़ा' पहनाया, कहा 'केश' हैं शान हमारी।
धोती दुश्मन तत्परता की, पर्दादार 'कछहिरा' पहनो। . . .
'रहित मर्यादा' का सिक्खों में, प्रचलन और प्रसार जानकर।
कड़ा, कछहिरा, केश अखंडित, शस्त्रबद्ध साकार मानकर।
"धरम चलावन संत उबारन दुसट सभन को मूल उपारन ॥"
सिख-स्वरूप का कर्म आलौकिक, कह डाला आधार जान कर।
सब गुरुजन ने शिष्य जगत को, 'निरभउ' और 'निरवैर' बनाया।
श्रम-सेवा संग भक्ति-भावना, देश-धर्म बलिदान सिखाया।
धर्म-क्षेत्र में, युद्ध-क्षेत्र में, कटना, छिलना, तत्पर रहना,
गुरु गोबिंद ने धर्म-नीति को, राजनीति अनुरूप बनाया। (पृष्ठ ३२०-३२१)

पंजाबी भाषा, श्री गुरु ग्रंथ साहिब, दशम ग्रंथ तथा अपने से पूर्ववर्ती पंजाबी कवियों- भाई सुक्खा सिंघ के 'गुर बिलास' एवं भाई संतोख सिंघ के 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की तर्ज पर कवि हर्ष ने इन सभी ग्रंथों में विद्यमान गुरु-महिमा विषयक पदावली को उद्धृत करके अपने श्रद्धापूर्वक मनोभाव प्रकट किए हैं। यही नहीं, उसने इन गुरमति-प्रेमी कवियों की भांति सर्वत्र गुरु साहिबान के जीवन-प्रसंगों को तिथि-परक भी बनाया है। 'खालसा पंथ' की स्थापना की तैयारी का वर्णन कवि की बाणी में ही सुनिए :

गुरु गोबिंद ने चार चुफेरे, लिखे 'हुकमनामे' भिजवाए।
वैसाखी पर कुल सिक्ख संगत, गुरु-दरबार अनंदपुर आए।
सन् सोलह सौ निनानवे का, तीस मार्च का दिवस सुहाना,
चारों ओर सुगंधी फैली, प्रकृति ने भी फूल खिलाए। (पृष्ठ ३२२)

गुरु साहिब द्वारा पांच प्यारों का चयन करने, उन्हें 'खंडे-बाटे' का अमृत छकाने तथा स्वयं उनसे अमृत छकने एवं पांच ककार

सजाने की शिक्षा का उल्लेख करने के पश्चात श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विरुद्ध जुटे पहाड़ी राजाओं और मुगलों की मिलीभुगत के कारण अनंदपुर साहिब छोड़ने का वर्णन कवि के किया है। 'चमकौर की गढ़ी' में गुरु साहिब के सुपुत्रों-साहिबजादा अजीत सिंघ और साहिबजादा जुझार सिंघ की शहीदी के साथ-साथ सरहिंद के नवाब वजीर खां द्वारा उनके छोटे दो सुपुत्रों--साहिबजादा ज़ोरावर सिंघ और साहिबजादा फ़तहि सिंघ को जिंदा दीवार में चिनाने संबंधी घटनाओं का भी चित्रण किया गया है। नांदेड़ साहिब में दशमेश पिता के ज्योति-जोत समाने के समय उनके दिव्य संदेश के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब को गुरगद्दी प्रदान करने का प्रसंग कवि ने विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया है, यथा :

स्वयं गुरु गोबिंद सिंघ जी ने, 'गुरु ग्रंथ' प्रकाश किया था।
सीस झुकाया, चंवर ढुलाया, दंडवत हो प्रणाम किया था।
'गुरु ग्रंथ' को 'गुरु' मान कर, 'दस बाती में एक ज्योति',
झगड़ा उत्पन्न मत हो पीछे, तभी मामला साफ किया था।
'खालसा मेरो रूप है खास', कहते गुरमुख रूप बताया।
ज्यों नानक ने अंगद माना, गोबिंद ने खालसा सजाया।
प्रकट रूप कह 'गुरु ग्रंथ' को, दस गुरुओं की काया मानी,
मुझसे जो बतियाना चाहे, करे 'ग्रंथ' का पाठ सुझाया। (पृष्ठ ३४७-४८)

तद्नंतर कवि ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के विशाल आकारी 'दसम ग्रंथ' में संकलित उनकी बाणियों की विषय-वस्तु एवं काव्य-सौष्ठव का उल्लेख संक्षिप्त रूप में किया है, किन्तु श्री हर्ष कुमार हर्ष के अधिकतर कथन ऐतिहासिक कसौटी पर खरे नहीं उतरते। फिर भी कवि के वृत्तांतों में ऐतिहासिकता तथा तिथि-परकता प्रशंसनीय है और उनका यह कथन उपर्युक्त कमी को दूर करता है :

--गुरु साहिब ने गुरबाणी का, सिखलाया था शुद्ध उच्चारण।
हाथ पवित्र वे माने जो, सेवा-कर्म करें संचारण।
--सोलह सौ अठानवे सन् में, 'दशम ग्रंथ' संपादित कीना।
छुटपुट कुछ रचनाएं (बाणी) छूटीं, फिर भी असुरक्षित ही चीन्हा।
कुछ लेखन 'सरसा' में डूबा, आक्रमणों की भेंट चढ़ा कुछ,
मनी सिंघ से विद्वानों ने, फिर से नया कलेवर दीना। (पृष्ठ ३५६)

इस प्रकार उत्तर-पश्चिम भारत में जन्मे-पले उपर्युक्त चार कवियों की कृतियों से हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि 'भक्ति और शक्ति' के संकल्पदाता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का महान व्यक्तित्व सर्वाकर्षक है।

पाद-टिप्पणियां :

१. 'पंजाब सौरभ', गुरु गोबिंद सिंघ विशेषांक, जनवरी १९८७, भाषा विभाग, पंजाब सरकार, पटियाला से उद्धृत।

२. कलासन प्रकाशन, कल्याणी भवन, बीकानेर (राजस्थान), सन् १९९९

३. हिंदी भाषा सम्मेलन : ७८१, एस. एस. टी. नगर, पटियाला द्वारा सन् २००४ में प्रकाशित।



श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज

*-बीबी जसप्रीत कौर**

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म २३ पौष, सं. १७२३ को पटना साहिब (बिहार) में माता गुजरी जी की पावन कोख से हुआ। आप जी के पिता जी श्री गुरु तेग बहादर साहिब थे। आपके चार साहिबज़ादे-- बाबा अजीत सिंघ, बाबा जुझार सिंघ, बाबा ज़ोरावर सिंघ तथा बाबा फ़तहि सिंघ थे।

गुरु जी का कमाल था कि उन्होंने सिक्खों के मन में जुल्म का डटकर मुकाबला करने का उत्साह पैदा किया। कहा जाता है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एलान किया कि वे एक ऐसे पंथ की साजना करेंगे जो जाबिर शासकों के सामने झुकेगा नहीं बल्कि उनका डटकर सामना करेगा। चमकौर साहिब में साहिबज़ादा अजीत सिंघ ने शत्रु-सेना का डटकर सामना किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक सिक्ख की ताकत सवा लाख सिपाहियों के बराबर मानी थी और ऐसा चमकौर की जंग में मूर्तिमान भी हुआ था :

सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

इतिहास साक्षी है कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के बाद उठी चिंगारी ने ऐसी ज्वाला का रूप धारण किया कि औरंगज़ेब का सिंहासन तक हिल गया। गुरु साहिब की शहीदी से सबक लेकर हर मनुष्य के दिल में जुल्म के खिलाफ लड़ने की शक्ति पैदा हो गई। इसी शक्ति का नमूना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समय मुगल साम्राज्य के खिलाफ हुए युद्धों में देखने को मिला। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने धर्म को उबारने के लिए दूसरा रास्ता चुना। उन्होंने खुद शस्त्र धारण कर लिए और सिक्खों को हुक्म दिया कि वे भी शस्त्र-चलाने में प्रवीण हों। गुरु जी ने अपने सिक्खों को यह भी उपदेश दिया कि वे आशावादी जीवन बिताएं।

गुरु जी की सेना दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। गुरु जी ने एक नगारा (नगाड़ा) बनवाया, जिसका नाम 'रणजीत नगारा' रखा गया।

गुरु जी ने औरंगज़ेब को लिखे गए 'जफ़रनामा' में लिखा है :

चु कार अज़ हमह हीलते दर गुज़शत ॥
हलालस्सत बुरदन ब शमशीर दसत ॥

अर्थात् जब सभी कोशिशें बेकार हो जाएं और दुश्मन अत्याचार करना बंद न करे तब तेग उठा लेना कोई गुनाह नहीं है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा खालसा पंथ की सृजना की प्रक्रिया से स्पष्ट है कि खालसा पंथ में कुर्बानी का बड़ा महत्त्व है। कुर्बानी का आह्वान करते हुए श्री गुरु नानक देव जी ने इस संकल्प की आधारशिला रख दी थी :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ *(पन्ना १४१२)*

सिक्ख धर्म में शुभ कार्य के लिए किसी भी प्रकार के धर्म-युद्ध के लिए तथा शहादत देने के लिए सदैव तैयार रहने का आदेश है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रण-भूमि के विजयी सेनानी थे। जिस स्थान पर आपके पांव पड़ते शत्रु दुम

**३२/२०, गली बोहड़ वाली, न्यू गुरनाम नगर, सुलतानविंड रोड, श्री अमृतसर-१४३००१*

दबाकर भाग जाते। बलिदान तो जैसे स्वयं सिमिटकर गुरु जी में समा गया था।

श्री गुरु नानक साहिब द्वारा उच्चारित *"सिरु दीजै काणि न कीजै"* लोक प्रसिद्ध उक्ति को आपने अक्षरश: सिद्ध कर दिखाया। साहस आपमें कूट-कूटकर भरा था। दृढ़ता और प्रतिज्ञा की आप मिसाल थे। आपने शक्तिहीन लोगों में बल का संचार किया और उन्हें कर्त्तव्य पर आरूढ़ किया। गुरु जी १७०८ ई. में ज्योति-जोत समा गए। 

कविताएं

अटल नियम

चाहे जोड़ो लाख करोड़, चाहे बिठाओ जितने जोड़,
कुछ तो अटल नियम हैं प्यारे!
कफ़न में नहीं होती जेब प्यारे!
यहां की दमड़ी, शरीर की चमड़ी,
नहीं जा सकती साथ हमारे!
किस चीज का तू करता गरूर?
स्वार्थ हेतु करता जी हज़ूर।
सच का तू नहीं देता साथ, याद रख उसका इंसाफ!
झूठ-फरेब में भूला जिसको,
उसकी लाठी में नहीं आवाज़!
जिस माया का तू करता मान,
उसको तू छाया ही जान!
कल थी किसी की, आज है तेरी,
अगले क्षण तेरी न मेरी!
ईश्वर बड़ा अनोखा बाज़ीगर,
उसकी मौज है बड़ी निराली।
राव को रंक, रंक को राव,
किसी को भर दे, किसी को ख़ाली।
कर बंदगी, रह उसके भय में,
तभी तू निर्भय हो पायेगा!
दुनिया का भय, माया का मोह,
कायर तुझे बनाएगा!
कर शुक्राना, बन संतोषी, इसी में चैन-सुख पायेगा!
ज्यादा तृष्णा से क्या होए, सब यहीं धरा रह जाएगा!

उसके गणित के अजब हैं अंक

आगे कुछ पीछे कुछ और। तन से उजले मन के चोर।
बाहर से हैं शहद घोलते। अंदर से हैं ज़हर छोड़ते।
अमीरों के आगे जी हजूरी। गरीब की रख लेते मज़दूरी।
मेहनत किसी की रब नहीं रखता। हमको किसने हक दिया इसका?
उसकी लाठी में नहीं कोई आवाज़। कब कर दे वह क्या करामात?
उसके गणित के अजब हैं अंक। राव को कब कर दे रंक?
झोपड़ी से वह महल बनाए। महलों को खाक में मिलाए।
वह परमेश्वर घट-घट में समाया। उसकी अजब अनोखी माया।
उसके भय में जो रहता है। दुनिया से वह निर्भय रहता है।
आडंबरों में वह नहीं फिर फंसता। सत्य मार्ग पर है बस चलता।
नेक नियति जिसका आधार। उसी का समझो बेड़ा पार।
पत्थरों में है जीव उपजाता। उनको भी आहार पहुंचाता।
उसकी कुदरत है बेअंत। उसकी रहमतों का नहीं कोई अंत।
कर बंदगी छोड़ मैं मेरी। उसी ने रक्षा करनी है तेरी।

-डॉ. मनजीत कौर, २/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३ 

जपु जी साहिब में सृष्टि-रचना का सिद्धांत

*-डॉ. जसविंदर कौर**

सृष्टि-रचना का कार्य मानव जाति के हर धर्म का मुख्य विषय तथा आधार रहा है। हर विचारधारा ने अपने युग के बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा अंतर-बौद्धिक ज्ञान के आधार पर इस रहस्य की व्याख्या करने का यत्न किया है।

पश्चिमी विचारधारा में आरंभ से ही धरती को सृष्टि का केंद्र माना गया है, जिसके गिर्द सूर्य घूमता है। तीन-चार सौ वर्ष ईसा पूर्व अरस्तु तथा पटौलमी इसी सिद्धांत के समर्थक थे और यही सिद्धांत बाइबिल ने भी अपनाया है। दर्जनों सदियों तक कट्टरवादी ईसाई पुजारियों ने सृष्टि सम्बंधी इस प्रारंभिक धारणा की दुरुस्ती के विरुद्ध जेहाद छेड़े रखा और सैकड़ों उच्च कोटि के ज्ञानियों एवं वैज्ञानियों को सच्चाई बयान करने के दोष में जीवन से हाथ धोने पड़े। श्री गुरु नानक देव जी की समकालीन कॉपरनीक्स ने खगोल-शास्त्रीय नापतौल द्वारा इस सिद्धांत को गलत सिद्ध किया था मगर चर्च ने उसके आविष्कारों को प्रकाशित नहीं होने दिया और उसके विरुद्ध जब्र किया। गैलीलियो ने दूरबीन के अविष्कार से शेष आशंकाओं का भी निवारण किया मगर चर्च ने उसकी इस धारणा कि धरतियां, सूर्य, चांद अन्य भी बहुत से हैं, को भी कुफ्र करार देकर उसे उम्र-कैद की सज़ा दी।

बाइबिल के अनुसार सृष्टि ईसा से लगभग ४००० वर्ष पूर्व रची गई। उससे पहले सृष्टि का कोई अस्तित्व नहीं था और चारों तरफ सुन्न तथा अंधेरा (सुनसान) ही था। बाइबिल के अनुसार दाऊद के प्रश्न कि उस समय तू कहां था, के उत्तर में परमात्मा ने बताया कि मैं उस समय गुप्त अवस्था में था और जब मुझे सृष्टि-रचना की चाह हुई तब मैंने यह सृष्टि की रचना की। इस उद्देश्य के लिए परमात्मा ने कहा कि 'प्रकाश हो' तो सब तरफ प्रकाश ही प्रकाश हो गया। छः दिन के भीतर सारी सृष्टि की रचना हुई और मनुष्य को परमात्मा ने अपने ही रूप में से प्रकट करके सृष्टि का राजा नियुक्त कर दिया। सातवें दिन परमात्मा ने आराम किया। सृष्टि रचने सम्बंधी बाइबिल के अधिकतर सिद्धांत आधुनिक खगोल-शास्त्र, भौतिक विज्ञान तथा जीवन विकास सम्बंधी डार्विन के सिद्धांत पर पूरे नहीं उतरते।

इसलामी विचारधारा काफी हद तक बाइबिल के अनुसार ही है, क्योंकि इसलाम तथा ईसाई मत की पृष्ठभूमि साझी है। इसलाम के अनुसार भी सृष्टि का कर्त्ता खुद खुदा है, मगर सृष्टि-रचना का समय चौदह हज़ार वर्ष पूर्व का बताया जाता है। कुरान शरीफ में अंकित है कि पूछे जाने पर कि सृष्टि-रचना से पूर्व परमात्मा कहां था, पैगंबर मुहम्मद साहब ने फरमाया कि उस समय खुदा एक ऐसी धुंध (कोहरा) में लुप्त था जिसके न नीचे कोई हवा थी और न ही ऊपर। सूफी विचारधारा के अनुसार खुदा ने

**१४७, कबीर पार्क, श्री अमृतसर-१४३००१, मो. ९४१७१-४५४४५*

सृष्टि की रचना तब की जब उसे इच्छा हुई। खुदा ने कहा-- 'कुन' (हो जा) तो परिणाम हुआ-- 'फीए कुन' (हो गई अर्थात् सृष्टि)। इसलाम सृष्टि का विस्तार सात आकाशों तथा सात पातालों पर आधारित मानता है। इसलाम के विचारों में से भी बहुत-से विचार आधुनिक विज्ञान के विश्लेषण का सामना करने से असमर्थ हैं। इसलाम मत भी ईसाई मत की तरह सृष्टि की एक ही कयामत में यकीन रखता है जब सारे संसार का विनाश होगा और परमात्मा इंसानों को पुनर्जीवित करके उनको उनके कर्मों के अनुसार नरक या स्वर्ग प्रदान करेगा।

हिंदू शास्त्रों के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति एक अरब, छिआनवे करोड़, आठ लाख, त्रेपन हज़ार वर्ष पहले हुई। ऋग्वेद में सृष्टि-रचना से पूर्व की व्यवस्था सम्बंधी कहा गया है कि तब न सत्य था और न ही असत्य, न वायुमंडल था और न ही उससे परे कोई आकाश अर्थात् दृष्टिमान सृष्टि भी नहीं थी। रात-दिन के चक्कर को समझने का कोई साधन भी नहीं था। जो कुछ भी था सब आकार रहित अथवा सुन्न था। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में निर्गुण ब्रह्म को ही समूह सृष्टि का कर्त्ता माना गया है। सृष्टि को ब्रह्म का ही सगुण स्वरूप माना जाता है। लगभग हर भारतीय विचारधारा यह मानती है कि निर्गुण ब्रह्म की जब इच्छा होती है तभी सृष्टि अस्तित्व में आती है और उसकी इच्छा से यह फिर अपने मूल स्रोत 'ब्रह्म' में लीन हो जाती है। बुद्ध धर्म में सृष्टि का कर्त्ता कोई नहीं माना गया क्योंकि वे परमात्मा के अस्तित्व से इंकारी हैं। वे सृष्टि रचना को माया या कर्मों का ही फल मानते हैं। बुद्ध विचारधारा के अनुसार ब्रह्मांड में अनंत धरतियां हैं। सृष्टि के केंद्र में एक बहुत ऊंचा पहाड़ है जो आधा समुद्र में है और आधा बाहर। इसके चारों तरफ दुनिया है और सूर्य इसके गिर्द घूमता है। सृष्टि नाशवान है। इसके रचने तथा अंत होने का चक्र निरंतर चलता रहता है। सृष्टि की पहले भी कई बार रचना तथा कयामत हुई है और कई बुद्ध आ चुके हैं।

सृष्टि सम्बंधी केवल धार्मिक दार्शनिकों में ही भ्रम नहीं रहे, विश्व के उच्च कोटि के वैज्ञानियों के विचारों में भी बड़े अंतर-विरोध रहे हैं। जैसे कि पहले बताया जा चुका है, अरस्तु तथा पटौलमी धरती को ही सृष्टि का केंद्र मानते हैं। श्री गुरु नानक देव जी का समकालीन कॉपरनीक्स पहले पश्चिमी वैज्ञानिक था, जिसने खगोल एवं गणित विद्या द्वारा सिद्ध किया था कि धरती सूर्य के गिर्द घूमती है, सूर्य धरती के गिर्द नहीं। गैलीलियो पहला खगोल विज्ञानी था जिसने दूरबीन द्वारा सिद्ध किया था कि अनेक धरतियां, चंद्रमा एवं सूर्य हैं। सृष्टि-रचना के समय और क्रिया सम्बंधी भी अब तक वैज्ञानियों में मतभेद हैं।

श्री गुरु नानक देव जी जब प्रकट हुए तो संसार में अंधकारमयी अंधविश्वास भरपूर मध्य युग का अंत हो रहा था तथा ज्ञान-विज्ञान भरपूर आधुनिक युग का आरंभ। उन्होंने देश-देशांतर के भ्रमण के द्वारा ज्ञान एवं दर्शन के हर केंद्र तक पहुंचकर विश्व के लगभग हर प्रमुख धर्म व दर्शन की बड़े नज़दीक से जानकारी प्राप्त की। जो दर्शन उन्होंने प्रतिपादित किया है वह प्राकृतिक रूप से प्राचीन धर्म-दर्शन से अधिक आधुनिक तो है ही लेकिन जैसे श्री गुरु नानक देव जी अन्य प्रमुख धर्म-दर्शन की परमात्मा तथा सृष्टि सम्बंधी जोड़-तोड़ से

निर्लिप्त रहे हैं, वो उनकी प्रवीण अंतर-बौद्धिक तथा आध्यात्मिक सूझ का परिचायक है। सृष्टि सम्बंधी अपने विचारों का विस्तारपूर्वक प्रकटावा श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी-- मारू सोलहे, माझ व आसा की वार और गूजरी, रामकली, सिरीराग में अधिक किया है, लेकिन जपु जी साहिब बाणी में भी इस सम्बंधी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष बाणी काफी विचार उपलब्ध हैं।

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी जपु जी साहिब में सृष्टि सम्बंधी धारणाओं की प्रासंगिकता तथा प्रमाणिकता की आधुनिक विज्ञान के साथ अनुसरता आश्चर्यजनक है। गुरु जी ने प्राचीन वैदिक, यहूदी, ईसाई, इसलामी आदि धर्मों की तरह रचना सम्बंधी हर जानकारी रखने का दावा ही नहीं किया बल्कि अन्य धर्मों के दावों का खंडन करते हुए आधुनिक वैज्ञानिकों के समान कहा है कि इस सम्बंध में किसी को भी पूरा ज्ञान नहीं हो सकता सिवाय कर्ता के। जपु जी साहिब में अंकित है :

जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
(पन्ना ४)

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी भी परमात्मा को ही सृष्टि का कर्ता मानते हैं। जपु जी साहिब के आरंभ से पहले मूल-मंत्र में ही श्री गुरु नानक देव जी परमात्मा को 'करता पुरख' स्वीकार करते हैं। परमात्मा खुद ही सृष्टि का सारा खेल रचता है और खुद ही उसमें विचरण करता है :

-आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
(पन्ना ४६३)

-तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥
(पन्ना १२९१)

सृष्टि-रचना का एक ही तत्व है-- नाम रूपी प्रभु। इस दृष्टि से सृष्टि तथा परमात्मा में एक भी अंतर नहीं। जपु जी साहिब में वर्णन है :

जेता कीता तेता नाउ ॥
विणु नावै नाही को थाउ ॥ (पन्ना ४)

सृष्टि-रचना से पहले केवल निर्गुण ब्रह्म का ही अस्तित्व था जिसका कोई रूप या गुण नहीं था। इस अवस्था का बयान असंभव है :

आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले . . . ॥

इस अवस्था में सृष्टि परमात्मा के अंदर बीज रूप में विद्यमान थी। न जगत पसारा था न कोई धंधा, न कोई धरती, न अकाश :

. . . सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥ (पन्ना ९४०)

निर्गुण ब्रह्म जो जपु जी के अनुसार "थापिआ न जाइ कीता न होइ" युगों-युगों तक यूं ही सुन्न अवस्था में लीन रहता है, सरबत्त का आरंभ है, जिसका अपना कोई आरंभ नहीं; अजन्मा, अरूप, अविनाशी। जपु जी साहिब के अनुसार :

आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥ (पन्ना ६)

राग रामकली तथा मारू सोलहे में विस्तृत रूप प्रकट किया गया है कि सृष्टि-रचना से पहले *"केतड़िआ जुग धुंधूकारै"* की अवस्था रही, जब ब्रह्म अकेला सुन्न अथवा अफुर अवस्था में रहा। मारू सोलहे में बयान है :

अरबद नरबद धुंधूकारा ॥
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुंन समाधि लगाइदा ॥ (पन्ना १०३५)

बाद में जब परमात्मा को अपना ही दूसरा सगुण रूप देखने की इच्छा हुई तो उसने एक ही हुक्म के द्वारा सारी सृष्टि की रचना की। जपु जी साहिब के अनुसार :

कीता पसाउ एको कवाउ ॥ (पन्ना ३)

आसा राग की पटी में बताया है :

पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ (पन्ना ४३३)

परमात्मा यह सारी सृष्टि अपने आप के बिना किसी भौतिक आधार, कल या शारीरिक क्रिया के रचता है। वो खुद ही इसमें निवास करता है, खुद ही इसका सुचारू संचालन करता है और जीवों का प्रतिपालन करता है :

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ (पन्ना ७)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार सृष्टि का अंत भी आखिर परमात्मा की इच्छा से ही होता है। जब पल-क्षण में ही सारी सृष्टि का विनाश हो जाता है तो वो यूं सुन्न में ही समा जाती है :

सुंनहु उपजी सुंनि समाणी ॥ (पन्ना १०३७)

गुरमति के व्याख्याकार भाई गुरदास जी की वार २९ से भी उत्पत्ति तथा कयामत के निरंतर चक्करों का प्रमाण उपलब्ध है :

तिनि लोअ जुग चारि करि लख ब्रहमंड खंड कर ढके।
लख परलउ उतपति लख हरहट माला आखि फरके। (वार २९:१६)

श्री गुरु नानक देव जी का सृष्टि-रचना एवं कयामत के निरंतर चक्र का सिद्धांत खगोल शास्त्र के अति आधुनिक 'धड़कते ब्रह्मांड' के सिद्धांत के साथ मेल खाता है। दार्शनिक परंपरा के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी भी मानते हैं कि सृष्टि परमात्मा का ही दूसरा रूप है। 'जपु जी' में वर्णन है कि सृष्टि के लाखों पातालों एवं आकाशों का अनगिनत ज्ञानी भी लेखा-जोखा नहीं कर सके। चाहे कतेबी दर्शन के अनुसार भी हज़ारों प्रकार की उत्पत्ति है मगर वास्तव में यह सब एक ही तत्व से रची है जिसका लेखा किया ही नहीं जा सकता :

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ (पन्ना ५)

प्राचीन ज्ञानी सृष्टि-निर्माण के पदार्थों की संख्या अलग-अलग तथा बहुत सारी बताते आये हैं। श्री गुरु नानक देव जी से चार सदियों के बाद रासायन विज्ञान ने स्वीकार किया कि सृष्टि के ये सब लाखों पदार्थ लगभग एक सौ मूल तत्वों के अलग-अलग अनुपातों में मिश्रण या यौगिक ही हैं। इन मूल तत्वों में से सबसे प्रारंभिक तत्व हाईड्रोजन के परमाणु को ही अब सृष्टि-रचना की मूल-ईंट माना जाता है। बीसवीं सदी के लाभदायक भौतिक विज्ञान ने अब सिद्ध कर दिया है कि यह विभिन्न सौ मात्र तत्व भी सब के सब उंगलियों पर गिने जाने वाले खुर्दबीन नाभिकीय अणुओं से ही उत्पन्न होते हैं, जिनमें से प्रोटोन, न्यूट्रोन एवं इलेक्ट्रोन प्रमुख हैं। यही अणु अलग-अलग अनुपात में जुड़कर मादे के परमाणु बनाते हैं, मगर स्वतंत्र प्रवाह के द्वारा ऊर्जा की लहरों में विद्यमान होते हैं अर्थात् मादा ऊर्जा से और ऊर्जा मादा से उत्पन्न होते रहते हैं। वैज्ञानिक अब मानते हैं कि कोई आश्चर्य नहीं कि निकट भविष्य में यह भी सिद्ध हो जाए कि सारी विभिन्न शक्तियां एक ही मूल शक्ति से ही उत्पन्न होती हों तो फिर यही मूल शक्ति वो *"असुलू इकु धातु"* होगी, जिसका श्री गुरु नानक देव जी ने पांच सदी पहले प्रकटावा किया था।

आधुनिक वैज्ञानिक भी श्री गुरु नानक देव

जी की सृष्टि-रचना के काल सम्बंधी विचारों को ही आधार मानते हैं चाहे कोई दर्शन या दार्शनिक कुछ भी कहे, मगर वास्तव में सृष्टि कब तथा कैसे रची गई तथा कयामत कब आएगी, इस सम्बंधी कोई कुछ नहीं कह सकता। जपु जी साहिब में वर्णन है :

कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥
(पन्ना ४)

श्री गुरु नानक देव जी ने सृष्टि को कालबद्ध करना संभव नहीं माना, परंतु उन्होंने जपु जी साहिब के आरंभ में परमात्मा के 'काल' की सीमाएं अवश्य निर्धारित की हैं। उनके अनुसार परमात्मा सदा था और रहेगा। वो अकाल है :

आदि सचु जुगादि सचु ॥
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥ (पन्ना १)

जगत को श्री गुरु नानक देव जी सृष्टि का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग मानते हैं, जहां जीवों को शुभ कर्मों के द्वारा अपना धर्म पालते हुए परमात्मा की कृपा प्राप्त करके जीवन का परम उद्देश्य प्रभु-मिलाप संभव करने का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है। जपु जी साहिब में गुरु जी फरमान करते हैं :

राती रुती थिती वार ॥
पवण पाणी अगनी पाताल ॥
तिसु विचि धरती थापि रखी धरम साल ॥
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥
तिन के नाम अनेक अनंत ॥ (पन्ना ७)

जपु जी साहिब में विचार उपलब्ध है कि धर्म कमाने के लिए परमात्मा ने कई धरतियों एवं लोकों की रचना की है :

केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
(पन्ना ७)

जपु जी साहिब के अनुसार लाखों पाताल एवं लाखों अकाश हैं :

पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥
(पन्ना ५)

भारतीय परंपरा की त्रैलोकी की धारणा का भी खंडन किया गया है :

असंख नाव असंख थाव ॥
अगंम अगंम असंख लोअ ॥ (पन्ना ५)

अर्थात् अनगिनत ऐसे लोक भी हैं जहां पहुंचा ही नहीं जा सकता। श्री गुरु नानक देव जी का यह विचार भी अपने समय से आगे रहने वाला है। पश्चिमी वैज्ञानिक भी दूरबीन के बनने तक इस धारणा के कायल नहीं हुए थे।

इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी ने इस भारतीय परंपरा कि धरती (धौले) बैल के सींगों पर टिकी है और जब थकावट के कारण बैल सींग बदलता है तो धरती डगमगाती है, जिसके कारण भूकंप आदि उत्पन्न होते हैं, का भी बड़े सुचारू रूप से खंडन किया है। वे पूछते हैं कि बैल इतना भार कैसे उठा सकता है? जब इस धरती से दूर और भी धरतियां हैं तो वे किसके सहारे खड़ी हैं? फिर (धौला) बैल किसके सहारे खड़ा है? जिस युग में अभी यह धारणा भी प्रमाण मांगती थी कि धरती चपटी है या गोल,

उस समय ऐसी धारणा इतनी दृढ़ता से व्यक्त करना कि नीचे खड़े बैल के पैरों के नीचे कुछ नहीं होगा, श्री गुरु नानक देव जी की अपनी विचारधारा को इतना सुचारू रूप प्रदान किया है कि उसका आधुनिक विज्ञान के साथ कोई अंत:विरोध प्रतीत नहीं होता।

सृष्टि के अनंत विस्तार सम्बंधी श्री गुरु नानक देव जी ने दृढ़ता से कहा है कि उसका वर्णन करना असंभव है। जपु जी साहिब में कहा है कि सृष्टि का अंत किसी से नहीं पाया गया। कतेबी धर्म भी मानते हैं कि सृष्टि के चाहे अठारह हज़ार आलम हैं मगर वे सभी हैं एक ही अल्लाह से। इस प्रकार लेखे-जोखे में पड़ना बेकार है। परमात्मा ने इतना विस्तृत आकार बनाया है कि उसके अंत का पता ही नहीं लग सकता :

अंतु न जापै कीता आकारु ॥
अंतु न जापै पारावारु ॥
अंत कारणि केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥ (पन्ना ५)

श्री गुरु नानक देव जी का यह विचार भी उन आधुनिक खगोल-शास्त्रियों के साथ मेल खाता है जिनके विचार के अनुसार ब्रह्मांड की अनंत प्रतीत होती सीमाओं का पार मनुष्य कभी नहीं पा सकेगा। श्री गुरु नानक देव जी खुद भी जपु जी साहिब में फरमान करते हैं कि परमात्मा तथा उसकी सृष्टि बहुत असीम है। जब तक कोई उतना असीम न हो तब तक न वो उसको जान सकता है और न ही उसके बारे में बयान कर सकता है :

वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥
ऊचे ऊपरि ऊचा नाउ ॥
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ (पन्ना ५)

कुछ विद्वान इतनी विशाल सृष्टि की सृजना परमात्मा के एक ही हुक्म से होने के सिद्धांत से निष्कर्ष करते हैं कि श्री गुरु नानक देव जी की विचारधारा का डार्विन के सहज विकास के सिद्धांत के साथ अंत:विरोध है, मगर ऐसा है नहीं। श्री गुरु नानक देव जी कम से कम मानव जाति के लंबे इतिहास से अनभिज्ञ नहीं थे। फिर उन्होंने खुद जपु जी साहिब में ही सृष्टि के भूत काल को युगों तक लंबा बताया है और इस दौरान असंख्य परिवर्तन बताए हैं। राग मलार में भी उत्पत्ति के बाद समय छत्तीस युग बताया है। इसके अलावा सृष्टि के विकास सम्बंधी भी जो धारणाएं जपु जी साहिब तथा गुरु जी की अन्य बाणी में उपलब्ध हैं, उनसे सिद्ध है कि श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धांत तथा डार्विन के सहज विकास के सिद्धांत में कोई अंतर्विरोध नहीं।

सिरी राग में श्री गुरु नानक देव जी बताते हैं कि परमात्मा से पवन उत्पन्न हुई और पवन से जल तथा जल से तीन लोकों का निर्माण हुआ। राग प्रभाती में भी दर्ज है कि परमात्मा ने जल, अग्नि तथा पवन, तीन तत्व उत्पन्न किए और इनके सुमेल से शेष उत्पत्ति हुई अर्थात् जल, थल, गगन तीनों भवनों के जीव उत्पन्न हुए। राग गूजरी में भी वर्णन है कि परमात्मा के सुन्न से पवन, जल, अग्नि, ब्रह्म, विष्णु, महेश बने तथा बाद में सृष्टि के शेष तत्वों की रचना हुई।

श्री गुरु नानक देव जी के उपरोक्त वर्णित विचारों से सिद्ध है कि सृष्टि-रचना पड़ाव-दर-पड़ाव हुई है, जो डार्विन के सहज विकास के सिद्धांत का आधार है। आधुनिक विज्ञान के

अनुसार भी सृष्टि-रचना के लंबे काल में जब धरती ठंडी होने लगी तो पहले थल अस्तित्व में आए, जिनके गिर्द गैसें ठंडी होने से जल तथा पवन उत्पन्न हुए। इन तीनों से ब्रह्मांडीय ताप की लंबी क्रिया द्वारा ही जल के अंदर करोड़ों वर्ष जीवन-तरंग उत्पन्न हुई। युगों-युगांतरों के विकास द्वारा एक साधारण मूल कोश (**Cell**) से प्रगति करके जीवन, वनस्पति तथा जंतुओं के रूप में जल से थल और फिर गगन तक पहुंचा और अंततः थल के ऊपर मानव रूप में विद्यमान हुआ। जपु जी साहिब में फरमान है :

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥
(पन्ना ८)

बेअंत तथा अथाह सृष्टि की हर प्रणाली की यूं ही अति उद्देश्यपूर्ण, विस्तृत, सुंदरमयी तथा सुयोग्य स्व-संचालना से सदा ही ज्ञानियों-विज्ञानियों को विस्मादी आश्चर्य रहा है। आइंसटाइन जैसे विख्यात भौतिक वैज्ञानिक भी इस रहस्य को परमात्मा के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण मानते हैं। श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार सृष्टि का संचालन भी परमात्मा के नियंत्रण, भय या हुक्म में होता है। राग माझ में फरमान है :

हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥
(पन्ना १४५)

मारू सोलहे में ज़िक्र है :

जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥
(पन्ना ७)

यह 'हुक्म' या 'भाणा' एक सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान नियम बताया गया है, जिसे 'दैवी विधान' या 'भौतिक नियम' भी कहा जा सकता है, जिसके द्वारा सृष्टि का संचालन तथा अंत होता है। इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी अपनी सारी बाणी की तरह जपु जी साहिब में भी आत्मा तथा परमात्मा के रहस्य सम्बंधी ठोस विचार व्यक्त करने के साथ ही सृष्टि-रचना, संचालन एवं रहस्य के बारे में भी विस्तृत विचार व्यक्त करते हैं। श्री गुरु नानक देव जी के सृष्टि-सिद्धांत के अनुसार परमात्मा खुद ही सृष्टि का रचयिता, संचालक तथा विनाशक है। वो खुद ही अपने चाव के लिए इसकी रचना करता है, खुद ही इसमें विचरण करता है तथा सृष्टि व उसकी हर प्रणाली सदा परमात्मा के ही नियंत्रण में सुचारू रूप में स्व-संचालित रहती है। श्री गुरु नानक देव जी की यह अकथ्य कहानी आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए भी मुख्यतः अकथ्य ही है। श्री गुरु नानक देव जी ने जपु जी साहिब में रचना तथा रचयिता के परस्पर सम्बंधों को इस प्रकार व्यक्त किया है :

सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥
तिथै लोअ लोअ आकार ॥
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥
(पन्ना ८)



बाबा हनूमान सिंघ जी शहीद

*-सिमरजीत सिंघ**

बाबा हनूमान सिंघ जी वो महान शहीद हैं जिन्होंने बुड्ढा दल निहंग सिंघों की जत्थेबंदी के मुख्य जत्थेदार होते हुए, देश की आज़ादी के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध हक-सच की लड़ाई लड़ते हुए शहीदी प्राप्त की।

बुड्ढा दल सिक्ख पंथ का, विशेषत: निहंग सिंघों का अभिन्न अंग है। निहंग सिंघ, सिंघों की प्राचीन रिवायतों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के ज्योति-जोत समा जाने के पश्चात् सिक्खों के संघर्ष का दौर शुरू हो गया था। ऐसे समय में संगत गुरुद्वारा साहिब की पवित्रता को हर हाल में कायम रखती रही, चाहे इसके लिए अनेकों बार कुर्बानियां भी देनी पड़ीं। *"मरउ त हरि कै दुआर"* की विचारधारा को सिक्खों ने अनेकों बार अमली जामा पहनाकर सिद्ध किया। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के हो रहे अपमान को रोकने के लिए सिक्खों ने कभी भाई महिताब सिंघ, भाई सुक्खा सिंघ, बाबा दीप सिंघ जी, बाबा गुरबखश सिंघ तथा कभी सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया बनकर इसकी पवित्रता को कायम रखा। बाबा बंदा सिंघ बहादर को जंगों-युद्धों के दौरान बंदी बना लिया गया। उन्हें आठ सौ सिक्खों सहित दिल्ली में बड़ी बेरहमी से शहीद कर दिया गया। इन घटनाओं के साथ ही समय की मुगल हकूमत ने सिक्खों का कत्ल-ए-आम शुरू कर दिया। सिक्ख जंगलों की गुफाओं में जा बसे। ऐसे भयानक समय में सिक्खी का प्रचार तो एक ओर रहा, सिक्ख नाम तक लेने वाले को भी मृत्यु के घाट उतार दिया जाता था। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर जैसे पवित्र स्थान को ढह-ढेरी कर दिया गया। गांवों-शहरों में यदि कोई गुरु-स्थान था तो उसका प्रबंध उदासी साधुओं ने अपने हाथों में ले लिया। ये उदासी साधू भी सिक्खी का प्रचार न होने के कारण ग़ैर-सिक्ख विचारों से प्रभावित होते जा रहे थे। हकूमत के डर के कारण भी ये स्वयं को हिंदू ही बताने लग गये थे। इन सारे कारणों के कारण इन स्थानों में से सिक्खी की रंगत ख़त्म होती जा रही थी। यदि सिक्ख लुक-छिपकर अपने इन गुरु-स्थानों के दर्शन करने के लिए जाते भी थे तो केवल प्रेम-भावना तथा श्रद्धा-भावना से ही और वो भी बहुत कम समय के लिए। उनको मुश्किल से इतना ही समय मिलता था। ऐसे हालात में उनके पास इतना समय नहीं होता था कि वे जीवन-जाच की जांच-पड़ताल कर सकते। अगर कहीं सिक्खों को इकट्ठे होने का समय प्राप्त भी होता तो वो अपने आप को बचाने एवं वैरियों को सोधने के लिए ही विचारें करते।

बुड्ढा दल के स्थापित होने के बारे में विचार है कि २९ मार्च, १७३४ ई को श्री अकाल तख़्त साहिब, श्री अमृतसर में खालसे का इकट्ठ हुआ, जो कि ६५ जत्थों में बंटा हुआ था। इसको एक दल में इकट्ठा करके 'दल खालसा' नाम दिया गया। दल खालसा को आगे दो दलों में विभाजित किया गया-- 'बुड्ढा दल' तथा 'तरना दल।' चालीस वर्ष से कम आयु

**संपादक, गुरमति ज्ञान/गुरमति प्रकाश।*

वाले सिक्खों के दल को 'तरना दल' का नाम दिया गया तथा इससे बड़ी आयु वाले सिंघों के जत्थे को 'बुड्ढा दल' कहा जाने लग गया। इन जत्थों की मुख्य शक्ति नवाब कपूर सिंघ के पास रही। बाद में जत्थेदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया ने नवाब कपूर सिंघ से कमान संभाली।

तरना दल को आगे पांच जत्थों में बांट दिया गया। ये पांच जत्थे थे : १) जत्था शहीदां, २) जत्था अमृतसरीआं, ३) बाबा कान्ह सिंघ का जत्था, ४) जत्था डल्लेवालीयां ५) रंघरेटे सिंघों का जत्था। इन पांच जत्थों के जत्थेदारों के साथ और भी प्रमुख सिंघ थे।

१७३९ ई में नादिर शाह के हमले के बाद पंजाब में कोई हकूमत काम नहीं कर रही थी। इस समय सिंघ ज़ोर पकड़ गये। सिंघों का सरकार के विरुद्ध संघर्ष तीक्ष्ण होता गया। १४ अक्तूबर, १७४५ ई को दल खालसा का इकट्ठ हुआ। यहां दल खालसा को आगे तीस छोटे जत्थों में बांट दिया गया। जनवरी, १७४८ ई में अब्दाली के हमले शुरू हो गए। इस समय खालसे के छोटे-छोटे जत्थों के और जत्थे बन गए। यह गिनती ६६ तक पहुंच गई। १७४८ ई की वैसाखी को खालसे का इकट्ठ हुआ। नवाब कपूर सिंघ ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि पंथ की एक मज़बूत जत्थेबंदी बनाई जाए। यह प्रस्ताव सभी ने स्वीकार कर लिया। सारे पंथ की सांझी जत्थेबंदी का नाम 'दल ख़ालसा' रखा गया। दल ख़ालसे का जत्थेदार सर्वसम्मति के साथ स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को चुना गया। उसके अधीन ग्यारह मिसलें बनाई गईं। मिसलें ये हैं : १) मिसल आहलूवालिया, २) मिसल फ़ैजलपुरीआं यां सिंघपुरीआं, ३) मिसल शुकरचक्कीआ, ४) मिसल निशानांवाली, ५) मिसल भंगीआं, ६) मिसल कन्हईआं, ७) मिसल नकईयां, ८) मिसल डल्लेवाली, ९) मिसल करोड़ासिंघीआं, १०) मिसल सांघणीआं (रामगढ़िया), ११) मिसल शहीदां, १२) मिसल फूलकीआं। मिसल फूलकीआं इनसे अलग है जिसका संस्थापक स. आला सिंघ पटियाला है। यह मिसल बारहवीं है।

५ फरवरी, १७६२ ई को कुप्प रुहीड़े के मैदान में अब्दाली तथा खालसा फौजों की सीधी टक्कर हुई। खालसे का भारी नुकसान हुआ। इसको 'वड्डा (बड़ा) घल्लूघारा' कहा जाता है। दिसंबर, १७६२ ई को अब्दाली के वापिस काबुल जाने के बाद सिंघ फिर श्री अमृतसर में इकट्ठे हुए। दल खालसा की जत्थेबंदी को फिर नये सिरे से कायम किया गया। दो बड़े जत्थे बनाये गये, जिसमें आहलूवालिया, सिंघपुरीआं, डल्लेवालीआं, करोड़ासिंघीआ, निशानांवाली तथा शहीदांवाली-- छः मिसलें शामिल थीं। इनका प्रमुख जत्थेदार स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया था। तरना दल में भंगीआं, रामगढ़ीआं, कन्हईआं, नकईयां, शुकरचक्कीआं-- ये पांच मिसलें थीं तथा इनका जत्थेदार स. हरी सिंघ भंगी था। इसको गुरुधामों की सेवा बख़्शी गई।

कुछ समय बाद जब मिसलों का समय आया तो सिक्ख अपने-अपने जत्थे बनाकर जंगलों से बाहर आ गए। इस समय भी उनके पास अपने पैरों पर खड़े होने का समय बहुत कम था और वे अपने-अपने दल को मज़बूत करने, समय की जालिम हकूमत को ख़त्म करने तथा बाहर से आ रहे हमलावरों को रोकने में लगे रहे। ऐसे समय में गुरमति के व्यवहारिक विचारों का प्रचार करना बड़ा मुश्किल था। इस तरह लगभग सौ साल का समय ऐसा बीता, जिसमें सिक्खी के प्रचार का बहुत बड़ा नुकसान हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में महाराजा रणजीत सिंघ ने पंजाब में सिक्ख राज्य की नींव रखी। महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य के साथ ही फूलकीआं रियासतें भी कायम हुईं। फूलकीआं

रियासतें अंग्रेजी राज्य के प्रभाव तले थीं। महाराजा रणजीत सिंघ का अधिकतर समय अपने राज्य को दृढ़ आधार प्रदान करने तथा फिर पश्चिम सरहद के पठानों के साथ किए जंगों-युद्धों में बीत गया। जहां तक हो सका, महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख गुरु साहिबान तथा शहीद सिंघों की यादगारों वाली जगह पर गुरुद्वारा साहिबान का निर्माण करवाया। महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्खी के स्रोतों को स्वस्थ करने के लिए पूरा ज़ोर लगाया, गुरुद्वारों के नाम जागीरें लगवाईं।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य-काल के समय में भी निहंग सिंघों की मिसल आज़ाद रही। महान पवित्र जीवन वाले अकाली फूला सिंघ जी निहंग सिंघों की फौज बुड्ढा दल के जत्थेदार थे, जिनके हर हुक्म के आगे शेर-ए-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ सिर झुका दिया करते थे। निहंग सिंघों की फौज को 'अकाल रेजिमेंट' का नाम दिया गया था। यह गैर-आईनी फौज थी। इन्होंने आईनी फौज की तरह अंग्रेज अफ़सरों से कोई सिखलाई नहीं ली थी, क्योंकि इन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ को यह कह दिया था कि हमने स्त्रियों की भांति नाचने की सिखलाई अंग्रेजों से नहीं लेनी। हमें जब भी आदेश करोगे, युद्ध के मैदान में हलचल मचा देंगे। इन्होंने अंग्रेज फौज वाली वर्दी धारण नहीं की और न ही अंग्रेजों वाली युद्ध-नीति ही अपनाई। अपना नीला लिबास, अस्त्र-शस्त्र परंपरावादी ढंग वाले ही धारण किए तथा पुरानी रिवायती युद्ध-कला को अपनाकर हर मैदान में लड़े। यही कारण है कि अंग्रेजों तथा अंग्रेज-पक्षीय इतिहासकारों ने निहंग सिंघों के विरुद्ध लिखा है। उनको हर क्षेत्र में नज़र-अंदाज़ किया जाने लगा।

अकाली फूला सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ के साथ कई जंगों में हिस्सा लिया। अकाली जी इतनी दिलेरी के साथ जंग के मैदान में जूझते कि दुश्मन दंग रह जाता। मुलतान की लड़ाई, पेशावर की जंग, कश्मीर की जंग, सूबा सरहिंद तथा पठानों के साथ हुए युद्धों के दौरान अकाल रेजिमेंट की भूमिका अहम रही। एक बार अकाली फूला सिंघ ने अरदासा सोधकर नौशहिरे की तरफ चढ़ाई की, परंतु शेर-ए-पंजाब ने कहा कि अभी थोड़ा समय रुककर चढ़ाई करनी चाहिए, क्योंकि पठानी फौज हमारी खालसाई फौज से ज्यादा है। यह सुनकर अकाली जी ने जवाब दिया कि मैं अरदासा सोधकर चला हूं, पीछे नहीं हट सकता। उन्होंने नौशहिरे की जंग बड़ी शूरवीरता से लड़ी तथा स्वयं शहीदी पाकर फ़तहि खालसे को दिलवाई।

अकाली फूला सिंघ के बाद बुड्ढा दल की कमान बाबा हनूमान सिंघ जी ने संभाली। पंजाब प्रदेश के ज़िला फिरोज़पुर की तहसील ज़ीरा में नौरंग सिंघ वाला गांव है। यह गांव ज़ीरा-मल्लांवाला सड़क पर आबाद है। रेलवे स्टेशन मल्लांवाला इस गांव से २४ किलोमीटर की दूरी पर है। इसी गांव में बाबा हनूमान सिंघ जी का जन्म १७५६ ई में हुआ।

निहंग सिंघ अंग्रेजों को बिलकुल पसंद नहीं करते थे। वे नहीं चाहते थे कि महाराजा रणजीत सिंघ उनके साथ दोस्ताना संबंध रखें। अकाली फूला सिंघ एवं उनके साथी इस बात के विरुद्ध थे कि महाराजा रणजीत सिंघ अंग्रेजों के साथ कोई संधि करें, किंतु महाराजा रणजीत सिंघ अंग्रेजों के साथ सुखद संबंध बनाना चाहते थे। निहंग सिंघ अंग्रेज अधिकारी तथा उनके करिंदों के जीवन के लिए हमेशा खतरा थे। जब कोई बड़ा अंग्रेज अधिकारी या राजनीतिज्ञ पंजाब का दौरा करने आता तो महाराजा को उसकी सुरक्षा के लिए विशेष प्रबंध करने पड़ते थे।

इसके बारे में स. खुशवंत सिंघ ने लिखा है कि जब मैटकाफ़ महाराजा रणजीत सिंघ के साथ खालसा राज्य की सरहदों के बारे में विचार कर रहा था तो निहंग सिंघों तथा मैटकाफ़ के सुरक्षा कर्मचारियों के मध्य मुठभेड़ हुई थी। समकालीन स्रोतों में उसने विस्तारपूर्वक उदाहरण दी है।

१८३९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ का देहांत हो गया। उनके उपरांत लाहौर दरबार में असाधारण घटनायें घटित होने लग गईं। इन घटनायों का फायदा उठाते हुए लाहौर के उच्चाधिकारी प्रधानमंत्री राजा लाल सिंह तथा खालसा फौज के कमांडर राजा तेज सिंह की अंग्रेजों ने मदद करने तथा खालसा फौज के साथ धोखा करने के लिए राजी कर लिया और इस संबंधी साजिशें तैयार कर ली गईं। महाराजा रणजीत सिंघ के अकाल चलाना कर जाने के बाद प्रमुख सिक्ख घरानों की अहम भूमिका रही है। कुछेक सिक्ख घराने ऐसे थे जिन्होंने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार न की और उनके इशारों पर न चले। उनको अपनी जागीरें भी जब्त करवानी पड़ीं। कुछेक घराने पारिवारिक गुटबंदी का शिकार भी हुए।

पंजाब प्रदेश के ज़िला फ़िरोज़पुर में मुदकी नाम का एक कसबा है। यह कसबा तलवंडी भाई-फरीदकोट मार्ग पर रेलवे स्टेशन तलवंडी भाई से १० किलोमीटर की दूरी पर आबाद है। १८४५-४६ ई में अंग्रेजों एवं सिक्खों के बीच इसी स्थान पर युद्ध हुआ। अंग्रेज सरकार कई वर्षों से पंजाब पर कब्जा करने की योजनाएं बना रही थी और बहाने आदि से पंजाब पर हमला करना चाहती थी। सिक्ख राज्य के गद्दार-गुलाब सिंह डोगरा, तेज सिंह, मिसर लाल सिंह आदि ने अंग्रजों के साथ गुप्त संधि करके सिक्ख राज्य को अंग्रेजों के अधीन करने का घातक फैसला करके अंग्रेजों की इच्छा पर फूल चढ़ाए। महारानी जिंद कौर ने सिक्ख राज्य को बचाने के लिए एक चिट्ठी सरदार शाम सिंघ अटारी तथा एक चिट्ठी बाबा हनूमान सिंघ जी को लिखकर सिक्ख राज्य को बचाने की विनती की।

११ दिसंबर, १८४५ ई को खालसा फौज ने लाल सिंह तथा तेज सिंह के नेतृत्व में दरिया सतलुज पार किया तथा १३ दिसंबर, १८४५ ई को लॉर्ड हार्डिंग गवर्नर जनरल ने सिक्खों के विरुद्ध जंग का एलान कर दिया। उस समय अंग्रेजों के पास फ़िरोज़पुर में केवल ८००० सैनिक थे। अगर लाल सिंह उस समय अंग्रेजों पर हमला कर देता तो अंग्रेजों की पराजय निश्चित थी, परंतु उसने ऐसा नहीं किया, बल्कि फ़िरोज़पुर के सहायक एजेंट निकलसन की सलाह से सिक्ख सेना को पूर्व नियोजित योजना के अनुसार अलग-थलग कर दिया। एक डिवीज़न को लुधियाना भेज दिया गया। एक ने स. शाम सिंघ अटारी के नेतृत्व में गांव हरीके में ठहराव कर लिया। दो डिवीज़नों का नेतृत्व फ़िरोज़पुर के नज़दीक तेज सिंह कर रहा था तथा शेष सेना फ़िरोज़पुर में लाल सिंह के अधीन थी।

सिक्ख सेना की तब तक कोई कार्यवाही न करने दी गई जब तक सर हिऊंग ग्राफ के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने पूरी तैयारी न कर ली। अंग्रेज १२००० सैनिक, ४८ तोपें तथा चार घुड़सवार तोपखाने के दसते शामिल करके फ़िरोज़पुर से १५-१६ किलोमीटर की दूरी पर मुदकी गांव आ पहुंची। लाल सिंह छोटी-सी सेना, जिसमें २००० पैदल सैनिक, ३५०० घुड़सवार तथा २० तोपें शामिल थीं, लेकर मुदकी पहुंच गया। यहां पर पहली लड़ाई हुई। लाल सिंह लड़ाई के शुरू में ही सिक्ख सेना को छोड़कर भाग गया। सिक्ख सेना ने डटकर दुश्मनों का मुकाबला किया।

सिक्ख अंग्रेजों के मुकाबले बहुत ही कम संख्या में थे तथा उनको अपने सेनापति की गद्दारी के कारण पराजय का मुंह देखना पड़ा।

बाबा हनूमान सिंघ जी द्वारा भी मुदकी के मैदान में यह जंग लड़ी गई थी। वे अपनी खालसा फौज सहित शामिल हुए। बहुत सारी अंग्रेज फौज को मौत के घाट उतारा तथा अंग्रेज टुंडे लाट को भगाया। 'जंगनामा सिंघां ते फरंगीआं' में इसके बारे में शाह मुहम्मद ने ज़िक्र किया है :

इक पिंड दा नाम जो मुदकी सी,
उथे भरी सी पाणी दी खड्ड मीआं।
घोड़े चढ़ ते नवें अकालीए जी,
झंडे देंवदे अग्गे जाइ गड्ड मीआं।
तोपां चल्लीआं कटक फरंगीआं दे,
गोले तोड़दे मास ते हड्ड मीआं।
'शाह मुहंमदा' पिछांह नूं उठ नस्से,
तोपां सभ आए उथे छटड मीआं।
उधरों आप फरंगी नूं भांज आई,
दौड़े जाण गोरे दित्ती कंड मीआं।
चल्ले तोपखाने सारे बेड़ीआं दे,
मगरों होई बंदूकां दी फंड मीआं।
किसे जाइ के लाट नूं ख़बर दित्ती,
नंदन होइ बैठी तेरी रंड मीआं।
'शाह मुहंमदा' देख मैदान जा के,
रुलदी गोरिआं दी उथे झंड मीआं।
पहाड़ा सिंघ सी यार फिरंगीआं दा,
सिंघां नाल सी उस दी गैर साली।
पिच्छों भज के लाट नूं जाइ मिलिआ,
गल्ल जाइ दस्सी सारी भेत वाली।

बाबा हनूमान सिंघ जी ने सिंघों को साथ लेकर मुदकी की जंग में से बरतानवी सेना को भगाया तथा सिक्ख राज्य की मदद की। अगर उस समय पटियाला, जींद, फरीदकोट, कैथल आदि रियासतें अंग्रेजों के साथ न मिलतीं तथा सिक्ख फौज के साथ सेनापति गद्दारी न करते तो अंग्रेजों का पंजाब पर कब्जा होना मुश्किल था। टुंडे लाट को विदेश में खबरें भेज दी थीं तथा फौज को हुक्म कर दिया था, "भाग जाओ जो भागना चाहता है। अकाली आ गए हैं, अब नहीं छोड़ेंगे।" इस ख़बर से सारे टापुओं में अफरा-तफरी मच गई, जिसका शाह मुहम्मद ने ज़िक्र किया है :

नंदन टापूआं विच कुरलाट होइआ,
कुरसी चार हज़ार है सक्खणी जी।

अंग्रेजों के चार हज़ार अफसर मारे गये। इस तरह टुंडे लाट को पराजित कर बाबा जी का जत्था पटियाला की तरफ आ गया। उधर पहाड़ा सिंघ फरीदकोटिए ने टुंडे लाट की मदद की। टुंडा लाट फौज लेकर लाहौर की तरफ बढ़ा। बाबा जी अपने जत्थे सहित पटियाला में गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब में आए, जिसे पहले 'निहंग सिंघों का टोभा' कहा जाता था। पटियाला के बारे में उस समय यह कहावत मशहूर थी कि 'तेरा घर सो मेरा घर।' सिंघों ने समझा कि यह बात है कि 'तेरा घर सो मेरा घर' और साथ ही सिक्ख रियासत है। अतः बाबा जी ने इस बात पर एतबार करके गुरुद्वारा श्री दूख निवारन साहिब तथा बगीची बाबा राजू सिंघ जी शहीद, इन दोनों स्थानों पर अपने दल का उतारा किया। निहंग सिंघों का जत्था अभी आराम करने की तैयारियां ही कर रहा था कि पटियाला के राजा करम सिंघ ने अंग्रेजों से डरते हुए इन पर फौज चढ़ा दी। राजा की फौज ने तोपों से आग बरसानी शुरू कर दी। निहंग सिंघों ने डटकर मुकाबला किया तथा बाबा हनूमान सिंघ जी ने खुद हल्ला बोलकर तोप के मुंह में कंबल दिया तथा तोपचियों को झटकाया। यहां पर १५०० सिंघ

(शेष पृष्ठ 49 पर)

तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥

*-प्रो सुरिंदर कौर**

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि प्रभु-प्रेम-रंग में रंगी हुई आत्मा को देखकर, उनके साहचर्य में रहकर मेरी आत्मा भी प्रभु-प्रेम-रंग से सराबोर हो जाती है, मेरा मन भी उन्हें देख उत्सुक होकर यही प्रश्न पूछता है कि उस गुणों के सागर परमात्मा से मेरा मिलन कब होगा? यदि कोई प्रभु-प्रेम में रंगी आत्मा ही गुरबाणी के मर्म को समझ सकती है तो यह भी सच ही है कि कोई प्रेम में रंगी हुई आत्मा ही कुर्बानी दे सकती है। दोनों ही प्रेरणा का स्रोत बनते हैं और दोनों को देखकर उन तक पहुंचने का चाव मन में उत्पन्न होता है। सिक्ख इतिहास ऐसी ही प्रभु-प्रेम के रंग में रंगी हुई रूहों की दास्तान है, जिसमें चारों साहिबज़ादों का जीवन व शहादत सबसे ऊंचा प्रकाश-स्तंभ है, जिसे देखकर हज़ारों ने प्रेरणा ली और अपना जीवन संवार लिया।

यही कारण है कि हम साहिबज़ादों को आदर्श बनाकर वर्तमान पीढ़ी को भी उन्हीं की भांति आदर्श बनाना चाहते हैं। विशेषत: बच्चों और युवा पीढ़ी के सामने हम चारों साहिबज़ादों के जीवन को मानक बनाकर उनसे भी यही अपेक्षा रखते हैं। ऐसा कहा जाता है कि नींव मज़बूत हो तो उस पर खड़ा होने वाला भवन भी मज़बूत और चिरस्थायी होगा। सांचा सही हो तो पात्र का आकार भी सुडौल होगा। बीज अच्छा हो तो वृक्ष भी स्वस्थ और विशाल होगा। ये ऐसे उपमान हैं जिन्हें सहज व्यवहारिक जीवन में हर कोई जानता और अपनाता है, परंतु इन्हें केवल भौतिक जगत के संदर्भ में सीमित कर अपने धार्मिक व सामाजिक जीवन की अनदेखी भी करता है। इस समस्या से आज सभी धर्म जूझ रहे हैं। सिक्ख घरों में भी आज यह समस्या बड़ी चिंताजनक बनी हुई है।

धर्म व्यक्ति की विचारधारा का स्थायी आधार है व धार्मिकता व्यक्ति की जीवन-शैली। सिक्खी जीवन अपने आरंभ काल से विचारधारा और जीवन-शैली में सिक्खी को ढालकर संसार के सामने एक मानक जीवन पेश करता आया है। सिक्ख का कोई भी व्यवहार या कोई भी वचन ऐसा नहीं होता था जिसमें सतिगुरु की सिक्खी न झलके। एक ऐसा समय भी था जब सिक्ख चाहे कितने ही कष्टों में रहे, चाहे कितनी ही गरीबी में रहे, किंतु सिक्खी अमीर थी। आयु कोई बंधन नहीं थी। समूची कौम एकजुट होकर सिक्खी का अस्तित्व बचाने में लगी थी। बालक, युवक, स्त्री, पुरुष आदि का कहीं कोई भेदभाव नहीं था। सिक्ख चाहे घरों में रहे, चाहे जंगलों, बीहड़ों या रेगिस्तानों में; भूखे रहे, प्यासे रहे या उन्हें जान तक कुर्बान करनी पड़ी, पर कोई अपने उसूलों से पीछे नहीं हटा। पांच-पांच, सात-सात साल के अबोध बालक भी स्वेच्छा से शहीद हुए हैं, तो वहीं ९० साल के बुजुर्ग भी हंसते हुए कुर्बान हो गए, पर

**** 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, JijaMata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773***

धर्म से नहीं डिगे।

जिस कौम में आप गुरु साहिब जी के साहिबज़ादों और असंख्य बच्चों की शहादतें आज भी ज्वलंत उदाहरण हैं उस कौम को आज अपने बच्चों में धार्मिक ज्योति जगाने के लिए इतना संघर्ष और परिश्रम क्यों करना पड़ रहा है, जबकि साहिबज़ादों का इतिहास अभी तीन शताब्दी पहले का ही है? अन्य धर्मों में हज़ारों साल पहले का इतिहास आज भी जीवित है। सिक्ख कौम को क्यों अपनी निकटतम मौजूद घटनाओं की बार-बार याद नए सिरे से दिलाने की जरूरत पड़ती है?

आज वास्तव में हमें इस जटिल समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इस हालत के लिए एक साथ कई कारण जिम्मेदार हैं और उनके अपने स्तर पर कहीं न कहीं निदान भी संभव हैं। सबसे बड़ी ख़ामी तो आज हमारे पारिवारिक ढांचे में ही है।

आज अधिकांश सिक्ख घरों में दादा-दादी से लेकर पोते-पोतियों तक सारा परिवार किसी न किसी रूप में सिक्खी स्वरूप से विमुख है। परिवार चाहे गुरुद्वारे भी जाता हो पर अधिकांश युवा पीढ़ी गुरबाणी और गुरु-मर्यादा से पूरी तरह अनजान है। चूक कहीं न कहीं तीसरी और दूसरी पीढ़ी के बीच ही हुई है, जिसका सीधा असर आज की पीढ़ी पर पड़ा है। शायद यहीं से हम एक आदर्श सिक्खी मार्ग के स्थान पर बच्चों में अंधी महत्वाकांक्षा को बो रहे हैं। महत्वाकांक्षा यदि नियंत्रित हो तब तो प्रगतिशील होगी, पर यदि अनियंत्रित हो गई तो दिशाहीन हो जाएगी।

हमें जब-जब साहिबज़ादों के जीवन से दिशा लेने की बात कही जाती है तो हम सीधे तौर पर अपनी आज की पीढ़ी और साहिबज़ादों में तुलना करते हैं। बस, यही हमारी सबसे बड़ी भूल है। हम साहिबज़ादों के समूचे पारिवारिक परिवेश की तुलना नहीं करते, क्योंकि ऐसा करने से हमारी (बड़ों की) गलतियां भी सामने आएंगी। अगर ध्यान से देखें तो जन्म से लेकर शहादत तक चारों साहिबज़ादों के व्यक्तित्व के विकास में प्रत्यक्ष रूप से दो पीढ़ियों का योगदान रहा है। दादा श्री गुरु तेग बहादर साहिब व दादी माता गुजरी जी; स्वयं पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और माता सुंदरी जी। छोटे साहिबज़ादों के लिए तो उनके अपने बड़े भाई भी आदर्श रूप ही थे। इनमें से सभी ने केवल उपदेश ही नहीं दिए, बल्कि अपने जीवन को एक जीवंत प्रतिदर्श बनाकर सिक्खी का प्रचार किया। यही कारण है कि उस समय केवल गुरु साहिब के चार साहिबज़ादे ही नहीं वरन् उनका हर सिक्ख उन्हीं की भांति सिक्खी में परिपक्व था। हमें इस बात को बड़ी दृढ़ता से याद रखना होगा कि जीवन-दिशा कोरे उपदेशों द्वारा कभी नहीं दी जा सकती। कोरे उपदेश कुछ समय के लिए ही किसी को प्रभावित करते हैं।

प्राय: यह भी देखा गया है कि आज अधिकांश माता-पिता बड़ी आसानी से यह कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं कि साहिबज़ादे तो गुरु साहिब के बच्चे थे और हम साधारण इंसान हैं। ऐसा कहकर हम केवल अपनी जिम्मेदारी से हाथ धो लेते हैं और कुछ नहीं। एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि सिक्ख गुरु साहिबान ने संसार में आकर मानवीय सीमाओं में ही अपना जीवन व्यतीत किया है। न तो उन्होंने कभी किसी प्रकार के मिथिहासिक कारनामे किए और न ही अति मानवीय चमत्कार दिखाए। उन्होंने अपने धार्मिक व नैतिक उत्तरदायित्वों का शत-प्रतिशत निर्वाह किया है। आज भी हमें ऐसे हज़ारों बच्चे मिलते हैं जिनके दुनियावी शौक

नियंत्रित हैं। वे मर्यादा में रहकर जीवन बसर कर रहे हैं तथा उनके माता-पिता का उन पर सहज अकुंश है।

गुरु साहिबान ने अपने बच्चों को भी वही शिक्षा दी जिसका वे सबके लिए प्रचार करते थे, चाहे वह रास्ता कितना ही कठिन क्यों न हो। आज हम अपने बच्चों को एक ऐशो-आराम के दायरे से स्वयं ही बाहर नहीं लाना चाहते। सच तो यह है कि हम केवल उनका भविष्य बनाने में लगे रहते हैं और यह भूल जाते हैं कि बच्चे केवल भविष्य ही नहीं वर्तमान भी हैं। साहिबज़ादों के जीवन से हमें सबसे बड़ी सीख यही मिलती है कि उन्होंने भविष्य के साथ-साथ वर्तमान समय को भी बाखूबी पहचाना और वे वो सब कर गुज़रे, जिसके लिए हम कहते हैं कि हमारे बच्चे बहुत छोटे हैं, बड़े होकर समझ जाएंगे। साहिबज़ादों ने अपना वर्तमान ही ऐसा बनाया था जो कि अनंत काल तक भविष्य को भी प्रेरित करता रहा।

हमारी त्रासदी है कि हम एक अनदेखे भविष्य के लिए अपने सुनहरे वर्तमान को कौड़ियों के मोल गंवा देते हैं। यदि बचपन से ही हम बच्चों में गुरबाणी का बीज बोएं और उन्हें सिक्ख इतिहास से धीरे-धीरे अवगत कराएं तो निश्चित ही होश संभालते हुए बच्चे सिक्खी को सहज जीवन-शैली बनाएंगे। हम बचपन से दुनिया भर की शिक्षा बच्चों को देते हैं। स्कूली और गैर-स्कूली (खेल, संगीत, कलाएं आदि) सब सही है, पर उन्हें गुरमति जीवन नहीं देते। तर्क यही होता है कि बच्चे अभी छोटे हैं, बड़े होने पर जरूर समझ जाएंगे। युवा होने पर जब उनके साथ गुरमति की बात करते हैं तो वे उसे या तो मूलत: स्वीकारते ही नहीं हैं या उसे बाहरी सामाजिक व्यवहार मात्र समझते हैं। तब तक उनका जीवन दुनियावी तौर पर ढल चुका होता है जिसे बदलना सहज नहीं होता और उनके इस जीवन में गुरमति शामिल नहीं होती, क्योंकि मन अनेक विधाओं में बंट चुका होता है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥

(पन्ना ४६८)

स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में ज्यादा दोष बच्चों का नहीं है, उनके अभिभावकों का है, जो अपने बच्चों के ज़हन में सिक्खी का बीज बोने में विफल रहे हैं। यह तर्क तो बेबुनियाद है कि बच्चे नासमझ हैं या मानते नहीं हैं। कठिन भौतिक शिक्षा प्राप्त कर यही बच्चे सांसारिक रूप से तो सफल होते हैं, मगर गुरमति के पक्ष से पिछड़ जाते हैं, क्योंकि इसका बीज उनकी अंतरात्मा में बोया ही नहीं गया था। अब तो स्थिति यह है कि अधिकांश अभिभावक स्वयं भी समय की अंधी दौड़ में सिक्खी से दूर हो गए हैं, उनसे क्या उम्मीद रखी जाए?

दूसरी ओर यदि बच्चों की बात करें तो उनमें भी आज माता-पिता के प्रति कर्त्तव्य-पालन की भावना व आज्ञाकारिता का नितांत अभाव है। साहिबज़ादों का जीवन एक आदर्श संतान का जीवन है। सार्वभौमिक मानकों पर वे खरे उतरे थे। सिक्खी सिद्धांतों और कुर्बानी का महामंत्र साहिबज़ादों को जन्म-घुट्टी में मिला था, जो जीवन के हर क्षण में उनकी रग-रग में प्रवाहित रहा। यह कहना गलत नहीं होगा कि आज के बच्चे कुछ हद तक आलसी और स्वकेंद्रित हो गए हैं। टी. वी., इंटरनेट और मोबाइल ने जहां आज की पीढ़ी के भौतिक विकास में बड़ी भूमिका निभाई है, वहीं बच्चों द्वारा इनके अनियंत्रित और निरंकुश प्रयोग ने उनकी मानसिकता को विकृति और अति की ओर धकेला है। आज के बच्चे अधिक हिंसक

और कामवासना से ग्रस्त हो गए हैं। वास्तव में आधुनिक वैश्विक संस्कृति हमारी पूरी दुनिया को पास ले आई है, पर यह भी सच है कि इसने हमें हमारे घर में भी एक दूसरे से दूर कर दिया है। दुनिया की संस्कृति समझने की अंधी दौड़ में हम अपनी संस्कृति ही भूल गए हैं। यह कठोर विरोधाभास समसामयिक सच्चाई है।

कुछ हद तक इस समस्या के लिए बाहरी तथ्य उत्तरदायी हैं, जिनमें सबसे बड़ा हाथ पंथ-विरोधी शक्तियों का भी है। इसमें लंबे समय तक चलने वाला मुश्किल का दौर भी महत्त्वपूर्ण है। अंग्रेजों से संघर्ष के समय भी सिक्ख कौम ने देसी तत्वों द्वारा हिंदुओं और सिक्खों को एक ही धर्म का हिस्सा बताए जाने की नीतियों का विरोध किया था। एक बात ध्यान देने योग्य है कि अपने पांच सौ साल के इतिहास में सिक्खों को अपना वर्चस्व कामय रखने में लगातार संघर्ष करना पड़ा। ऐसे में केवल पंथ का जानी-माली नुकसान भी हुआ और कई बार पंथ का अस्तित्व भी खतरे में पड़ गया। आज़ादी के बाद पंजाब का विभाजन, भाषा के आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हमारी नदियों के जल का दुरुपयोग, १९८४ का घल्लूघारा और उसके बाद का काला दौर ऐसे ही कुछ प्रत्यक्ष वार हैं। बेशक हमने बहुत बुरा समय देखा है पर विश्व का समर्थन भी हमें ही मिला है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में एक बात कही थी-- "यदि किसी कौम को समाप्त करना है तो उसके इतिहास को समाप्त कर दो।" सिक्ख-विरोधी ताकतों ने इसका बाखूबी प्रयोग किया। सर्वप्रथम शिक्षा के माध्यम से सिक्खों के अस्तित्व पर प्रहार किया गया। छोटी उम्र के बच्चे वही सच मानते हैं जो वे अपने स्कूलों में सुनते हैं, अपनी पुस्तकों में पढ़ते हैं। वह सिक्ख बच्चा बेचारा अपनी कौम पर क्या फक्र करेगा जो अपनी पुस्तकों में अपनी कौम को केवल एक 'लुटेरी' और 'आतंकवादी' कौम के रूप में पढ़ता है।

यदि हम गुरुद्वारा साहिबान या अपनी शैक्षणिक संस्थाओं में पांच से दस वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विशेष 'इतिहास सत्र' आरंभ करें और उन्हें बचपन से इतिहास का प्रहरी बनाएं तो कदाचित वे साहिबज़ादों की महान विरासत को संभालने योग्य बन सकेंगे।

लचर संस्कृति (लचर कल्चर) फैशनप्रस्ती और अंधी फिल्मी नकल ने हमारी कौम की नई पीढ़ी को पूरी तरह से प्रभावित किया है। एक समय था जब पंजाब के युवक-युवतियां फौज, तकनीकी-क्षेत्र, खेल आदि को अपना व्यवसाय बनाने के सपने देखा करते थे और इसके लिए प्रयत्नशील भी होते थे, पर आज तो बच्चा-बच्चा फिल्मी हीरो, अलबम गायक या डांसर बनना चाहता है और हर बच्ची फिल्मी हीरोइन या टॉप की मॉडल बनना चाहती है। इसी अंधी दौड़ में आज की पीढ़ी सारी मर्यादाओं की हद को पार कर गई है। आज हमारे बच्चों की वेशभूषा, रहन-सहन, बोलचाल सभी असभ्य-सा होता जा रहा है।

हमारा कल्चर ऐसा था कि यदि आधी रात को मुश्किल में फंसी कोई दुश्मन की स्त्री भी किसी सिक्ख को देख लेती तो राहत की सांस लेती थी।

अगर किसी बर्तन में गंदगी लगी हो तो उसमें सीधे दूध नहीं डाला जाता। उसे धोकर, सुखाकर ही वह दूध रखने योग्य बनता है। श्री गुरु नानक देव जी का फरमान है :

भांडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥
(पन्ना ७२८)

हमें पंथक और पारिवारिक रूप से अपनी वर्तमान पीढ़ी के ज़हन से इस लचर कल्चर की गंदगी को धोकर साफ करना होगा, उसे जड़ से मिटाना होगा, उसके बाद ही उनमें गुरमति विचारधारा की पवित्र थाती (अमानत) रखी जा सकेगी।

आज आवश्यकता है कि हम अपनी वर्तमान पीढ़ी के दिल-दिमाग को बचपन से ही अपने पूर्वजों के अथक परिश्रम और असंख्य कुर्बानियों से अवगत कराएं। यह बात सहज है कि चारों साहिबज़ादों के जीवन और शहादत का प्रभाव उनके जीवन पर सबसे अधिक पड़ता है, क्योंकि बच्चे उनके हमउम्र ही होते हैं। इसके लिए सिक्ख घरों में माता-पिता, सिक्ख संस्थानों में शिक्षक और गुरुद्वारों में प्रचारक साहिबान आदि अपने-अपने स्थान पर स्थिति को युद्ध स्तर पर समझते हुए अपने मोर्चे संभाल लें। एक साथ काम करने से निश्चित ही प्रभाव सकारात्मक पड़ेगा।

समस्या विकट अवश्य है, परंतु प्रयत्न करने से आने वाला भविष्य इससे बेहतर अवश्य होगा। हमें अपने पारिवारिक माहौल को भी गुरमति की रंगत देनी होगी, बच्चों में बचपन से ही गुरबाणी का बीज बोना होगा। यह सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी। श्री गुरु अरजन देव जी कहते हैं :

बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ (पन्ना ४६८)

एक बार बच्चे के मन में गुरबाणी बस जाए तो ऐसा बच्चा कभी सिक्खी से नहीं डोलेगा और यदि डोलने लगा भी तो गुरु-स्वरूप बाणी स्वयं उसे लौटा लाएगी। यदि हम ऐसा करने में सफल हो जाते हैं तो हमारे बच्चे साहिबज़ादों की महान विरासत को संभालने योग्य बन सकेंगे। जब उनकी अंतरात्मा में गुरबाणी बस जाएगी तब हमें बार-बार उन्हें साहिबज़ादों का महान जीवन याद नहीं कराना पड़ेगा। वह आदर्श उनके मानस पटल पर सहज ही बहुत गहराई तक अंकित हो जाएगा और हमारे बच्चे भी उन्हें (साहिबज़ादों को) देखकर कह उठेंगे :

तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ (पन्ना ७०३)



बाबा हनूमान सिंघ जी शहीद

(पृष्ठ 44 का शेष)

शहीद हुए। इन शहीद सिंघों की यादगार गुरुद्वारा दूख निवारन साहिब के पास ऐतिहासिक वट वृक्ष तले है। बाबा जी यहां से घुड़ाम की तरफ चले गए। यहां पर भी अंग्रेज फौज से सामना हुआ। घुड़ाम में बाबा जी को तोप का एक गोला लगा जिससे वे गंभीर रूप से ज़ख्मी हो गये। ज़ख्मी हालत में भी बाबा जी दुश्मनों का मुकाबला दिलेरी से करते रहे। यहां से आप राजपुरा से होते हुए कुंबड़ा-सोहाणा पहुंच गये। कुंबड़ा, सोहाणा साहिबज़ादा अजीत सिंघ नगर (अजीतगढ़, मुहाली) ज़िले का गांव चंडीगढ़-सरहिंद सड़क पर आबाद है। रेलवे स्टेशन चंडीगढ़ यहां से १३ किलोमीटर की दूरी पर है। इस स्थान पर भी घमासान लड़ाई हुई तथा बाबा हनूमान सिंघ जी ५०० सिंघों सहित १८४६ ई में शहीद हो गए। इन शहीद सिंघों का अंतिम संसकार सोहाणा में ही किया गया। यहां इन शहीद सिंघों की याद में साढ़े चार एकड़ में बहुत ही आलीशान इमारत सुशोभित है। बाबा हनूमान सिंघ जी ने ११ वर्ष बुड्ढा दल के मुख्य सेवादार के रूप में सेवा-संभाल की। 

कविताएं

श्रेष्ठ बुद्धि मानव कहो, कैसा रचा समाज?

नैतिकता अब ढूंढती, रहने को घर-द्वार।
भौतिकता ने कर दिया, घर को भी बाज़ार।
सब कुछ है बाज़ार तो दिल भी है दुकान।
बिन पैसे की भावना, न पाती स्थान।
भोलेपन को मूर्खता, कहता अब इंसान।
भोले बच्चों में नहीं, देखे अब भगवान।
सच्चे लोगों पर हंसें, झूठे-बेईमान।
भूल रहे कि कर्म सब, देख रहा भगवान।
शिक्षा में अब न रहा, सद्चरित्र पर ध्यान।
सबका सपना एक ही, बनना है धनवान।
न्याय-व्यवस्था बन गई, कठपुतली बेजान।
ताकतवर जब चाहता, खींचे डोरी तान।
राजनीति सौदा हुई, बिकता है ईमान।
राज बचाने को करें, नीति का बलिदान।
धर्म-मर्म बिसरा दिया, कर्मकांड पर ज़ोर।
कलुषित मन का ध्यान है, आडंबर की ओर।
जिस कुदरत की गोद में, बैठा है इंसान।
कतरा-कतरा नोचता, सोचे न अंजाम।
बूंद-बूंद करके अगर, घड़ा एक भर जाये।
बूंद-बूंद चूकर वही, खाली भी हो जाये।
रिश्तों को भी लग गया, स्वार्थ-भाव का रोग।
स्वार्थ साधने को करें, रिश्तों का उपभोग।
प्रेम-बंध होते शिथिल, टूटें सब मर्याद।
ताना-बाना हो रहा, शनैः-शनैः बर्बाद।
श्रेष्ठ बुद्धि मानव कहो, कैसा रचा समाज?
दिल से पूछो क्या तुम्हें, सच में इस पर नाज?
पड़ा हुआ जो बुद्धि पर, परदा तुरत हटाओ।
है विकास यह खोखला, मत इस पर इतराओ।
आयेगी सद्बुद्धि जब, प्रेम दिलों में होगा।
स्वार्थ नहीं परमार्थ से, अनुप्राणित सब होगा।
तब उन्नति के पंथ का, मानव पथिक बनेगा।
होता है आनंद क्या, अनुभव तभी करेगा।

आखिर हम इंसान हैं!

गिर गए हैं तो उठ सकते हैं,
कमज़ोरी से लड़ सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
मुश्किल को हल सकते हैं,
सपनों को सच कर सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
अंतर्मन की सुन सकते हैं,
लक्ष्य-राह खुद चुन सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
ऊसर उर्वर कर सकते हैं,
सूखे में रस बना सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
मृण में स्वर्ण उगा सकते हैं,
धरती स्वर्ग बना सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
सागर को हम मथ सकते हैं,
पर्वत पर हम चढ़ सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
प्रेम-सुधा बरसा सकते हैं,
करुणा-धार बहा सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
निराश में आशा भर सकते हैं,
दुखियों का दुख हर सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
ग़म सारे बिसरा सकते हैं,
हर्ष-बिंदु छलका सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!
आशा-दीप जला सकते हैं,
हिय में कमल खिला सकते हैं,
आखिर हम इंसान हैं!



-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.)। मो. : ०९४११६०७६७२

गुरबाणी चिंतनधारा : ६५

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

असटपदी नौवीं

सलोकु ॥

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥
सरब मै पेखै भगवानु ॥
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥

(पन्ना २७४)

उपरोक्त सलोक में गुरु पंचम पातशाह जी ने वास्तविक पवित्र हृदय वाले व्यक्ति के लक्षण बताए हैं। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति अपने हृदय घर में अकाल पुरख परमेश्वर का नाम स्थायी रूप से बसा लेता है तथा ईश्वर की सर्वव्यापकता को पहचानता है अर्थात जर्रे-जर्रे में बसे उस प्रभु के दर्शन करता है; हर पल मालिक प्रभु को नमस्कार करता है, सदैव उसके चरणों में नत्मस्तक रहता है, वह व्यक्ति वास्तव में निर्लेप है, माया के प्रभाव से अछूता है। वह (संत पुरुष) समस्त जीवों को संसार रूपी भवसागर से पार उतारने में सक्षम है।

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥
साध की टहल संतसंगि हेत ॥
करन न सुनै काहू की निंदा ॥
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥
मन की बासना मन ते टरै ॥
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥

नौवीं असटपदी की पहली पउड़ी में धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी ने 'अपरस' जीव के विलक्षण गुणों का वर्णन किया है और स्पष्ट किया है कि ऐसे गुणों का मालिक कोई करोड़ों में से एक होता है। ऐसा कोई विरला मनुष्य होता है जो वास्तव में अपरस है अर्थात् जो तन-मन के समस्त विकारों को त्यागकर समस्त आध्यात्मिक गुणों को मनसा-वाचा-कर्मणा अर्थात् मन-वाणी-कर्म को अपनाकर निर्मल आत्मा, नीर-क्षीर-विवेक बुद्धि वाला होता है। गुरु जी ने ऐसे माया से निर्लेप साधु पुरुष के गुणों की अभिव्यक्ति की है।

पंचम् पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो व्यक्ति जिह्वा (जीभ) को झूठ से स्पर्श नहीं करने देता अर्थात् किसी भी परिस्थिति में असत्य नहीं बोलता, जिसके हृदय में सदैव उस परिपूर्ण परमेश्वर के दर्शन की अभिलाषा रहती है अर्थात् जिसके मन में निरंजन (माया से निर्लेप) प्रभु के दीदार की प्रीति समाई रहती है, जो पराई स्त्री का रूप-सौंदर्य बुरी नज़र से नहीं देखता, जो संत पुरुषों की सेवा में तत्पर रहता है अर्थात् भले पुरुषों की टहल-सेवा करता है, जिसके कान पराई निंदा नहीं सुनते अर्थात् वह अपने कानों से किसी की निंदा को हरगिज़ नहीं सुनता, जो स्वयं को सबसे तुच्छ समझता है, वह गुरु की कृपा से विकारों के विष (ज़हर) से मुक्त रहता है अर्थात् वो विषय-विकारों तथा माया रूपी जहर को अपने से दूर ही रखता है।

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

उसकी मन की सारी वासनाएं मन से टल जाती हैं। ऐसा व्यक्ति इंद्रियों को वश में रखता है और पांच विकारों के रोग से मुक्त हो जाता है। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि करोड़ों में से कोई ऐसा विरला व्यक्ति ही 'अपरस' (माया से निर्लिप्त) कहा जाता है।

वास्तव में सारा संसार काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे महा विकारों में लिप्त होकर अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। संसार में कोई विरला ही इन विकारों से पूर्णतया मुक्त है। गुरबाणी में बारंबार जीव को हिदायतें दी गई हैं कि इन पांच विकारों में से एक भी विकार जीव की आत्मिक पूंजी का विनाश कर देता है। किसी भी जीव में इनमें से एक विकार की प्रबलता ही उसकी मौत का कारण बन जाती है। विचारणीय तथ्य यह है कि विकारों से ग्रसित व्यक्ति के अच्छे जीवन की आशा कैसे जा सकती है? भक्त रविदास जी की बाणी का उदाहरण इस भाव का सटीक स्पष्टीकरण है, यथा :

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥
(पन्ना ४८६)

अर्थात् हिरण, मछली, भंवरा, पतंगा तथा हाथी में तो एक-एक अवगुण (विकार) है और यही उनके विनाश का कारण बन जाता है, लेकिन मनुष्य, जिसमें ये पांचों ही विकार (दोष) भरे पड़े हैं, उसके आध्यात्मिक जीवन वाला बने रहने की आशा नहीं लगायी जा सकती।

उपरोक्त पांच विकारों से मुक्त कोई विरला ही है, प्रभु-कृपा से जो 'अपरस' है। प्रभु-कृपा से ऐसे व्यक्ति में समस्त ईश्वरीय गुण मौजूद हैं, लेकिन विनम्रता के कारण वह स्वयं इन गुणों का लेश मात्र भी अहंकार नहीं करता और स्वयं को सबसे निम्न समझता है :

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥
बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥
करम करत होवै निहकरम ॥
तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥
काहू फल की इछा नही बाछै ॥
केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥
नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥

नौवीं असटपदी की दूसरी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने वैष्णव को गुरमति आशयानुसार परिभाषित किया है कि वास्तव में वैष्णव कहलाने का अधिकारी वो है जिसमें निम्नलिखित विशिष्ट गुणों का समावेश हो। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो मनुष्य ईश्वर का सच्चा उपासक है उस पर प्रभु की रहमत भरी प्रसन्नता बनी रहती है अर्थात् सच्चा वैष्णव वही है जिस पर प्रभु प्रसन्न है तथा जो स्वयं को माया से निर्लेप रखता है। ऐसा वैष्णव (ईश्वर-भक्त) कर्म करता हुआ भी कर्म-फल के प्रभाव से मुक्त है अर्थात् कर्म करते हुए उसके फल की कामना नहीं रखता। उस वैष्णव का धर्म पवित्र है अर्थात् उसकी करनी निर्मल है। सच्चा वैष्णव वही है जो कर्म तो करता है लेकिन किसी भी तरह के फल की इच्छा नहीं रखता। उसका मन केवल और केवल ईश-भक्ति और गुरबाणी कीर्तन में मग्न रहता है। उसके तन और मन में अर्थात् रोम-रोम में उस प्रभु का सिमरन चलता रहता है जो समस्त जीवों पर दया करता है। वह स्वयं भी ईश्वर का नाम जपता है तथा दूसरों को भी नाम जपाता है अर्थात् स्वयं भी नाम का अभ्यासी है तथा दूसरों को भी प्रभु-नाम ही दृढ़ करवाता है। पंचम पातशाह पावन फरमान

करते हैं कि ऐसा वैष्णव मुक्ति प्राप्त करके प्रभु में ही समा जाता है अर्थात् ऐसा जीव उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है। वास्तव में निष्काम भाव से भक्ति करने वाला ही वैष्णव कहलाने का अधिकारी है क्योंकि ऐसा भक्त कर्म का त्याग नहीं करता अपितु निःस्वार्थ भाव से फल की इच्छा का त्याग कर देता है जिसके फलस्वरूप उसकी करनी निर्मल हो जाती है और यही सच्ची साधना है। गुरबाणी में अन्य भी इसी भाव के दर्शन होते हैं, यथा :

दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥
(पन्ना ७०९)

जिस जीव पर प्रभु कृपा करते हैं वही माया के दुष्प्रभाव से बच सकता है।

भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥
करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पातशाह ने वास्तविक भक्त के विलक्षण गुणों का ज़िक्र किया है। गुरुदेव पावन फरमान करते हैं कि भगवान का असली उपासक (वास्तविक भक्त) वही है जो प्रभु-रंग में सराबोर है अर्थात् पूरी तरह रंगा हुआ है। जिस हृदय में प्रभु के प्रति इतना प्यार है ऐसा भक्त समस्त दुष्टों, विकारियों को त्याग देता है। असली भक्त वही है जिसके मन से सब तरह का वहम-भ्रम मिट जाये अर्थात् वो पूर्णतया संशय से मुक्त हो जाये। जो कण-कण में ईश्वर की विद्यमानता को जानता हुआ अर्थात् उसकी सर्वव्यापकता के बोध से उसकी पूजा करे, उन भक्तों की, साधु-जनों की संगत में जाने से पापों की मैल दूर हो जाती है। जो नित्य प्रभु की आराधना करता है, जो प्रभु-प्रेम में अपना तन-मन न्यौछावर कर देता है, जो प्रभु के चरणों को अपने हृदय में बसा लेता है, गुरु पंचम पातशाह फरमान करते हैं कि ऐसा उपासक (उपरोक्त गुणों वाला भक्त) परमेश्वर को पा लेता है।

उपरोक्त दोनों ही पउड़ियों में गुरु साहिब ने भगउती तथा वैष्णव की सच्ची परिभाषा बतलाते हुए स्पष्ट किया है कि केवल बाहर की अर्थात् तन की पवित्रता या शुद्धता से कोई प्रभु का भक्त नहीं बन सकता अपितु तन और मन से समस्त विकारों का त्याग करके जो प्रभु-भक्ति में हर पल लीन रहता है वही सच्चा भक्त है। जिसने समस्त विकारों तथा शंकाओं से मुक्ति पा ली है, जो प्रभु-चरणों को हृदय में बसाकर प्रभु का ही रूप हो गया है, वही सच्चा प्रभु-भक्त है। गुरबाणी में भगउती के लक्षण श्री गुरु अमरदास जी ने भी भक्त की महिमा करते हुए रूपायित किये हैं :

सो भगउती जुो भगवंतै जाणै ॥
गुर परसादी आपु पछाणै ॥
धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥
जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥
ऐसा भगउती उतमु होइ ॥
नानक सचि समावै सोइ ॥ *(पन्ना ८८)*

यही नहीं, प्रभु के सच्चे भक्त का प्रभु पर अटल विश्वास होना, उसका उपासक होना तथा उसमें एक रूप होने की पहली शर्त है, क्योंकि गुरबाणी आशयानुसार शंकालु हृदय विकारी हो जाता है और विकारी हृदय निरंकार में समाहित नहीं हो सकता है।

गुरबाणी का पावन संदेश है :

सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥

(पन्ना ९१९)

वास्तव में शंकालु हृदय की स्थिति दो-फाड़ (टुकड़े) हुए बीज जैसी होती है। जैसे दो खंडों में विभाजित हुआ बीज अंकुरित होने की सामर्थ्य खो बैठता है, चाहे वो कितनी भी उत्तम किस्म का क्यों न हो, ठीक वैसे ही शंका, भ्रम, वहम, अविश्वास से दो-फाड़ हुआ मन प्रभु-प्रेम में न तो अंकुरित होता है और न ही पल्वित-पुष्पित होता है; छायादार व फलदार वृक्ष बनकर दयालु प्रभु सबको सुख देता है।

सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥
राम नामु आतम महि सोधै ॥
राम नाम सारु रसु पीवै ॥
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥
बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥
सूखम महि जानै असथूलु ॥
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥

उपरोक्त पउड़ी में गुरु पातशाह ने सच्चे पंडित (विद्वान) को परिभाषित किया है और स्पष्ट किया है कि *"पर उपदेस कुशल बहुतेरे ॥"* दूसरों को उपदेश देने में तो बहुत लोग किताबी ज्ञान से महारथ हासिल कर लेते हैं लेकिन सच्चा पंडित वो है जो स्वयं को समझाता है।

गुरु पंचम पातशाह नौवीं असटपदी की चौथी पउड़ी में फरमान करते हैं कि वास्तविक पंडित वही है जो अपने मन को सच्चा ज्ञान देता है, अपने मन को प्रबोधित करता हुआ परमेश्वर के नाम को अपने अंदर खोजता है। वह प्रभु-नाम के अमृत-रस का आस्वादन करता रहता है अर्थात् प्रभु-नाम की आराधना करता हुआ उसके आनंद का अनुभव करता रहता है और यही उसकी आत्मा का आधार बन जाता है। ऐसे पंडित के उपदेश से सारी दुनिया को आत्मिक खुराक मिलती है। (यह खुराक आध्यात्मिक बल प्रदान करती है जिसकी बदौलत जीव नाम-अभ्यास से जुड़ कर अपने जीवन-मनोरथ में सफल हो जाता है।) ऐसा पंडित हरि-नाम की केवल महिमा ही नहीं करता, अपितु उसे हृदय में भी बसा लेता है। (फलस्वरूप) ऐसा पंडित जन्म-मृत्यु के चक्कर से पूर्णतया मुक्त हो जाता है, आवागमन में नहीं पड़ता। ऐसा पंडित वेदों, पुराणों और स्मृतियों (समस्त धार्मिक ग्रंथों) के मूल तथ्य को समझ लेता है और उसे यह भली-भांति ज्ञान हो जाता है कि सारा दृश्यमान जगत (स्थूल ब्रह्मांड) अदृश्यमान के सूक्ष्म रूप में समाया हुआ है, जो चारों वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को समान रूप से उपदेश देता है अर्थात् बिना किसी जाति-वर्ण-भेद के उसका उपदेश सबके लिए सांझा है। पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि ऐसे पंडित के समक्ष हमारी नमस्कार है अर्थात् उसके सामने सब नत्मस्तक हैं। गुरबाणी कर्म-फिलासफी पर बल देती है जहां केवल अपने कर्मों का ही लेखा-जोखा है। इसमें जात-पात, ऊंच-नीच, छोटे-बड़े किसी तरह का कोई भेद नहीं। महान ग्रंथ की बाणी समस्त धर्मों के लोगों के हित के लिए रचित हुई है, यथा गुरबाणी प्रमाण है :

खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥
गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥ *(पन्ना ७४७-४८)*



गुर सिखी बारीक है . . . २०

–डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

"नानक नाम चढ़दी कला" गुरसिक्ख द्वारा अकाल पुरख के समक्ष प्रतिदिन की जाने वाली अरदास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इस छोटे से वाक्य को थोड़ी गंभीरता से विचारकर देखें तो उन बहुत से सवालों के उत्तर मिल जाते हैं जो किसी भी जिज्ञासु के मन में सहज ही चलते रहते हैं। 'चढ़दी कला' एक ऐसी आत्मिक अवस्था है जिसकी खोज में साधारण लोगों ने ही नहीं, बड़े-बड़े ऋषियों-मुनियों, साधु-जनों और तपस्वियों ने अपने कई जीवन गुजार दिये। यह अवस्था फिर भी उन्हें प्राप्त नहीं हुई। वास्तव में इस आदर्श अवस्था की कोई निश्चित परिकल्पना ही उनके सामने नहीं थी। पहली बार श्री गुरु नानक देव जी ने एक ऐसी स्थिति का विचार लोगों के सामने रखा जिसमें आनंद ही आनंद हो और जो सहज ही प्राप्त भी किया जा सके। श्री गुरु नानक देव जी ने स्वयं और उनके पश्चात सभी गुरु साहिबान ने न केवल अपने विचार वरन व्यवहार से भी चढ़दी कला का उज्जवल स्वरूप सिद्ध किया। चढ़दी कला को शाब्दिक अर्थ में समझें तो यह मनुष्य की ऐसी अवस्था है जब आनंद की अनुभूति उसकी सांस-सांस में बस जाती है और आत्मा की उच्चता का क्रम आरंभ हो जाता है। जब सारे आवेग शांत हो जायें, विकार वश में हो जायें, विचलन समाप्त हो जाये, तब ऐसी अवस्था बन पाती है। इस अवस्था को पाने की जो सहज राह गुरु साहिबान ने बताई वो थी–– 'प्रेम की राह।' जब गुरसिक्ख परमात्मा से प्रेम का सम्बंध बना लेता है और प्रेम-भक्ति से परमात्मा को मन में बसा लेता है तब परमात्मा की कृपा से वह आवागमन के फेर से मुक्त होने की कामना करने लगता है। वह इसके अलावा और कुछ नहीं चाहता। यही उसकी आत्मिक उन्नति का द्वार खोल देती है :

गुरमुखि सुख फल पिरम रसु हुइ गुरसिख मेला।
सबद सुरति परचाइ कै नित नेहु नवेला।
वीह इकीह चड़ाउ चड़ि सिख गुरु गुरु चेला।
अपिउ पीऐ अजरु जरै गुर सेव सुहेला।
जीवदिआ मरि चलणा हारि जिणै वहेला।
सिल अलूणी चटणी लख अंम्रित वेला।
(वार १३:१४)

उपरोक्त वचन में भाई गुरदास जी ने चढ़दी कला की ओर ही इंगित किया है। वे चढ़दी कला को *"नित नेहु नवेला"* के रूप में देख रहे हैं। जब हम किसी से प्रेम करते हैं तो मन आनंद से भर उठता है। सांसारिक प्रेम घटता-बढ़ता रहता है और उसी के सापेक्ष आनंद भी कम या अधिक होता जाता है। सांसारिक प्रेम परिस्थितियों पर निर्भर करता है, उसका कोई निश्चित आधार नहीं होता। गुरसिक्ख का परमात्मा से प्रेम सांसारिक परिस्थितियों से ऊपर होता है और उसकी एक निर्धारित दिशा होती है। वह व्यवहार और विचार दोनों स्तरों पर परमात्मा से जुड़कर जब प्रेम के मार्ग पर

**E-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो. : ९४१५९६०५३३*

चलता है तो आनंदमय हो जाता है। इस राह पर चलने के लिए वह अपने स्व का समर्पण और सांसारिक कामनाओं का त्याग कर देता है, इसलिए उसमें विश्वास दृढ़ हो जाता है और वह सभी संशयों से मुक्त होकर आगे बढ़ता है। उसके विकार विहीन, कामना विहीन मन में प्रेम भरपूर हो जाता है और यह प्रेम नित्य बढ़ता जाता है साथ में आनंद और आत्मिक उच्चता भी। इस प्रेम को बनाये रखने के लिए वह कुछ भी कर गुज़रता है और सारी बाधाओं तथा संकटों को पार कर लेता है। परिस्थिति कोई भी हो उसका प्रेम और आनंद कम नहीं होता, बल्कि बना रहता है और निरंतर बढ़ता जाता है। गुरसिक्ख की अवस्था ऐसी हो जाती है कि वह हर समय अपने प्रियतम परमात्मा की बात ही करना और सुनना चाहता है :

तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥
मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥
किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥
ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥
ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥
नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥ *(पन्ना ११०७)*

गुरसिक्ख अपना सर्वस्व सतिगुरु को अर्पण करके समस्त विकारों से मुक्त अर्थात् पवित्र हो जाता है। इस पवित्र तन-मन के साथ जब वह परमात्मा से प्रेम की डोर को जोड़ता है तो वह परमात्मा के प्रेम रस से सराबोर हो जाता है। वह परमात्मा के प्रेम रस में ऐसा डूबता है कि पल भर के लिए भी अपने प्रियतम परमात्मा को अपने से दूर करना उसे स्वीकार नहीं होता। वह परमात्मा के बिना रह नहीं पाता। परमात्मा के बिना उसे कोई भी अपना नहीं लगता। उस अपने को वह सदैव अपने मन में, अपनी चेतना में बसाये रखना चाहता है। परमात्मा का आनंद बढ़ता जाता है। वह पल-पल परमात्मा पर बलिहार जाता है और परमात्मा को अपने जीवन का आधार बना लेता है। गुरसिक्ख का जीव ऐसा बन जाता है कि सारे सांसारिक सुख उसे मिथ्या जान पड़ते हैं। जिस आनंद के लिए वह भटकता है, वह आनंद वो घर बैठकर परमात्मा के स्मरण में पा लेता है :

बरसै अंम्रित धार बूंद सुहावणी ॥
साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥
हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥
घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥
नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ *(पन्ना ११०७)*

गुरसिक्ख जब प्रेम करता है तो परमात्मा की कृपा उसे सहज ही प्राप्त हो जाती है जो बड़े जप-तप, त्याग, सन्यास से भी नहीं मिल पाती। प्रेम-भक्ति में लीन गुरसिक्ख पर परमात्मा अपनी कृपा की ऐसी वर्षा करता है कि उसका जीवन-पथ सुहावना हो जाता है।

सांसारिक वस्तुएं और उपलब्धियां हासिल करके भी मनुष्य का जीवन सहज और सुखपूर्ण नहीं होता। बड़े समृद्धिशाली और शक्ति-सम्पन्न लोगों का जीवन भी दुख से भरा होता है। उन्हें कोई न कोई वेदना, कष्ट होता ही है जिससे सब कुछ फीका हो जाता है। गुरसिक्ख के पास कुछ भी न होते हुए भी परमात्मा के प्रेम का रस होता है जिससे वह सहज ही सुख पाता है।

चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥
बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़े ॥
पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥
कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥
भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥
नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥ (पन्ना ११०८)

उपरोक्त शबद में बसंत ऋतु का वर्णन है जिसे पूरे वर्ष का सबसे सुखद काल माना जाता है। बसंत में सारी धरती फूलों से लद जाती है और भंवरे इन फूलों के प्रेम में मंडराते हुए दृश्य को और मनोहारी बना देते हैं। कोयल की मीठी कूक वातावरण में अलग सरसता उत्पन्न करने लगती है। घर की दहलीज़ तक उतर आया यह मनोहारी दृश्य भी इसलिए मन में उमंग नहीं उत्पन्न करता क्योंकि प्रियतम घर में नहीं है। मन उसके घर लौट आने की कामना करता है ताकि विरह से दुखी वह शांत हो सके और मनोरम बसंत का सुख-आनंद ले सके। गुरसिक्ख का प्रियतम परमात्मा है। जब वह मन रूपी घर में आ विराजा है तो सारे दुख मिट गये हैं और मन में बसंत-सी प्रफुल्लता छा गयी है। परमात्मा का प्रेम जब मन में फूल बनकर खिलता है तो बसंत आ जाती है।

ग्रीष्म ऋतु के कारण ज्येष्ठ का महीना कष्टदायक माना गया है :

थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ (पन्ना ११०८)

इस महीने में पूरी धरती इतनी तपने लगती है कि राहत के लिए लोग विह्वल हो उठते हैं। गुरसिक्ख पर इस विकटता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि वह परमात्मा के प्रेम में लीन है और उसकी चढ़दी कला (आत्मिक उच्चता) ने उसके आनंद को इतना बढ़ा दिया है कि सांसारिक कष्ट उसे छू भी नहीं पाते।

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥
जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥
जो प्रभि कीते आपणे सोई कहीअहि धंनि ॥
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥ (पन्ना १३४)

ज्येष्ठ माह की तपन बुरी तरह विह्वल कर देती है। इससे बचने का मार्ग है परमात्मा की शरण में जाना, जो सर्व समर्थ है और जिसके समक्ष सारी आपदाएं हथियार डाल देती हैं। गुरसिक्ख परमात्मा से जुड़कर इस आपदा से भी सहज ही पार पा लेता है और तपता हुआ ज्येष्ठ का महीना भी उसके लिए रंग भरे मौसम के समान हो जाता है। परमात्मा का प्रेम किसी भी दुख को रहने नहीं देता। उसके साथ रहने से कोई भी अभाव नहीं रहता। गुरसिक्ख हर समय आनंद में रहता है। जब सारी लीला परमात्मा की ही है तो उससे बड़ा आसरा और क्या हो सकता है? यदि उसकी शरण नहीं है तो दुख ही दुख हैं :

पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥
सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥
हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥
नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥ (पन्ना ११०८)

सावन के महीने में गरजती हुई बिजली अकेली स्त्री को डराती है। ऐसे में शैया पर अकेले लेटना घोर दुखदायी होता है, न तो नींद आती है, न भूख लगती है, न ही सजना-संवरना अच्छा लगता है। वैसा ही हाल उस मन का है, जिसमें परमात्मा का प्रेम नहीं है, ज़िंदगी नीरस और दुष्कर हो जाती है। जिस गुरसिक्ख के मन में परमात्मा के प्रेम की रस-धार बहती है, परमात्मा द्वारा उसे गले लगा लेने से उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं। मनमुख की नींद और भूख उड़ाने वाला सावन गुरमुख के लिए सरस हो जाता है :

सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥
हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥

(पन्ना १३४)

गुरसिक्ख परमात्मा की कृपा से उसकी शरण में जाकर उसको अपने जीवन का आधार बना लेता है और उसके सच-रंग में अपने तन-मन को रंग लेता है। उसे सांसारिक सुख व्यर्थ दिखने लगते हैं और परमात्मा-प्रेम की एक बूंद भी उसे सावन की अनगिनत फुहारों से अधिक सुहानी व सुख देने वाली लगती है, जिसका सुख वह साधसंगत में उठाता है। सावन तो कुछ समय के लिए ही धरती को लहलहा देता है, किंतु परमात्मा के संग में हर पल सावन का सरस हो जाता है और उसका जीवन सफल हो जाता है।

मन में परमात्मा के प्रेम का आधार और विश्वास देखिए कि श्री गुरु अरजन देव जी तपते हुए लोहे की देग पर बैठाये जाने पर भी अडोल रहे; श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने चांदनी चौक में शांतचित्त परमात्मा का स्मरण करते हुए बलिदान दे दिया। यह परमात्मा का प्रेम ही था जिसके अधीन अपने पूरे परिवार का बलिदान देने वाले महादानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी यह कह सके कि उनके छोटे-छोटे चार सपुत्र नहीं रहे तो क्या हुआ, कई हज़ार सपुत्र अभी भी जीवित हैं। बाबा बंदा सिंघ बहादर से लेकर आज तक बलिदानों का एक लंबा इतिहास है जो विश्व की किसी अन्य कौम के पास नहीं है और अपनी इस विरासत पर सिक्ख कौम को साधिकार गर्व है। इन बलिदानों का ढंग अलग-अलग था और वे समय-समय पर गुरु साहिबान से लेकर उनके महान सिक्खों द्वारा दिये गये, किंतु इन बलिदानों में एक तत्व समान था और वो थी सहजता। हर बलिदान के पीछे एक सच्ची उमंग थी, तत्परता थी और एक सदाशयता थी सच का साथ देने की। मन में परमात्मा के प्रेम का रंग इतना गहरा था कि सारे कष्ट मानो निष्प्राण हो उठे थे। चढ़दी कला के आत्म-बल ने दुखों को बेमानी कर दिया :

सभ को काल सभन को करता ॥
रोग सोग दोखन को हरता ॥
एक चित जिह इक छिन धिआइउ ॥
काल फास के बीच न आइउ ॥

(अकाल उसतत)



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ४

सरदार बहादर महिताब सिंघ

*-स. रूप सिंघ**

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी श्री अमृतसर के अध्यक्ष की पदवी पर शोभनीय रहे दरवेश, दानिशमंद, दूरदर्शी, सिक्ख राजनीतिज्ञ, सिक्ख विचारधारा को समर्पित प्रसिद्ध सिक्ख वकील स. महिताब सिंघ का जन्म स. हजूर सिंघ तथा बीबी करम कौर के घर १८७९ ई में गांव हडाली, ज़िला शाहपुर, पश्चिमी पंजाब में हुआ। अभी आप मात्र चार वर्ष के ही थे कि इनके पिता परलोक गमन कर गए। प्राथमिक शिक्षा इन्होंने गांव के स्कूल से प्राप्त की। भेरे के मिडल स्कूल से आठवीं कक्षा पास कर १८९५ ई में दसवीं सेंट्रल मॉडल स्कूल लाहौर से पास की। उच्च शिक्षा की रुचि होने पर और पारिवारिक स्थिति ठीक होने के कारण ये वकालत की पढ़ाई करने के लिए इंग्लैंड चले गए। तीन वर्ष के बाद स. महिताब सिंघ बैरिस्टर-इन-लॉ बनकर पंजाब पहुंचे तथा शाहपुर ज़िला कचहरी में वकालत शुरू कर दी। थोड़े समय के बाद ही १९१० ई में इन्होंने सरकारी वकील बनकर फिरोज़पुर एवं लाहौर में सेवा की। स. महिताब सिंघ की ईमानदारी एवं सेवा को सम्मुख रखते हुए अंग्रेज सरकार ने इन्हें कई प्रकार के मान-सम्मान दिए, जिनमें 'सरदार साहिब' तथा 'सरदार बहादर' की उपाधि भी शामिल थी।

शाहपुर में वकालत करते समय इन्होंने खालसा स्कूल तथा गुरुद्वारा बनाने में अहम योगदान डाला। चीफ़ खालसा दीवान तथा अन्य सामाजिक जत्थेबंदियों के सदस्य रहे स. महिताब सिंघ गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में शामिल होने से पूर्व १९१९ ई में पंजाब कौंसिल के सदस्य निर्वाचित हुए। १९२० ई में स. महिताब सिंघ पंजाब कौंसिल के डिप्टी चेयरमैन बन गए। कृपाण सम्बंधी हुए फैसले के बारे में स. महिताब सिंघ ने पंजाब कौंसिल में सवाल पूछा कि "सरकार की कृपाण के बारे में नीति क्या है?" स. सुंदर सिंघ मजीठिया ने जवाब दिया कि "सिक्ख के लिए कृपाण सब बंदिशों से मुक्त है।" यह रियायत सिक्खों को १९१४ ई में दी गयी थी। स. महिताब सिंघ पंजाब कौंसिल के सदस्य होने के साथ-साथ पंजाब कौंसिल के डिप्टी प्रेज़ीडेंट भी रहे, किंतु धार्मिक रुचियों के कारण इन्होंने गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर में हिस्सा लेना शुरू कर दिया।

श्री ननकाणा साहिब के दुखदायक साके के समय स. महिताब सिंघ विशेष गाड़ी में सवार होकर श्री ननकाणा साहिब पहुंच गए। २१ फरवरी, १९२१ ई को दुखदायक साका घटित हो गया। २२ फरवरी को गवर्नर पंजाब खुद मौके पर पहुंच गए तथा सारे उन्हें हालात से अवगत करवाने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा स. हरबंस सिंघ अटारी और स. महिताब सिंघ उपस्थित थे।

श्री ननकाणा साहिब के दुखदायक साके के बाद सिक्ख मिशनरी सोसायटी तथा शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज स्थापित करने में स. महिताब सिंघ की दूरदर्शी सोच ही काम करती थी। स. महिताब सिंघ १९३३ ई से १९३६ ई तक श्री ननकाणा साहिब प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। श्री ननकाणा साहिब की ज़मीन आबाद करने, बाग लगवाने तथा ऐतिहासिक

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; मो. ९८१४६-३७९७९*

कालोनी बसाने में स. महिताब की अच्छी सोच कार्य करती थी। स. महिताब सिंघ की हिम्मत सदका ही श्री ननकाणा साहिब के धन से गुरु नानक कॉलेज, मुंबई शुरू किया गया जो कि आज भी सफलतापूर्वक चल रहा है।

७ नवंबर, १९२० ई में अंग्रेज़ सरकार द्वारा श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के तोशेखाने की चाबियां छीने जाने के रोष में स. महिताब सिंघ ने पंजाब कौंसिल की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया।

२८ अगस्त, १९२१ ई को स. महिताब सिंघ लाहौर क्षेत्र से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के सदस्य चुने गए। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पहले हुए चुनाव के समय इनको सचिव चुना गया।

चाबियों के मोर्चे के समय १२ नवंबर, १९२१ ई को श्री अमृतसर में भारी अकाली कान्फ्रेंस हुई, जिसमें स. महिताब सिंघ ने यह साबित करने का प्रयत्न किया कि तोशेखाने की चाबियां छीनकर अंग्रेज़ सरकार श्री दरबार साहिब का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को देने के वादे से मुकर गयी है।

ज़िलाधिकारी श्री अमृतसर ने एलान किया कि २६ नवंबर, १९२१ ई को तोशेखाने की चाबियां तथा सिक्ख स्थिति के बारे में अजनाला में दरबार लगेगा। शिरोमणि अकाली दल ने भी फैसला किया कि उस समय वहां धार्मिक समारोह किया जायेगा। सही समय और सही स्थान पर समारोह हुआ। बाबा खड़क सिंघ अध्यक्ष तथा स. महिताब सिंघ सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को गिरफ्तार कर लिया गया। २९ नवंबर, १९२१ ई को अजनाला में ही मिस्टर कॉनर की अदालत में मुकद्दमा पेश हुआ। स. महिताब सिंघ का बयान बड़ी जिम्मेदारी वाला था-- "गुरुद्वारा कमेटी ने जो भी जलसे किए हैं, मैं पूरी तरह से उनके लिए जिम्मेदार हूं। श्री दरबार साहिब की चाबियां छीने जाने पर सिक्ख पंथ का अपमान हुआ है और सिक्ख जज़बात भड़क उठे हैं। मैं हकूमत की इस कार्यवाही को अत्यंत मूर्खतापूर्ण समझता हूं। जब तक सिक्खों में जान है, हम हकूमत को अपने धार्मिक कार्यों में दख़ल देने की आज्ञा नहीं देंगे।" इनको इस केस में छः महीने की कैद और एक हज़ार रुपए नकद जुर्माना हुआ। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के रिकार्ड के मुताबिक स. महिताब सिंघ १६ जुलाई, १९२२ ई से २७ अप्रैल, १९२५ ई तक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष पद पर शोभायमान रहे।

अगस्त, १९२२ ई में गुरु के बाग का मोर्चा शुरू हो गया। गुरु के बाग के मोर्चे के समय स. महिताब सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने बयान में कहा, "गुरु के बाग पर ३१ जनवरी, १९२३ ई से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का प्रबंध है। हमारे प्रबंध के अधीन गुरुद्वारे में से गुरु के लंगर के लिए ईंधन हेतु लकड़ियां काटना कोई जुर्म नहीं।" अंग्रेज सरकार ने २६ अगस्त, १९२२ ई को अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सहित शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के ७५ सदस्य गिरफ़्तार कर लिए। गुरु के बाग का मोर्चा शिखर पर पहुंच गया। इस मोर्चे ने सारे देश एवं पंथ को नयी जागृति बख़्शी। आखिर अंग्रेज साम्राज्य को सिक्ख जत्थेबंदक शक्ति के आगे घुटने टेकने पड़े। खालसे की इस मैदान में भी विजय हुई।

जून, १९२३ ई में अमृत सरोवर की कार सेवा आरंभ की गयी। कार सेवा आरंभ करने के लिए खालसाई हर्षोल्लास के साथ गुरुद्वारा पिपली साहिब से नगर कीर्तन आयोजित किया गया। कार सेवा करने-कराने में स. महिताब सिंघ की सोच-शक्ति ने ज्यादा कार्य किया।

स. महिताब सिंघ गुरुद्वारा मर्यादा के खुद

पाबंद थे तथा तनदेही से सेवा करने वाले मुलाज़िमों को मान-सम्मान भी देते थे। एक बार रात्रि के समय श्री दरबार साहिब के दर्शन करने के लिए गए, किंतु किवाड़ बंद हो चुके थे। दर्शनी ड्योढ़ी में हाज़िर सेवादार को कहने लगे, "हमने श्री दरबार साहिब के दर्शन-दीदार करने के लिए जाना है।" सेवादार ने कहा, "किवाड़ बंद हो चुके हैं, आप जी अब अंदर नहीं जा सकते।" आप कहने लगे, "मैं शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का अध्यक्ष हूं।" सेवादार का उत्तर बड़ा बेबाकी वाला था, "बेशक हो, किंतु मर्यादा की उल्लंघना नहीं की जा सकती।" आप वापिस आ गए। दूसरे दिन उस सेवादार को बुलाकर सही ड्यूटी करने के बदले में मान-सम्मान दिया।

'गुरुद्वारा कानून १९२५' बनाने में स. महिताब सिंघ ने पूरी दिलचस्पी ली। गुरुद्वारा कानून पास होने के समय ये अन्य अकाली नेताओं के साथ लाहौर जेल में नज़रबंद रहे। अंग्रेज़ सरकार ने शर्त रख दी कि जो नेता गुरुद्वारा कानून को मान लेंगे उनको बिना देरी रिहा किया जायेगा। स. महिताब सिंघ समझौतावादी थे तथा हर जेल-यात्रा के समय वे रिहायी के लिए तत्पर थे। २५ जनवरी, १९२६ ई. को २० अकाली नेता गुरुद्वारा कानून को प्रवान करते हुए रिहा हो गए। इनमें स. महिताब सिंघ भी शामिल थे। स. महिताब सिंघ ने जेल से बाहर आकर बयान दिया कि हम पंथ का अपमान करके बाहर नहीं आए। इस तरह कुछ अकाली नेता तो रिहा हो गए किंतु अन्य सरकार की शर्तों को मानना गुनाह समझते थे। यह गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर की शिखर थी। अकाली नेता दो दलों में बंट गए। गुरुद्वारा कानून के अनुसार काम करने वाले दल की अगुआई स. महिताब सिंघ कर रहे थे।

१२ अक्तूबर, १९२३ ई को अंग्रेज सरकार ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर तथा इसकी खड़गभुजा शिरोमणि अकाली दल को गैरकानूनी जत्थेबंदियां करार दिया तथा समूची सिक्ख लीडरशिप को जेल में बंद कर दिया।

जून, १९२६ ई में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का पहली बार गुरुद्वारा कानून के अनुसार चुनाव हुआ। स. महिताब सिंघ खुद तो चक्क नं: १४ सरगोधा से चुनाव जीत गए, किंतु इनकी पार्टी के मात्र २६ सदस्य ही चुनाव जीत सके तथा अकाली दल को पूर्ण बहुमत प्राप्त हुआ।

पार्टी की पराजय को सम्मुख रखते हुए स. महिताब सिंघ ने शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की गतिविधियों में हिस्सा लेना छोड़ दिया, किंतु शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के कानूनी सलाहकार के रूप में कार्यशील रहे। पार्टी राजनीति से तंग आकर इन्होंने दोबारा वकालत शुरू कर दी तथा खूब प्रसिद्धि पायी।

१९२८ ई में चले 'साइमन कमीशन वापिस जाओ' के संघर्ष में भी इन्होंने सक्रियता से हिस्सा लिया तथा दिसंबर, १९२८ ई में कोलकाता सर्व पार्टी में भी स. महिताब सिंघ शामिल हुए।

८ अक्तूबर, १९२६ ई को कार्यकारिणी कमेटी के चुनाव के समय स. महिताब सिंघ कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य चुने गए। ९ जून, १९३० ई को हुए पदाधिकारियों के चुनाव में स. महिताब सिंघ पुन: कार्यकारिणी कमेटी के सदस्य चुने गए। ९ मार्च, १९३० ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की हुई जनरल एकत्रता के समय स. महिताब सिंघ के विरुद्ध १८ के मुकाबले ४१ वोटों से प्रस्ताव पारित कर दिया गया।

२३ मई, १९३९ ई. को लाहौर हाईकोर्ट में किसी केस में बहस करते हुए स. महिताब सिंघ को दिल का ऐसा दौरा पड़ा कि वे सदा के लिए संसार को अलविदा कहकर गुरु-चरणों में जा विराजे।



कविताएं

पेड़ की पुकार

मत करो प्रहार!
करता विनती यों वृक्ष समाज।
हरियाली की रख लो लाज!
मत काटो! मत काटो हमको!!
कल के लिये हमें बचा लो आज!
कटते-कटते कहता पेड़, रोते-रोते पुकार-पुकार।
हमें तुम्हारे पुरखों ने पाला,
खाद और पानी नियम से डाला।
वे करते रहे देखरेख हमारी,
हर हाल में हमें संभाला।
उनसे हमने तुम जैसा ही, पाया है प्यार।
तुम भी उनके जैसे बनकर दिखलाओ!
आने वालों के लिये कुछ अच्छा कर जाओ!
बचाओ हमें कटने-मिटने से,
और हमारे जैसे पेड़ फलदार लगाओ!
जिससे भावी पीढ़ियां ऋतुफल पायेंगी,
करेंगी तुम्हारी जय-जयकार!

सुंदर-सुंदर ताल

सुंदर-सुंदर थे कभी, हर नगरी में ताल।
ताल किनारे झूमती, थी पेड़ों की डाल।
निर्मल जल जिनमें सदा, रहता बारह मास।
सड़ांध, सीलन, गंदगी, कभी न आई पास।
उठती सुगंध ताल से, समय-समय अनुकूल।
जल तरंग से खेलते, दिखें कमल के फूल।
मन मानस को खींचता, यही दृष्य चहुं ओर।
फल-फूलों की डाल से, करते पंछी शोर।
साफ-सफाई पर सदा, देते थे सब ध्यान।
मन से सारा ही नगर, करता था सम्मान।
ताल किनारों पर सभी, मनाते थे त्योहार।
मेलों के झूले यहीं, लगते हाट बाज़ार।
जब से नगरी पर चढ़ा, जन संख्या का भार।
तब से तालों को रही, बड़ी गंदगी मार।
ताल तलैयों में हुई, कचरे की भरमार।
कूप, बावली पर हुआ, घूरे का अधिकार।

कारण

भूकंप आने के कारण
गिना रहे दुनिया के विद्वान।
अपना-अपना लगाकर अनुमान।
कांपता कलेजा क्यों धरती का,
संकट में जीवों के क्यों पड़ जाते प्राण?
प्रकृति संहारक रूप
क्यों कर लेती धारण?
कोई बताता कमी पानी की
कहता कोई विकास ने मनमानी की।
बढ़ती आबादी को कोई दे रहा दोष
जिसने पर्यावरण की बहुत हानि की।
बता रहा कोई वायुमंडल में
असह शोर का उच्चारण।
करते कई प्रकृति से छेड़छाड़।
वही ला रही कहीं सूखा, कहीं बाढ़।
तोड़ रही उद्गम से सागर के सम्बंध
कहीं बड़े बांध, कहीं नंगे हुए पहाड़।
कहीं प्रकृति के घटते हुए संसाधन।
बता रहे सारे अनुमान
कि प्रगति करती गई प्रकृति का अपमान।
सुविधा करती गई अंधाधुंध दोहन
और धरती करती गई भुगतान।
अंध विकास की आस
करती गई विनाश का उत्पादन।



-श्री भुजंग राधेश्याम सेन, शिव मंदिर के पीछे, मंगली पेट, सिवनी(म. प्र.)-४८०६६१; मो. ०९३०२६०६०९५

ख़बरनामा

हरियाणा सरकार सिरसा में सिक्ख संगत पर हुए हमले के दोषियों के विरुद्ध कार्यवाही करे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २६ नवंबर : हरियाणा के सिरसा में स्थित डेरे के प्रेमियों द्वारा सिक्ख संगत पर किया गया हमला अति निंदनीय है। इस हमले से शांतमयी ढंग से प्रदर्शन कर रहे सिक्खों को निशाना बनाकर सोची-समझी चाल से शरारती तत्वों द्वारा उन पर हमला करना किसी तरह भी जायज़ नहीं है। इन विचारों का प्रकटावा करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने कहा कि गत दिनों सिरसा में सिक्ख संगत पर सौदा साध के चेलों द्वारा किए गए कातिलाना हमले से सिक्खों में भारी रोष पाया जा रहा है। उन्होंने इस दुर्भाग्यशाली घटना सम्बंधी प्रशासन की लापरवाही तथा हरियाणा सरकार की एकतरफा सोच को सिक्ख विरोधी एलानते हुए कहा कि हरियाणा सरकार डेरा प्रेमियों की बेहूदा हरकतों पर लगाम लगाने के लिए सचेत नहीं है, जिस कारण ऐसा कांड हुआ है। उन्होंने कहा कि यह पहली बार नहीं इससे पहले भी कई बार डेरा सिरसा के चेलों द्वारा ऐसी हरकत की जाती रही है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सरकार को निष्पक्ष होकर समस्त मामले की जांच करवानी चाहिए तथा दोषियों के खिलाफ जायज़ कार्यवाही करके सिक्खों को इंसाफ दिलाना चाहिए।

सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब के मुख्य ग्रंथी की सेवा संभाली

श्री अमृतसर : २२ नवंबर : सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ ने श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर के मुख्य ग्रंथी की सेवा संभाल ली है। सिंघ साहिब ज्ञानी जगतार सिंघ, अपर ग्रंथी श्री हरिमंदर सिंघ ने इस मौके पर अरदास की तथा ज्ञानी मल्ल सिंघ को सिरोपाउ की बख़्शिश की। सिंघ साहिब ज्ञानी मल्ल सिंघ ने कहा है कि वे श्री गुरु रामदास पातशाह के शुक्रगुजार हैं जिनकी कृपा सदका वे पहले बतौर ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब सेवा करते रहे हैं और अब बतौर मुख्य ग्रंथी सेवा करेंगे। उन्होंने कहा कि वे जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, समूह कार्यकारिणी कमेटी के सदस्यों एवं ओहदेदारों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने उन्हें यह बड़ी सेवा सौंपी है। उन्होंने कहा कि मैं इस जिम्मेदारी को पूरी श्रद्धा-भावना, मर्यादा व सत्कार से निभाऊंगा।

उनकी सेवा-संभाल के अवसर पर ज्ञानी सुखजिंदर सिंघ ग्रंथी, ज्ञानी रवेल सिंघ ग्रंथी, ज्ञानी जसविंदर सिंघ ग्रंथी, स. रूप सिंघ सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, दमदमी टकसाल के मुखिया बाबा हरनाम सिंघ खालसा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ज्ञानी जसवंत सिंघ गुरमति प्रचार मिशन के मुखिया के रूप में सेवा निभाएंगे

श्री अमृतसर : २३ नवंबर : स. सतबीर सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी ने प्रेस रिलीज़ में

जानकारी देते हुए बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के दिशा-निर्देशों के अनुसार सिक्खी को और प्रफुल्लित करने तथा नौजवानों में बढ़ रहे पतितपुने को मात देने के लिए धर्म प्रचार कमेटी द्वारा निरंतर धार्मिक प्रोग्राम करवाये जा रहे हैं। इन प्रोग्रामों को और सचारू बनाने के लिए सत्कारयोग्य अध्यक्ष साहिब द्वारा ज्ञानी जसवंत सिंघ, भूतपूर्व ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब से गुरमति प्रचार मिशन के मुखिया के रूप में सेवाएं लेने के बारे में फैसला किया गया है।

ज्ञानी जसवंत सिंघ १९८७ से २००३ ई तक श्री हरिमंदर साहिब के कथावाचक रहे हैं और २००३ से २०११ ई तक श्री हरिमंदर साहिब के ग्रंथी के रूप में सेवा निभाते आए हैं।

धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारकों को साथ लेकर पंजाब भर में गुरमति समागम तथा अमृत संचार प्रोग्राम करने की जिम्मेदारी ज्ञानी जसवंत सिंघ को सौंपी गयी है। इस सम्बंधी ज्ञानी जसवंत सिंघ को स. मनजीत सिंघ, निजी सचिव अध्यक्ष साहिब तथा स. सतबीर सिंघ, सचिव, धर्म प्रचार कमेटी द्वारा अधिकारित पत्र सौंपते हुए लोई (शाल) तथा सिरोपाउ से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर ज्ञानी जसवंत सिंघ ने कहा कि वे जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के आभारी हैं जिन्होंने मुझ जैसे अदना सिक्ख पर विश्वास कर प्रचार की अहम जिम्मेदारी सौंपी है तथा वे इस जिम्मेदारी को पूरी तनदेही के साथ निभाएंगे। उन्होंने कहा कि वे धर्म प्रचार कमेटी के प्रचारकों को साथ लेकर समूचे पंजाब में धार्मिक प्रोग्राम करवाकर गलत रास्ते पड़े नौजवानों को सिक्खी सिद्धांतों की ओर मोड़ने का प्रयत्न करेंगे।

बीबी हरबंस कौर सुखाणा के निधन पर जत्थेदार अवतार सिंघ द्वारा गहरे शोक का इज़हार

श्री अमृतसर : ५ दिसंबर : बीबी हरबंस कौर सुखाणा, सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, जो कि गत कुछ समय से बीमार थे, के निधन पर जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गहरे शोक का इज़हार करते हुए परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट की है। उन्होंने कहा कि हमारे बीच में से एक मेहनती, नेकदिल, सुशील स्वभाव एवं धार्मिक वृत्ति वाली तथा गुरसिक्खी का जज़्बा रखने वाली पंथप्रस्त बीबी (महिला) के चले जाने से कभी न पूरा होने वाला घाटा हुआ है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि बीबी हरबंस कौर सुखाणा क्षेत्र रायकोट से पहली बार सदस्य शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी १९९६ ई में बने और तब से वे लगातार सदस्य रहते हुए पंथ की सेवा करते आ रहे थे। उनके द्वारा की गई सेवाओं को पंथ हमेशा याद रखेगा। उन्होंने उनके परिवार के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए अकाल पुरख के आगे अरदास की कि वे बिछुड़ी रूह को अपने चरणों में निवास प्रदान करें। बीबी हरबंस कौर सुखाणा के निधन की ख़बर जब कार्यालय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर पहुंची तो कार्यालय में अवकाश का एलान कर दिया गया।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०१-२०१३